# प्रस्तावना.

विदित हो कि, वर्तमानसमयमें इस आर्यावर्तदेशमें कितनेक भोलेभाले जन धूर्तोधि
ओंके चक्रमेंमें आकर अपना सर्वस्व देकर उनसे अपनी रेखा आदिकोंका यथार्थ
फल सुनना चाहते हैं और वहभी सर्वज्ञ बन जो कुछ मनमें आया सो कहकर पुज
हैं; परंतु जाननेमें तो सामुद्रिक शास्त्रकी कौन कहै ? नामभी नहीं जानते हैं. इस प्रकार
इन्होंने उक्त शास्त्रका नामही उड़ा दिया और लोगोंको ठगना शुरू किया. इस
देशकी सर्वथा हानि होती देख, हम चिरकालसे उत्सुक थे कि, कोई उत्तम सामुद्रिक
ग्रंथ उपलब्ध हो तो छपवाके प्रसिद्ध करें. एवं बहुत काल बीतनेपर ईश्वरकी कृपासे९
लघुसामुद्रिक ग्रंथ उपलब्ध हुआ. यद्यपि उससे पूर्ण परितृप्ति न हुई तथापि४
उसको स्वकीय उत्कण्ठावृक्षका पुष्परूप समझ प्रथम उसीको छपवाकर प्रसिद्ध किया.
तदनन्तर सर्वजगद्धितकारी मुरारीकी कृपासे यह अतिउत्तम बृहत्सामुद्रिकनामक
ग्रंथ प्राप्त भया. यह ग्रंथ सर्वजनसमूहको बहुतही उपकारी है; क्योंकि इसमें नखसे ले
शिखालौं सम्पूर्ण अंगप्रत्यंगोंके लक्षण, शब्दलक्षण, आकृतिलक्षण, उन्मानलक्षण,
सारलक्षण, संहतिलक्षण, स्नेहलक्षण, वर्णलक्षण, अनूकलक्षण, प्रकृतिलक्षण, गति-
लक्षण, परोपकारिनरलक्षण, दरिद्रादिनरलक्षण, पञ्चमहापुरुषलक्षण, छिक्काफल, अं-
गस्फुरणफल, प्रसंगप्राप्तपशुलक्षण, काकशकुनफल, काकरुतफल, इत्यादि समस्त
विषय सविस्तर लिखे हैं. यह ग्रंथ पास रखनेपर अन्य किसी ग्रंथकी तनकभी
आवश्यकता नहीं; क्योंकि सामुद्रिकशास्त्रके सब ग्रंथोंमें यही सर्वोत्तम ग्रंथ है.
इसके आश्रयसे अन्य ग्रंथ बने हैं; अतएव यही सर्वोत्कृष्ट है. परंतु संस्कृतमें होनेसे
सर्वसाधारणकी समझमें न आताथा, इसलिये हमने इसकी मुरादाबादवास्तव्य श्रीप-
ण्डित रामस्वरूपद्वारा सरल हिन्दीभाषाटीका विस्तारपूर्वक करवा दी है. इसमें
कहींभी एक अक्षरकाभी अर्थ छोंड़ा नहीं. जो विषय विशेष लिखना पड़ा है उसे
इसे ( ) द्विकपालचिह्नके अन्दर (कंसमें) लिखादिया है. इससे ज्यों यह अनूठा ग्रंथ है त्योंही
इसकी टीकाभी होगई है. सो हमने इसे श्रीपण्डित शास्त्रि—गजाननद्वारा शुद्ध कराय सुबाच्य

# बृहत्सामुद्रिकानुक्रमणिका

# अनुक्रमणिका।



इत्यनुक्रमणिका समाप्ता

॥ श्रीः ॥

# अथ बृहत्सामुद्रिकशास्त्रम् ।

भाषाटीकासहितम् ।

गणेशं विघ्नहन्तारं गिरिजां गिरिशं तथा ॥
नत्वा कुर्वे समुद्रोक्तेर्दिव्यशास्त्रस्य संग्रहम् ॥ १ ॥

अर्थ–श्रीगणेशजीको तथा पार्वती और शिवजी महाराजको प्रणाम करके, सामुद्रिक जो दिव्य शास्त्र है तिसका संग्रह करताहूं ॥ १ ॥

शिवेनोक्तं वराहोक्तं कृष्णद्वैपायनेन च ॥
सामुद्रिकं तदेवाहं संगृह्णामि नृणां मुदे ॥ २ ॥

अर्थ–जो शिवजी महाराजने पार्वतीके अर्थ वर्णन करा है और वराहमिहिराचार्यने अपनी बृहत्संहिताके विषे वर्णन करा है, तथा जो श्रीव्यासजी महाराजने अग्निपुराणके विषे वर्णन करा है, उसही सामुद्रिकशास्त्रको मैं मनुष्योंकी प्रसन्नताके अर्थ संग्रह करके, यह " बृहत्सामुद्रिक " नाम ग्रंथ रचताहूं ॥ २ ॥

## पार्वत्युवाच ।

कीदृशः पुरुषो वन्द्योऽवन्द्यो वा कीदृशो भवेत् ॥
कन्या वा कीदृशी शस्या गर्हिता वापि कीदृशी ॥३॥

अर्थ–पार्वतीजी बोलीं कि–हे भगवन् ! किसप्रकारके लक्षणोंकरके युक्त पुरुष वन्दनीय होता है, और कैसे लक्षणों करके युक्त निन्दनीय होता है, तथा किन लक्षणोंकरके युक्त स्त्री श्रेष्ठ होती है और किन लक्षणों करके निन्दनीय होती है ? ॥ ३ ॥

## महेश्वर उवाच ।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि समुद्रवचनं यथा ॥

लक्षणं तु मनुष्याणां नारीणां च तव ह्यहम् ॥ ४ ॥

अर्थ–श्रीशिवजी बोले कि–हे पार्वति! अब मैं समुद्रके कथनानुसार पुरुष और स्त्रियोंके शुभ और अशुभ लक्षण तुमसे कहता हूं, सो श्रवण करो ॥ ४ ॥

वामभागे तु नारीणां दक्षिणे पुरुषस्य च ॥
निर्दिष्टं लक्षणं तेषां समुद्रेण यथोदितम् ॥ ५ ॥

अर्थ–तहां पुरुषके दक्षिणभागमें और स्त्रीके वामभागमें लक्षण देखै; जैसा कि, समुद्रका वचन है ॥ ५ ॥

पूर्वजन्मार्जितं येन लक्ष्यते हि शुभाशुभम् ॥
नृयोषितां तदेवेह लक्षणं विनिगद्यते ॥ ६ ॥

अर्थ–जिससे मनुष्यके पूर्वजन्मका शुभ वा अशुभ कर्म इस जन्ममें जाना जाता है वही अब हम यहां कहते हैं ॥ ६ ॥

प्राणिनां तद्द्विधा ज्ञेयं बाह्यमाभ्यन्तरं तथा ॥
वर्णस्वरादि बाह्यं स्यात्प्रकृत्यादि तथाऽन्तरम् ॥७॥

अर्थ–वे प्राणियोंके लक्षण दो प्रकारके होते हैं; एक बाह्य और दूसरा अभ्यन्तर. उसमेंसे वर्ण–स्वरआदि बाह्य लक्षण हैं, और स्वभावआदि अभ्यन्तर लक्षण हैं ॥ ७ ॥

आद्यं सर्वेषु शारीरं लक्षणेषु तदाश्रयात् ॥
तस्मादादौ तदेवेह वक्ष्यते मुख्यरूपतः ॥ ८ ॥

अर्थ–सब लक्षणोंमें शरीरके लक्षण मुख्य हैं; क्योंकि सम्पूर्ण लक्षण शरीरकेही आश्रित होते हैं, इसकारण मुख्य होनेसे, प्रथम यहां शरीरके लक्षणही कहते हैं ॥ ८ ॥

ऊर्ध्वमूलो ह्यधःशाखो नरकल्पतरुर्भवेत् ॥

वक्ष्ये पादतलादद्य शारीरं लक्षणं ततः ॥ ९ ॥

अर्थ–यह मनुष्य कल्पवृक्षरूप है, इसकी ऊपरको मूल ( जड़ ) है, और नीचेको शाखा हैं, इसकारण पहले पादतलसे लेकर सब शरीरके लक्षणोंको कहते हैं ॥ ९ ॥

आदौ पादतलं चाथो रेखांगुष्ठांगुलीनखम् ॥
पृष्ठं गुल्फौ तथा पाली जंघायुग्मं च रोम च ॥ १० ॥

अर्थ–प्रथम पादतल, फिर पादतलकी रेखा, फिर अँगूठा, फिर अंगुली, फिर नख, फिर पैरोंका पृष्ठभाग, फिर गुल्फ ( टकने ), फिर पाली फिर जङ्घा, फिर रोम ॥ १० ॥

जानुयुग्ममथोरू च कटितीरं स्फिग्युगं ततः ॥
पायुर्मुष्कौ ततः शिश्नो मणिरेतो मूत्रशोणिते ॥ ११ ॥

अर्थ–तदनन्तर दोनों जानु, फिर ऊरु, फिर कटि ( कमर ), स्फिक, फिर गुदा, फिर मुष्क ( अण्डकोश ), फिर शिश्न ( लिङ्ग ) फिर मणि ( लिङ्गका अग्रभाग ), फिर वीर्य, फिर मूत्र, तदनन्तर रुधिर ॥ ११ ॥

बस्तिर्नाभिस्ततः कुक्षी पार्श्वे जठरमन्तरम् ॥
बलिर्हृदयमुरस्कं च कुचचूचुकयुग्मकम् ॥ १२ ॥

अर्थ–फिर बस्ति ( पेंडू ), फिर नाभि, फिर दोनों कोखें, फिर पार्श्व ( दोनों पसली ), फिर जठर ( पेट ), फिर वलि ( पेटकी सकोड़न ), फिर हृदय, फिर उरू, फिर स्तन, फिर चूचुक (स्तनोंके अग्रभाग) ॥ १२ ॥

जत्रुद्वयं ततः स्कन्धावंसौ कक्षे ततो भुजौ ॥
मूलपृष्ठतलैः सार्द्धं हस्तमत्स्यादिराकृतिः ॥ १३ ॥

अर्थ–तदनन्तर दोनों जत्रु ( कन्धेके हँसली ), फिर दोनों कन्धे, फिर दोनों अंस ( कन्धेके समीप भुजाकी मूल ), फिर दोनों बगल,

फिर दोनों हाथ, फिर हथेली, फिर हाथकी पीठ, फिर हाथमें मत्स्य आदिके चिन्ह ॥ १३ ॥

रेखांगुली नखं पृष्ठं घाटा ग्रीवा ततः परम् ॥
चिबुकं कूर्चं हनुर्गण्डं वदनोष्ठरदास्ततः ॥ १४ ॥

अर्थ–फिर हाथकी रेखा, फिर हाथकी अङ्गुली, फिर नख, पीठ, फिर गलेटुँआ, फिर ग्रीवा, फिर ठोढ़ी, ठोढ़ीके बाल, गालोंके हड्डे, मुख, फिर ओंठ, और तदनन्तर दाँत ॥ १४ ॥

जिह्वा तालु ततश्चापि घण्टिका हसितं ततः ॥
नासिकाऽथ क्षुतं नेत्रे पक्ष्माणि च ततःपरम् ॥ १५ ॥

अर्थ–फिर जिह्वा, फिर तालु, फिर गलेकी घांटी, फिर हास्य, फिर नासिका, फिर क्षुत ( छींक ), नेत्र, नेत्रोंके पलक ॥ १५ ॥

निमेषरुदिते भ्रूश्च शङ्खकर्णौ ललाटकम् ॥
तल्लेखा मस्तकं केशाः क्रमाच्छारीरमुच्यते ॥ १६ ॥

अर्थ–तदनन्तर पलक लगाना, फिर स्वेदन, फिर भौं. फिर कनपटी, फिर कान, फिर ललाट, फिर ललाटकी रेखा, फिर मस्तक, फिर केश, इस क्रमसे शरीरके अवयवोंके लक्षण कहाते हैं ॥ १६ ॥

आपादतलकेशान्तं शारीरं च पृथक् पृथक् ॥
अंगोपांगविभक्तं च ज्ञेयं लक्षणवेदिभिः ॥ १७ ॥

अर्थ–पादतलसे लेकर शिरके केशपर्यन्त शरीरके अङ्ग और उपाङ्ग सामुद्रिक शास्त्रके जाननेवालेको भिन्न भिन्न जानना चाहिये ॥ १७ ॥

## अथ पादतललक्षणम् ।

अस्वेदमुष्णमरुणं कमलान्तःकान्ति मांसलम् ॥
स्निग्धं समं पदतलं नृपसम्पत्तिदं भवेत् ॥ १८ ॥

अर्थ–जिसमें पसीना न आताहो, गरम रहताहो, लाल वर्णवाला हो, कमलके मध्यभागके समान कान्तिवान् हो, चिकना हो, और समान हो, ऐसा पादतल (पैरका तलुआ) राजसम्पत्तिका देनेवाला होता है ॥१८॥

यस्य पादचरस्यापि मृदु पादतलं भवेत् ॥
पूर्णस्फुटोर्ध्वरेखाच स सर्वपृथिवीश्वरः ॥ १९ ॥

अर्थ–पैदल चलनेपरभी जिसके पांवका तलुआ कोमल रहै, और रेखा पूरी स्फुट और ऊँची हों, वह पुरुष सम्पूर्ण पृथ्वीका राजा होता है१९

वंशच्छिदे कुपादं द्विजहत्यायै विपक्कमृत्सदृशम् ॥
पीतमगम्यारतये कृष्णं स्यान्मद्यपानाय ॥ २० ॥

अर्थ–मैला और फटाहुआ पैरका तलुआ होय तौ वह पुरुष कुलका नाश करनेवाला होता है, और यदि तलुवेका रङ्ग पकीहुई मट्टीके समान होय तौ वह पुरुष द्विजहत्यारा होता है; पीला होय तौ अगम्य स्त्रीमें गमन करता है, काला होय तौ मद्यप होता है ॥ २० ॥

पाण्डुरमभक्षभक्षणकृते तलं लघु दरिद्रतायै स्यात् ॥
रेखाहीनं कठिनं रूक्षं दुःखाय विस्फुटितम् ॥ २१ ॥

अर्थ–पांवका तलुआ पाण्डुवर्ण होय तो अभक्ष्य वस्तुका भक्षण करनेवाला होता है, और छोटा होय तौ दरिद्र करता है, और रेखारहित कठोर और खरखरैरा और फटाहुआ होय तौ दुःखदायक होता है २१

तलमन्तः संक्षिप्तं स्त्रीकार्ये मृत्युमादिशति पुंसाम् ॥
रोगाय विगतमांसं मार्गाय ज्ञेयमुत्कटकम् ॥ २२ ॥

अर्थ–पांवका तलुआ बीचमें छोटा होय तौ पुरुषकी स्त्रीके कार्योंमें मृत्यु होती है. यदि पांवके तलुएपर मांस न होय तौ रोगकारक होता है, और खुरखुरा पांवका तलुआ मार्ग चलाता है ॥ २२ ॥

चन्द्रार्द्धं कलशं त्रिकोणधनुषी खं गोष्पदं प्रोष्ठिकं
शंखं सव्यपदेऽथ दक्षिणपदे कोणाष्टकं स्वस्तिकम् ॥
चक्रं छत्रयवांकुशं ध्वजकुलिशं जंबूर्ध्वरेखाम्बुजं
बिभ्राणोहरिरूनविंशतिमहालक्ष्म्यार्चितांघ्रिर्भवेत् २३

अर्थ-जिस पुरुषके वामचरणमें, अर्धचन्द्र, कलश, त्रिकोण, धनुष, शून्य, मत्स्य, गौका खुर, और शंख इतने चिन्ह हों और दक्षिण चरणमें, अष्टकोण, तिलक, चक्र, छत्र, यव, अंकुश, ध्वज, वज्र, जम्बू, ऊर्ध्वरेखा और कमल, इतने चिन्ह होयँ तो उस पुरुषके चरणोंका लक्ष्मी पूजन करती है अर्थात् वह पुरुष अत्यन्त धनवान् होता है ॥ २३ ॥

यस्य पादतले पद्मं चक्रं वाप्यथ तोरणम् ॥
अंकुशं कुलिशं वापि स राजा भवति ध्रुवम् ॥ २४ ॥

अर्थ-जिस पुरुषके पांवके तलुएमें पद्म, चक्र, अथवा तोरण,(वन्द-नवार ), अंकुश, अथवा वनमालाका चिन्ह होय वह निश्चय करके राजा होता है ॥ २४ ॥

रेखाः शंखच्छत्रांकुशकुलिशशशिध्वजादिसंस्थानाः॥
अच्छिन्ना गम्भीराः स्फुटास्तले भागधेयवताम् २५॥

अर्थ-भाग्यवानोंके पांवके तलुएमें, शंख, छत्र, अंकुश, वज्र, चन्द्रमा, और ध्वजआदिकी रेखा, पूर्ण गहरी और स्पष्ट होती हैं ॥ २५ ॥

ताः शंखाद्याकृतयः परिपूर्णा मध्यभेदतो येषाम् ॥
श्रीभोगभाजनं ते जायन्ते पश्चिमे वयसि ॥ २६ ॥

अर्थ-वह शंख आदिके चिन्ह मध्यमें टूटेहुए और पूरे होयँ तो वह पुरुष वृद्धावस्थामें लक्ष्मीको भोगनेको पात्र होता है ॥ २६ ॥

ता गोधासैरिभजंबुकमूषककाककंकसमाः ॥
रेखाः स्युर्यस्य तले तस्य न दूरमेति दारिद्र्यम्॥२७॥

अर्थ–जिस पुरुषके पाँवके तलुएमें छिपकली, महिष, गीदड़, चुहा, काक, और कङ्क पक्षीके चिन्हकी रेखा हों, उस पुरुषसे दारिद्र्य बहुत दूर नहीं होता है, अर्थात् वह पुरुष दरिद्री होता है ॥ २७ ॥

**यस्याः करतले पादे चोर्ध्वरेखा च दृश्यते ॥**
**यदि नीचकुले जाता राजपत्नी भवेद्ध्रुवम् ॥ २८ ॥**

अर्थ–जिस स्त्रीके हाथके तलुएमें अथवा पाँवके तलुएमें ऊर्ध्व रेखा दीखती होय, वह स्त्री यदि नीचकुलमें उत्पन्न हुई होय तौभी राजाकी स्त्री होती है, इसमें सन्देह नहीं है ॥ २८ ॥

**यस्याः पादतले रेखा सा भवेत् क्षितिपांगना ॥**
**भवेदखंडभोगा च या मध्यंगुलिसंगतः ॥ २९ ॥**

अर्थ–जिस स्त्रीके पाँवके तलुएमें शुभ रेखा हों वह स्त्री राजपत्नी होती है और जिस स्त्रीके पाँवके तलुएमें बीचकी अङ्गुलीसे मिली हुई रेखा होय वह स्त्री अपनी आयुभर अखंड सौभाग्यको भोगती है ॥२९॥

**वज्राब्जहलचिह्नं च दास्याः पादे सदा स्थितम् ॥**
**राजपत्नी तु सा ज्ञेया राजभोगप्रदायकम् ॥ ३० ॥**

अर्थ–जिस स्त्रीके चरणमें वज्र, कमल, और हलका चिन्ह, होय, तौ वह यदि दासी होय तौभी रानीके समान होती है, और राजभोगोंको भोगती है ॥ ३० ॥

**असमं मलदेशे तु वज्रं यस्य तु दृश्यते ॥**
**अविच्छिन्नं पदं चैव कुलश्रेष्ठो भवेन्नरः ॥**
**अपरं पर्वरेखायां राज्यं च परिकीर्त्तितम् ॥ ३१ ॥**

अर्थ–जिसके चरणोंके मूलमें वज्रका चिन्ह होय, और यदि वह वज्ररेखा कहीं छिन्न नहीं हुई होय तौ जानै कि, यह पुरुष किसी श्रेष्ठ

कुलमें उत्पन्नहुआ है, और जिसके चरणमें पर्वरेखा भी होयँ तौ वह पुरुष राज्यपदका अधिकारी होता है ॥ ३१ ॥

चक्रस्वस्तिकशंखाब्जध्वजमीनातपत्रवत् ॥
यस्याः पादतले रेखा सा भवेत् क्षितिपांगना ॥३२॥

अर्थ-जिस स्त्रीके चरणके तलुएमें चक्र, स्वस्तिक; शंख, कमल, ध्वजा,मत्स्य,और छत्रकी रेखा होय वह स्त्री राजाकी भार्य्या होती है३२॥

यस्य बद्धाङ्गुलेर्मूलात् पादे रेखा च दृश्यते ॥
स राज्यं लभते नूनं भुंक्ते निष्कंटकां महीम् ॥ ३३ ॥

अर्थ-जिस पुरुषके चरणमें अँगूठेकी मूलसे लेकर तलुएके अन्तपर्य्यन्त रेखा दीखती होय. वह पुरुष राजा होकर निष्कंटक अर्थात् निर्विघ्न राज्यको भोगता है ॥ ३३ ॥

भवेदखंडभोगायोर्ध्वामध्यंगुलिसंगता ॥
रेखाखुसर्पकाकाभा दुःखदारिद्र्यसूचकाः ॥ ३४ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके चरणमें ऊर्ध्वरेखा मध्यकी अंगुलीपर्य्यन्त लम्बी होय वह स्त्री अखण्डसुखकी भोगनेवाली होती है, और चरणतलमें मूषक ( चूहा ), सर्प, और काकके समान रेखा होय तौ वह स्त्रीदुःख-दारिद्र्यको प्राप्त होती है ॥ ३४ ॥

वृत्तो भुजगफणाकृतिरुत्तुङ्गो मांसलः शुभोंगुष्ठः ॥
सशिरोह्रस्वश्चिपिटोचक्रोऽविपुलःसपुनरशुभः ॥ ३५ ॥

अर्थ-जिस पुरुषका, अंगूठा, गोल, सर्पके फणकी सूरतका, ऊँचा और पुष्टमांसवाला होय तौ शुभ होता है, और जिसके अँगूठेकी नसें दीखती हों, छोटा हो, चिपटा हो, चक्ररहित हो, चौड़ाही हो, तौ वह अशुभ होता है ॥ ३५ ॥

श्लक्ष्णा वृत्ता मृदवो घना दलानीव पद्मस्य ॥
ऋजवोंगुलय स्निग्धा इभसंख्यान्वितं दधति ॥ ३६ ॥

अर्थ–जिस पुरुषके चरणकी अङ्गुली चिकनी, गोल, कोमल, छिद्ररहित, कमलके पत्तोंके समान सूधी, और चिकनी हों उस पुरुषके यहाँ अनेक हाथियोंकी गणना होती है ॥ ३६ ॥

विरलाश्चिपिटिकाःशुष्का लघवो वक्राःखटाःपदांगुलयः ॥
यस्य भवन्ति शिरालाः स किंकरत्वं करोत्येव ॥ ३७ ॥

अर्थ–जिस पुरुषके चरणकी अंगुली छिदी, चिपटी,सूखी, छोटी, टेढ़ी हलके आकारकी, और नस चमकती हुई हों वह पुरुष निःसन्देह सेवकाई करता है ॥ ३७ ॥

स्त्रीसम्भोगानाप्नोत्यंगुष्ठदीर्घया प्रदेशिन्या ॥
प्रथममशुभं च गृहिणीमरणं वा ह्रस्वया च कलिम्॥३८॥

अर्थ–जिस पुरुषके चरणमें अँगूठेके पासकी तर्जनी अंगुली अँगूठेसे बड़ी होय वह पुरुष स्त्रीके संभोगोंको प्राप्त होता है, और अँगूठेसे छोटी होय तौ प्रथम तौ अशुभही है, तिसपरभी स्त्रीका मरण होता है, और कलह रहता है ॥ ३८ ॥

आयतया मध्यमया कार्यविनाशो ह्रस्वया दुःखम् ॥
घनया समया पुत्रोत्पत्तिः स्तोकं नृणामायुः ३९॥

अर्थ–जिस पुरुषके चरणमें बीचकी अंगुली अतिलम्बी होय तौ वह कार्य्योंको नष्ट करनेवाली होती है, और छोटी होय तौ दुःखदायक होती है, और घनी तथा बराबर होय तौ पुत्रोत्पत्ति होती है, परन्तु मनुष्योंकी आयु थोड़ी होती है ॥ ३९ ॥

यस्यानामिका दीर्घा स प्रज्ञाभाजनो मनुजः ॥
ह्रस्वा स्याद्यस्य पुनः स कलत्रवियोजितो नित्यम् ॥४०॥

दीर्घा कनिष्ठिकापि स्याद्यस्य स्वर्णभाजनं स नरः ॥
यदि सापि पुनर्लघ्वी परदारपरायणः सततम् ॥४१॥

अर्थ–जिस पुरुषके चरणमें अनामिका अँगूली बड़ी होय वह बुद्धिका स्थान होता है, और जिसकी अनामिका अँगूली छोटी होय, वह नित्य स्त्रीका वियोगी रहता है, और जिस पुरुषकी कनिष्ठ अँगूली कनिष्ठिका बड़ी होय वह पुरुष सुवर्णपात्र अर्थात् धनवान् होता है, और यदि वहही कनिष्ठ अँगूली छोटी होय तौ पुरुष सदा परस्त्रीमें आसक्त होता है ॥ ४० ॥ ४१ ॥

यस्य प्रदेशिनी कनिष्ठिका भवेद्ध्रुवं स्थूला ॥
शिशुभावे तस्य पुनर्जननी पंचत्वमुपयाति ॥ ४२ ॥

अर्थ–जिस पुरुषकी प्रदेशिनी और कनिष्ठिका निसन्देह मोटी होय, उस पुरुषकी माता बाल्यावस्थामेंही मरणको प्राप्त होती है ॥ ४२ ॥

प्रदेशिनी भवेद्यस्या अंगुष्ठव्यतिरेकिणी ॥
कन्यैव कुलटा सा स्यादेष एव विनिश्चयः ॥ ४३ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके चरणमें अंगुष्ठको छोड़कर प्रदेशिनी नाम दूसरी अंगुली मिलजाय वह स्त्री कन्यकावस्थामेंही व्यभिचारिणी होती है, इसमें किञ्चिन्मात्रभी सन्देह नहीं है ॥ ४३ ॥

यस्या अनामिकांगुष्ठौ पृथिव्यांनैव तिष्ठतः ॥
पतिं मारयते सापि स्वतन्त्रं चैव वर्तते ॥ ४४ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके चरणकी अनामिका अंगुली व अँगूठा दोनों चलतेसमय पृथ्वीपर नहीं स्थित होते हैं, वह स्त्री पतिका प्राणान्त करनेवाली, और स्वतन्त्र होती है ॥ ४४ ॥

कनिष्ठिकाऽनामिका वा यस्या न स्पृशते महीम् ॥
अंगुष्ठं वा गताऽतीत्य तर्जनी कुलटा हि सा ॥ ४५ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके चरणकी कनिष्ठिका अंगुली और अनामिका अंगुली चलतेसमय पृथ्वीसे नहीं स्पर्श करती हो, अथवा जिस स्त्रीके पैरकी तर्जनी अंगुली अँगूठेसे बड़ी होय, वह व्यभिचारणी होती है ॥ ४५ ॥

चरणानामिका यस्याः क्षितिं न स्पृशते यदि ॥
द्वितीया वा तृतीया वा सा कन्या सुखवर्जिता ॥ ४६ ॥

अर्थ-जिसके पैरकी तर्जनी, मध्यमा, अथवा अनामिका अंगुली चलतेसमय पृथ्वीको स्पर्श नहीं करै, वह कन्याही सुख सौभाग्यकरके हीन होजाती है ॥ ४६ ॥

यस्यास्त्वनामिकांगुल्यौ पृथिव्यां नोपसर्पतः ॥
पतिं नाशयते क्षिप्रं सा रंडा चिरजीविनी ॥ ४७ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके चरणकी दोनों अनामिका अंगुली चलतेसमय पृथ्वीके स्पर्श न करैं वह स्त्री शीघ्रही पतिका मरण करनेवाली होती है, और राँड़ होकर चिरकाल जीती रहती है ॥ ४७ ॥

यस्याः संस्पृशते भूमिमंगुली न कनिष्ठिका ॥
भर्त्तारं प्रथमं हन्ति द्वितीयं चैव विन्दति ॥ ४८ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी चरणकी कनिष्ठिका अँगूली चलतेसमय पृथ्वीका स्पर्श न करै वह स्त्री प्रथमपतिका प्राणान्त करके दूसरे पतिको प्राप्त होती है ॥ ४८ ॥

राजहंसगतिर्वापि मत्तमातङ्गगामिनी ॥
सिंहशार्दूलमध्या च सा भवेत् सुखभागिनी ॥ ४९ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके गति राजहंस और मत्तमातङ्ग(गज)के समान होय, और कमर तथा पेट सिंह और शार्दूलके समान होय, वह स्त्री सुखको भोगनेवाली होती है ॥ ४९ ॥

चिपिटाभिर्भवेद्दासी विरलाभिर्दरिद्रिणी ॥

परस्परं समारूढाः पादांगुल्यो भवन्ति हि ॥
हत्वा बहूनपि पतीन् परप्रेष्या तदा भवेत् ॥ ५० ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी अंगुलियां चिपटी हों वह दासी होती हैं और छिद्री अंगुली होंय तो वह स्त्री दरिद्रिणी होती है,और जिस स्त्रीके चरणकी अंगुली एकके ऊपर चढ़ी हुई होयँ वह स्त्री बहुतसेभी पतियोंको मार कर परपुरुषकी दासी होती है ॥ ५० ॥

विधवा विपुलेन स्याद्दीर्घांगुष्ठेन दुर्भगा ॥
मृद्वोऽगुलयः शस्ता घना वृत्ताः समुन्नताः ॥ ५१ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके चरणका अंगूठा चौड़ा और लम्बा होय वह स्त्री पतिहीन और भाग्यहीन होती है, और जिस स्त्रीके चरणकी अंगुलियां कोमल,मिलीहुई,गोल,और ऊँची हों वह कल्याणकारिणी होती है ॥५१॥

उन्नतो मांसलोंगुष्ठो वर्तुलोऽतुलभोगदः ॥
वक्रो ह्रस्वश्च चिपिटः सुखसौभाग्यभंजकः ॥ ५२ ॥

अर्थ-पैरका अँगूठा ऊँचा पुष्ट और गोल होय तौ अनन्तभोगोंको देता है, और टेढ़ा, छोटा, तथा चपटा होय तो सुख और सौभाग्यको नष्ट करनेवाला होता है ॥ ५२ ॥

दीर्घांगुलीभिः कुलटा कृशाभिरतिनिर्धना ॥
ह्रस्वायुष्या च ह्रस्वाभिर्भुग्नाभिर्भुग्नवर्तिनी ॥ ५३ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके पैरकी अंगुलियां बड़ी हों वह कुलटा होती है, और जिसके पैरोंकी अंगुलियां दुर्बल हों वह अत्यन्त निर्धन होती हैं; छोटी होनेसे थोड़ी आयुवाली होती है; टेढ़ी होनेसे टेढ़ा वर्त्ताव करनेवाली होती है ॥ ५३ ॥

यस्या न स्पृशते भूमिमंगुली च कनिष्ठिका ॥

भर्त्तारं प्रथमं हन्ति मृतो भवति पुत्रकः ॥ ५४ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी कनिष्ठ अंगुली चलनेमें भूमिको स्पर्श न करै वह स्त्री पतिको नष्ट करनेवाली होती है, और उसका पुत्रभी मृत्युको प्राप्त होजाता है ॥ ५४ ॥

विद्रुमाभाश्च विमलाः स्निग्धाः कूर्म्मोन्नता नखाः ॥
श्लक्ष्णाश्च दर्पणाकाराः सूक्ष्माः सौख्यप्रदा नृणाम् ॥५५॥

अर्थ-मूँगाके समान कान्तिवाले, अच्छे चिकने, कछुवेके समान ऊँचे, श्लक्ष्ण, दर्पणके समान और छोटे नख मनुष्योंको सुख देनेवाले होते हैं ॥ ५५ ॥

स्थूला दीर्घा विदीर्णाश्च शूर्पाकाराः सिता नखाः ॥
कृष्णास्तेजोरुचा हीना दारिद्रत्वप्रदा नृणाम् ॥ ५६ ॥

अर्थ-स्थूल, लम्बे, फटेहुए, शूर्प ( छान ) के समान, सफेत, काले, और तेज तथा कान्तिरहित नख मनुष्योंको दरिद्रता देते हैं ॥ ५६ ॥

## अथ पादपृष्ठलक्षणम् ।

रोमस्वेदैश्च रहितं मसृणं मृदु मांसलम् ॥
पृथुलं गूढशिरः शस्तं पादपृष्ठं समुन्नतम् ॥ ५७ ॥

अर्थ-रोम और पसीनेसे रहित, चिकना, कोमल, पुष्ट, मोटा और जिसमें रगें न चमकती हों ऐसी ऊँची पैरकी पीठ कल्याणकारक होती है ॥ ५७ ॥

सरोजमुकुलाकारा अन्तर्गूढाः श्रिये शुभाः ॥
विषमाः शिथिला गुल्फा वधबन्धप्रदाः स्मृताः ॥५८॥

अर्थ-कमलके कलीकी समान और मांसमें छुए हुए गुल्फ शुभ और लक्ष्मी देनेवाले होते हैं, और विषम तथा शिथिल गुल्फ वध और बन्धनके देनेवाले होते हैं ॥ ५८ ॥

महिषाकारैश्चिपिटैर्गुल्फैर्दुःखयुता नराः ॥
तत्रापि रोमसंयुक्तैर्नित्यं सन्तानदुःखिनः ॥ ५९ ॥

अर्थ–भैंसेकेसे चपटे, गुल्फा हों तौ मनुष्योंको दुःख देनेवाले होते हैं. और तिनपर यदि रोमभी हों तौ वह मनुष्य सदा सन्तानसे दुःखी रहते हैं ॥ ५९ ॥

## अथ पार्ष्णिलक्षणम् ।

अब्जकन्दसमा यस्य पार्ष्णिः स्याद्वर्तुला तथा ॥
प्रेम्णैव तं नरं लक्ष्मीर्नो जहाति मुदा सदा ॥ ६० ॥

अर्थ–जिसके चरणकी बगली कमलके कन्दके तुल्य और गोल होय उस पुरुषसे लक्ष्मी इतना प्रेम करती है कि, उसको सदा प्रेमसे ग्रहण कर कदापि नहीं त्यागती है ॥ ६० ॥

समपार्ष्णिः शुभा नारी पृथुपार्ष्णिश्च दुर्भगा ॥
कुलटोन्नतपार्ष्णिः स्याद्दीर्घपार्ष्णिश्च दुःखभाक् ६१

अर्थ–जिस स्त्रीके चरणकी बगली समान हो वह शुभ होती है, और जिसके चरणकी बगली मोटी होय वह स्त्री खोटे भाग्यवाली होती है, और जिसके चरणकी बगली ऊँची हो वह कुलटा होती है और बड़ी बगलीसे दुःखवती होती है ॥ ६१ ॥

दीर्घायुषे महापार्ष्णिः समपार्ष्णिः सुखाय वै ॥
स्वल्पायुषेऽल्पपार्ष्णिः स्यादुन्नता च जयाय नुः॥६२॥

अर्थ–चरणकी बड़ी बगलीवालेकी बड़ी आयु होती है,समान बगली सुखदायक होती है, बगली छोटी होय तौ थोड़ी आयु होती है, तथा ऊँची होय तो जयकी देनेवाली होती है ॥ ६२ ॥

## अथ चरणलक्षणम् ।

अस्वेदिनौ मृदुतलौ कमलोदराभौ ।
श्लिष्टाङ्गुली रुचिरताम्रनखौ सुपार्ष्णी ॥

उष्णौ शिराविरहितौ सुनिगूढगुल्फौ
कूर्मोन्नतौ च चरणौ मनुजेश्वरस्य ॥ ६३ ॥

अर्थ–जिसके चरणोंमें पसीना न आता होय, कोमल होंय, कमलके मध्यभागके समान हों, मिली हुई अंगुलियोंवाले हों, सुन्दर और लाल नखवाले हों, सुन्दर पार्ष्णिवाले हों, गरम रहते हों, रगें नहीं दीखती हों, जिनके गुल्फ मांसमें छिपेहुए हों, और कछुएके समान ऊँचे हों वह राजा होता है ॥ ६३ ॥

शूर्पाकारविरूक्षपाण्डुरनखौ वक्रौ शिरासन्ततौ
संशुष्कौ विरलांगुली च चरणौ दारिद्र्यदुःखप्रदौ ॥
मार्गायोत्कटकौ कषायसदृशौ वंशस्य विच्छित्तिदौ
ब्रह्मघ्नौ परिपक्वमृद्द्युतितलौ पीतावगम्यारतौ ॥ ६४॥

अर्थ–शूर्पके आकारके, रूखे, श्वेत नखवाले, टेढ़े, रगोंसे व्याप्त, सूखेहुए, और छीदी अंगुलीवाले चरण दरिद्रता और दुःखके देनेवाले होते हैं, और बड़े चरणमार्ग चलानेवाले होते हैं. कसैले रङ्गके चरण वंशको नष्ट करनेवाले होते हैं; पकीहुई मृत्तिकाके समान तलुवेवाले चरण ब्रह्महत्या करानेवाले होते हैं और पीले वर्णके चरण अगम्यागमन करानेवाले होते हैं ॥ ६४ ॥

## अथ जंघालक्षणम् ।

रोमजंघे च नारीणां महादुःखप्रदायके ॥
एकरोमा राजपत्नी द्विरोमा च सुखावहा ॥
त्रिरोमा रोमकूपेषु भवेद्वैधव्यदुःखभाक् ॥ ६५ ॥

अर्थ–यदि स्त्रियोंकी दोनों जंघा रोमयुक्त हों तौ महादुःखकी देनेवाली होती हैं जिस स्त्रीके रोमकूपमें एक रोम होय वह राजपत्नी

होती है, और जिसके रोमकूपोंमें दो रोम हों वह सुख भोगती है और जिस स्त्रीके रोमकूपोंमें तीन रोम हों वह स्त्री विधवापनेके दुःखको भोगनेवाली होती है ॥ ६५ ॥

रोमहीने समे स्निग्धे जंघे च क्रमवर्तुले ॥
सा राजपत्नी भवति विशिरे सुमनोहरे ॥ ६६ ॥

अर्थ—जिस स्त्रीकी दोनों जंघा रोमहीन, समान, चिकनी, उतार चढ़ावकी, गोल, चमकतीहुई रगोंरहित, और देखनेमें अत्यन्त मनोहर हों वह स्त्री राजपत्नी होती है ॥ ६६ ॥

प्रविरलतनुरोमवृत्तजंघा द्विरदकरप्रतिमैर्वरोरुभिश्च ॥
उपचितसमजानवश्च भूपा धनरहिताश्वशृगालतुल्यजंघा॥

अर्थ—जिसकी जाँघें छीदी और सूक्ष्म रोमपंक्तियोंसें ढकी हुई, और गोल, और सुन्दर, और हाथीकी सूँडके समान, तथा मोटी, और दोनों एकसी हों वह पुरुष राजा होता है, कुत्ते अथवा शृगाल ( सियार–गीदड़ ) की समान जंघावाले पुरुष निर्धन होते हैं ॥ ६७ ॥

सिंहव्याघ्रसमा लक्ष्म्यै जंघा मीनसमा तथा ॥
ऋक्षतुल्या निःस्वतायै वधबन्धकराऽशुभा ॥ ६८ ॥

अर्थ—सिंह, व्याघ्र, और मत्स्य ( मच्छी ) के समान जंघा लक्ष्मीकी प्राप्ति कराती है, और रीछकीसी जंघा निर्धनताकी देनेवाली होती है, और बध तथा बन्धन कराती हैं. अशुभ करती है ॥ ६८ ॥

ललितस्निग्धरोमाणि सूक्ष्माणि च मृदूनि च ॥
भ्रमरश्यामरूपाणि जायन्ते भूभुजां सदा ॥ ६९ ॥

अर्थ—मनोहर, चिकने, सूक्ष्म, कोमल, और भ्रमरके समान श्यामवर्ण रोम राजाओंके होते हैं ॥ ६९ ॥

रोमैकैकं कूपके पार्थिवानां द्वे द्वे ज्ञेये पंडितश्रोत्रियाणाम् ॥

स्याद्यैर्निःस्वा मानवा दुःखभाजः केशाश्चैवं निन्दिताः पूजिताश्च ॥ ७० ॥

अर्थ–राजाओंके हरएक रोमकूपकमें एक रोम होता है; पण्डित और वेदपाठी जनोंके रोमकूपमें दो रोम होते हैं; हरएक रोमकूपमें तीन या तीनसे अधिक रोम हों तो मनुष्य निर्धन और दुःखका भोगनेवाला होता है; केशोंकाभी इसीप्रकार शुभ और अशुभ फल होता है ॥ ७० ॥

रोमरहितः परिव्राट् स्यादधमः स्थूलरूक्षखररोमा ॥
पापः पिंगलरोमा निःस्वः स्फुटिताग्ररोमापि ॥ ७१ ॥

अर्थ–जिसके रोमकूपमें बिलकुल रोम न हों वह संन्यासी होता है; और जिसके रोम मोटे, रूखे, और कठोर हों वह अपनी जाति कुलमें नीच होता है; जिसके रोम पिंगला वर्ण हों वह पापी होता है और जिसके रोमोंके अग्रभाग फटे हों वह निर्धन होता है ॥ ७१ ॥

## अथ जानुलक्षणम् ।

भोगयुक् करिजानुः स्यात्पीनजानुर्महीपतिः ॥
संश्लिष्टसन्धिजानुर्ना शतायुर्विनिगद्यते ॥ ७२ ॥

अर्थ–जिसकी जानु हाथीकीसी हो वह भोगी होता है, और जिसकी जानु पुष्ट हो वह राजा होता है और जिस मनुष्यकी जानुकी सन्धि मिलीहुई चिपटी हुई हो वह सौ वर्षकी आयुवाला होता है ॥७२॥

निर्मांसजानुर्म्रियते प्रवासे सौभाग्यमल्पैर्विकटैर्दरिद्राः॥
स्त्रीनिर्जिताश्चापि भवंति निम्नै राज्यं समासैश्च महद्भिरायुः ॥ ७३ ॥

अर्थ–जिसकी जानु मांसहीन हो वह परदेशमें मरता है; जिसकी जानु छोटी हो वह अहोभाग्य होता है; जिसकी जानु बिकट हो वह

दरिद्री होता है; जिसकी जानु नीची हो वह स्त्रीके वशीभूत होते हैं. मांसयुक्त जानुवाले राज्य पाते हैं. बड़ी जानुवालोंकी बड़ी आयु होती है ॥ ७३ ॥

अनुल्बणं सन्धिदेशं समं जानुद्वयं शुभम् ।
वृत्तं पिशितसंलग्नं जानुयुग्मं प्रशस्यते ॥
निर्मांसं स्वैरचारिण्या दरिद्रायाश्च विश्लथम्॥७४॥

अर्थ–जिनकी सन्धि उल्बण न हो ऐसे दोनों जानु समान हों, तो शुभ होते हैं, और गोल हों, मांससे युक्त हों तो जानु प्रशंसनीय होते हैं;–जिस स्त्रीके जानुओंपर मांस न हो वह व्यभिचारिणी होती है, और जिस स्त्रीके जानु ढीले हों वह स्त्री दरिद्री होती है ॥ ७४ ॥

ऊरू करिकाराकारौ अरोमौ च समौ शुभौ ॥
विशिरैः करभाकारैरूरूभिर्म्मसृणैर्घनैः ॥
सुवृत्तैरोमरहितैर्भवेयुर्भूपवल्लभाः ॥ ७५ ॥

अर्थ–जिसके दोनों ऊरु हाथीकी सूंड़के समान रोमरहित और सम हों तो शुभ होते हैं; जिसके ऊरु हाथीके बच्चेकी सूंड़के समान, चिकने घने, गोल और रोमरहित हों वह स्त्री राजरानी होती है ॥ ७५ ॥

वैधव्यं रोमशैरुक्तं दौर्भाग्यं चिपिटैरपि ॥
मध्यच्छिद्रैर्महादुःखं दारिद्रयं कठिनत्वचैः ॥ ७६ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके ऊरु रोमयुक्त हों वह बिधवा होती है; जिस स्त्रीके ऊरु चपटे हों वह दुर्भाग्यवती होती है; जिसके ऊरुके बीचमें छिद्र हों वह महादुःखको प्राप्त होती है, जिसके ऊरुकी चर्म्म कठोर हो वह दरिद्रिणी होती है ॥ ७६ ॥

## अथ कटिलक्षणम् ।

भवेत् सिंहकटी राजा निःस्वः कपिकटिर्नरः ॥

**चतुर्भिरङ्गुलैः शस्ता कटिर्विंशतिसंयुतैः ॥ ७७ ॥**

अर्थ-जिसकी सिंहकीसी कमर हो वह राजा होता है; जिसकी वानरकीसी कमर हो वह निर्धन होता है; जिसकी कमर चौबीस अंगुलकी हो वह श्रेष्ठ होती है ॥ ७७ ॥

**विनता चिपिटा दीर्घा निर्मांसा सङ्कटा कटिः ॥**
**ह्रस्वा रोमयुता नार्या दुःखवैधव्यसूचिका ॥ ७८ ॥**

अर्थ-अत्यन्त नमीहुई चपटी, बड़ी, मांसहीन, विषम, अतिछोटी और रोमयुक्त ऐसी स्त्रीकी कमर होय तौ दुःखी और विधवा करनी है ॥ ७८ ॥

**रोमशकटिर्दरिद्रो ह्रस्वकटिर्दुर्भगो भवति मनुजः ॥**
**शुनमर्कटकरभकटिर्दुःखी संकटकटिः पापः ॥ ७९ ॥**

अर्थ-जिसकी कमर रोमयुक्त हो वह दरिद्री होता है; जिसकी कमर छोटी हो वह मनुष्य दुर्भाग्य होता है; जिस पुरुषकी कमर कुत्ता, वानर, और हाथीकीसी हो वह दुःखी होता है, और जिसकी कमर नीची ऊँची हो वह पापी होता है ॥ ७९ ॥

## अथ स्फिग्लक्षणम् ।

**ऊर्ध्वस्फिग्व्याघ्रमृत्युः स्यान्मंडूकस्फिङ्नरेश्वरः ॥**
**उष्ट्रप्लवंगमस्फिङ्ना धनधान्यविवर्जितः ॥ ८० ॥**

अर्थ-जिसके चूतड़का पिछला हिस्सा ऊँचा हो, उसकी व्याघ्रसे मृत्यु होती है; जिसके चूतड़का पिछला हिस्सा मेंड़ककासा होय, वह राजा होता है, और जिस मनुष्यके चूतड़का पिछला हिस्सा ऊँट और वानरकासा हो वह धनधान्यरहित होता है ॥ ८० ॥

**अशीघ्रमैथुन्यल्पायुः स्थूलस्फिक् स्याद्धनोज्झितः ॥**
**मांसलस्फिक् सुखी स्याच्च सिंहास्फिक् भूपतिः स्मृतः ८१**

अर्थ–जिस पुरुषकी स्फिक् नितम्ब–चूतड़का पिछला भाग मोटा होय वह धनहीन होता है; जिसकी स्फिक पुष्ट होय वह सुखी होता है, सिंहके समान स्फिक्वाला राजा होता है. जो देरीसे मैथुन करसके उसकी अल्पायु होती है ॥ ८१ ॥

समुन्नतो नितम्बश्च चतुरस्रो मृगीदृशाम् ॥
नितम्बबिम्बो नारीणामुन्नतो मांसलः पृथुः ॥
महाभोगाय संप्रोक्तस्तदन्योऽशर्मनाय च ॥ ८२ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीका नितम्ब ऊंचा और चौकोन हो वह स्त्री कल्याणकारिणी होती है; स्त्रियोंका नितम्ब ऊंचा, पुष्ट और मोटा होय तौ बड़े बड़े भोग भुगाता है, और पूर्वोक्त लक्षणोंसे विपरीत लक्षणोंवाला होय तौ अशुभफल देता है ॥ ८२ ॥

कपित्थफलवद्वृत्तौ मृदुलौ मांसलौ घनौ ॥
स्फिचौ वलिविनिर्मुक्तौ रतिसौख्यविवर्द्धनौ ॥ ८३ ॥

अर्थ–कैथाके फलके समान गोल, कोमल, पुष्ट, घने, और सकोड़न करके रहित नितम्ब मैथुनसुखके बढ़ानेवाले होते हैं ॥ ८३ ॥

यतमांसो गम्भीरः सुकुमारः संवृतः शोणः ॥
पायुः शुभो नराणां पुनरशुभो भवति विपरीतः ॥ ८४ ॥

अर्थ–मनुष्योंका गुदस्थान मांससे भराहुआ, गहरा, कोमल मिलाहुआ, और लालवर्णका होय तो शुभ होता है, और इन लक्षणोंसे विपरीत होय तौ अशुभ होता है ॥ ८४ ॥

## अथ वृषणलक्षणम् ।

जलमृत्युरेकवृषणो विषमैः स्त्रीचंचलः समैः क्षितिपः ॥
ह्रस्वायुश्चोद्बद्धैः प्रबलम्बवृषणस्य शतमायुः ॥ ८५ ॥

अर्थ-जिसके कोशमें एकही गोली होती है अर्थात् जिसके एकही

फोता होता है उसकी जलमें मृत्यु होती है· जिसके दोनों फोते एकसे न हों वह स्त्रीके समान चंचल होता है, जिसके दोनों फोते एकसे हों वह राजा होता है, जिसके चढ़ेहुए हों उसकी थोड़ी आयु होती है, जिसके फोते लम्बे हों उसकी सौ वर्षकी आयु होती है ॥ ८५ ॥

वृषणैर्वामोन्नतैर्दुःखैः साकं पुत्री प्रसूयते ॥
प्रसूयते तथा तैस्तु प्राक्पुत्रो दक्षिणोन्नतैः ॥ ८६ ॥

अर्थ--जिन पुरुषोंके बाईं ओरको फोते नमे हुए हों तौ उसके बड़े दुःखोंमे कन्या उत्पन्न होती है. और दाहिने फोते जिनके नमेहुए हों उनके प्रथम पुत्र उत्पन्न होता है ॥ ८६ ॥

निःस्वः शुष्कस्थूलैरम्यरमणीरतास्तुरंगसमैः ॥
पुनरर्द्धार्द्धैर्वृषणैर्भवंति न चिरायुषः पुरुषाः ॥ ८७ ॥

अर्थ--सूखे और मोटे फोतोंवाला पुरुष दरिद्री होता है, और जिनके फोते घोड़ोंके समान हों वह पुरुष सुन्दर स्त्रियोंके साथ भोगविलास करनेवाले होते हैं, जिनके फोते प्रमाणसे आधे हों वह पुरुष अल्पायु होते हैं ॥ ८७ ॥

कर्कशे कठिणे शिश्ने परदाररतः सदा ॥
रमते च सदा कामी निर्धनो भवति ध्रुवम् ॥ ८८ ॥

अर्थ--जिस पुरुषकी लिङ्गेन्द्रिय खुदरी और कठोर होय वह परस्त्री लम्पट होता है, कामी होता है, स्त्रीसमागम अधिक करता है, और निःसन्देह निर्धन होता है ॥ ८८ ॥

अल्पशिश्ने च धनवान् सूक्ष्मे पुत्रादिवर्जितः ॥
स्थूलशिश्नो दरिद्रः स्याद्दुःख्येकवृषणो भवेत् ॥ ८९ ॥

अर्थ--जिसकी लिङ्गेन्द्रिय छोटी हो वह धनवान् होता है, और जिसकी लिङ्गेंद्रिय पतली हो उसके सन्तान नहीं होती है, जिसकी

लिङ्गेन्द्रिय मोटी हो वह दरिद्री होता है, एक फोतेवाला दरिद्री होता है ॥ ८९ ॥

स्थूलशिश्नेन रक्तेन लभते चोत्तमाङ्गनाम् ॥
राज्यसौख्यं चिरं भुंक्ते रमणीरमणो भवेत् ॥९०॥

अर्थ–जिस पुरुषकी लिंगेन्द्रिय मोटी और लाल हो वह उत्तम स्त्रीको प्राप्त होता है, और चिरकालपर्यन्त राज्यका सुख भोगता है, तथा स्त्रीको रमण करनेवाला होता है ॥ ९० ॥

कर्कशैः कठिनैः शिश्नैः प्रमाणान्निर्गतैः सदा ॥
रमते च सदा दासीं निर्धनो भवति ध्रुवम् ॥ ९१॥

अर्थ–जिनकी लिङ्गेद्रिय खुदरी, कठोर, और प्रमाणसे अधिक होय तौ वह पुरुष सदा दासीके साथ मैथुन करते हैं और निःसन्देह निर्धन होते हैं ॥ ९१ ॥

मेढ्रे वामनते चैव सुतार्थरहितो भवेत् ॥
वक्रेऽन्यथा पुत्रवान् स्याद्दारिद्र्यं विनते त्वधः ॥९२॥
अल्पे तु तनयो शिश्ने शिरालेऽथ सुखी नरः ॥
स्थूलग्रन्थियुते शिश्ने भवेत् पुत्रादिसंयुतः ॥
बलवान् युद्धवांश्चैव लघुशेफः प्रजायते ॥ ९३ ॥

अर्थ–यदि लिंगेंद्रिय बाईं ओर नमी हुई होय तौ पुरुष पुत्र और धनकरके रहित होता है, और लिंगेंद्रिय टेढ़ी होय, छोटी होय और दक्षिणकी ओरको नमी हुई होय तौ पुत्रवान् होता है, और नीचेको नमी हुई लिंगेंद्रियवाला दरिद्री होता है, छोटी लिंगेन्द्रियवालेके पुत्र उत्पन्न होता है, और रोगोंकरके युक्त इन्द्रियवाला सुखी होता है, मोटे और गाँठयुक्त लिंगवालेके पुत्रादि उत्पन्न होते हैं, छोटे लिंगवाला बलवान् और लड़ाँका होत है ॥ ९२ ॥ ९३ ॥

महद्भिरायुराख्यातं ह्यल्पशिश्नैर्धनी नरः ॥
अपत्यरहितो लोके स्थूलशिश्नैर्विपर्ययः ॥ ९४ ॥

अर्थ-बड़े शिश्नवालोंकी अधिक आयु होती है, और छोटे शिश्नवाले धनवान् होते हैं. मोटे शिश्नवालोंके सन्तान उत्पन्न नहीं होती है ॥ ९४ ॥

दीर्घशिश्नेन दारिद्र्यं स्थूलशिश्नेन निर्धनः ॥
कृशशिश्नेन सौभाग्यं ह्रस्वशिश्नेन भूपतिः ॥ ९५ ॥

अर्थ-बड़े शिश्नवाला दरिद्री होता है. मोटे शिश्नसे निर्धन होता है, दुर्बल शिश्न ( लिंग ) सौभाग्यकारक होता है, और छोटे लिंगेन्द्रियवाला पृथ्वीका स्वामी होता है ॥ ९५ ॥

कृशशिश्नेन रक्तेन लभते चोत्तमांगनाम् ॥
राज्यं सौख्यं च दिव्यस्त्रीं कन्यकायाः पतिर्भवेत् ९६

अर्थ-यदि लिंगेन्द्रिय पतली और लाल होय तो उत्तम स्त्रीकी प्राप्ति होती है, राज्यकी प्राप्ति होती है, सुख मिलता है, दिव्य स्त्री मिलती है, और कन्याका पति होता है ॥ ९६ ॥

स्थूलशिश्नेन ह्रस्वेन रक्तवर्णेन भूपतिः ॥
परस्त्रीनिरतो नित्यं नारीणां वल्लभो भवेत् ॥ ९७ ॥

अर्थ-जिसका लिंगेन्द्रिय मोटा, छोटा, और लालवर्ण होय वह राजा होता है, परस्त्रीमें असक्त होता है, सदा स्त्रियोंका प्रिय होता है ॥ ९७ ॥

अब एक श्लोकमें सम्पूर्ण, शिश्नेन्द्रियका लक्षण कहते हैं—

लिङ्गेऽल्पे धनवानपत्यरहितः स्थूले विहीनो धनैः
मेढ्रे वामनते सुतार्थरहितो वक्रेऽन्यथा पुण्यवान् ॥
दारिद्र्यं विनते त्वधोऽल्पतनयो लिङ्गे शिरासन्तते ॥
स्थूलग्रंथियुते सुखी मृदुतरोऽत्यन्तं प्रमेहादिभिः ९८

अर्थ--छोटे लिंगवाला धनवान् होता है, मोटेलिंगवाला सन्तान रहित होता है, निर्धन होता है, बाईं ओरको नमा तौ पुत्रधनरहित होता है, दाहिनी ओरको नमा होय तौ पुण्यात्मा होता है, नीचेको नमा होय तौ दारिद्रय होता है, यदि लिंगेन्द्रिय रगोंसे व्याप्त होय तौ सन्तान थोड़ी होती है, मोटी ग्रन्थिकरके युक्त हो तौ सुखी होता है, और प्रमेहादि रोगोंके कारण दुर्बल होता है ॥ ९८ ॥

कोषनिगूढैर्भूपा दीर्घभुग्नैश्च वित्तपरिहीणाः ॥
ऋजुवृत्तशेफजुषो लघुशिरालशिश्नाश्च धनवन्तः ॥९९॥

अर्थ--जिसका कोष बहुत बढ़ाहुआ हो वह राजा होता है; लम्बे और टेढ़े कोषवाला निर्धन होता है; जिसकी लिंगेन्द्रिय सीधी, गोल और थोड़ी नसोंवाली हो वह धनवान् होता है ॥ ९९ ॥

हरितांजनाभरेखो महामणिर्जायते समोत्तानः ॥
मन्थानकपुष्पनिभो यस्य स भर्त्ता भुवो भवति १००

अर्थ--जिस पुरुषके लिंगेन्द्रियकी सुपारीमें नीले थोथेके रंगकीसी रेखा हो, और बराबर ऊँची रुईके समान हो वह पुरुष पृथ्वीका स्वामी अर्थात् राजा होता है ॥ १०० ॥

मध्योत्तानैश्च पशुमान् स्निग्धश्लक्ष्णैः सुखी भवेत् ॥
जपाकुसुमसंकाशैर्भूपो रक्तेन श्रीखनिः ॥ १०१ ॥

अर्थ--बीचमें ऊँची मणि ( लिंगकी सुपारी ) वाले पशुवाले होते हैं, चिकनी और रमणीय सुपारीवाले सुखी होते हैं,और गुड़हरके पुष्पके समान मणिवाले राजा, और लाल मणिवाले लक्ष्मीकी खान होते हैं ॥ १०१ ॥

मुक्तासुवर्णरजतप्रवालसदृशो मणिः ॥
येषां भवति दीप्तास्ते सोदधिपृथिवीश्वराः ॥ १०२ ॥

अर्थ-मोती, सुवर्ण, चांदी, वा मूँगेके समान जिन पुरुषोंके लिंगकी सुपारी होय वे पुरुष तेजस्वी और समुद्रपर्य्यन्त पृथ्वीके राजा होते हैं ॥ १०२ ॥

दारिद्र्यजुषः परुषैः परुषाभैर्विपाण्डुरैर्मणिभिः ॥
मध्योन्नतैर्बहुकन्या जायन्ते दुःखिनः स्फुटितैः १०३

अर्थ-जिन पुरुषोंके लिंगकी सुपारी खुरखुरी कठोर हो वे दरिद्री होते हैं; खरदरी वस्तुके समान कान्तिवाली, पाण्डुवर्ण, और बीचमें ऊँचे मणिवाले हों तौ अधिक कन्या उत्पन्न होती हैं; फटीहुई मणिवाले दुःखी होते हैं ॥ १०३ ॥

विद्रुमहेमोपमया महामणौ रेखया नरो धनवान् ॥
दौर्भाग्यवान् शबलया धूसरया जायते निःस्वः १०४

अर्थ-जिस पुरुषकी लिंगेन्द्रियकी सुपारी बड़ी हो और उसमें मूंगा अथवा सुवर्णके समान रेखा होय वह धनवान् होता है, और चित्र विचित्र वर्णकी रेखासे दौर्भाग्यवाला, तथा धूलियावर्णकी रेखासे निर्धन होता है ॥ १०४ ॥

## अथ वीर्यलक्षणम् ।

कुसुमसमगन्धशुक्रा विज्ञातव्या महीपालाः ॥
मधुगन्धे बहुवित्ता मत्स्यगन्धे बहून्यपत्यानि ॥१०५॥

अर्थ-जिनके वीर्य्यमेंसे पुष्पके समान सुगन्धि निकलै वे राजा होते हैं, और शहतकी सुगन्धि निकलनेसे अधिक धनी होते हैं, और जिनके वीर्य्यमेंसे मछलीकी सुगन्धि निकलै उनके बहुत सन्तान होती हैं ॥ १०५ ॥

तनुशुक्रः स्त्रीजनको मांससगन्धे महाभोगी ॥

मदिरागन्धे यज्वा क्षारसगन्धे च रेतसि दरिद्रः ॥
शीघ्रं मैथुनगामी दीर्घायुरतोऽन्यथाल्पायुः ॥१०६॥

अर्थ-जिसका वीर्य्य कम गिरै उसके कन्या उत्पन्न होती है; जिसके वीर्य्यमें मांसका गन्ध हो वह बड़ाभोगी होता है; मद्यकी गन्ध हो तौ यज्ञ करनेवाला, खारकी गंध हो तौ दरिद्री, अधिक मैथुन करनेवाला दीर्घायु होता है; इनसे दूसरी गन्ध हो तौ अल्पायु होता है ॥ १०६ ॥

जम्बूवर्णेन सुखी दुग्धसवर्णेन रेतसा नृपतिः ॥
धूम्रेण दुःखसहितः स्याद्दुःस्थः श्यामवर्णेन ॥१०७॥

अर्थ-जिसके वीर्य्यका रङ्ग जम्बूफल ( जामुन् ) कासा होय वह सुखी होता है; दुग्धकासा रंग होय तौ राजा होता है, धुएँकासा रंग होय तौ दुःखी होता है; श्याम वर्ण होय तौ कठिनसे स्थित होनेवाला होता है ॥ १०७ ॥

## अथ मूत्रलक्षणम् ।

सुखिनः सशब्दमूत्रा निःस्वा निःशब्दधाराश्च ॥
द्वित्रिचतुर्धाराभिः प्रदक्षिणावर्त्तवलितमूत्राभिः॥१०८॥
पृथ्वीपतयो ज्ञेया विकीर्णमूत्राश्च धनहीनाः ॥
एकैव मूत्रधारा वलिता रूपप्रधानसुतदात्री ॥१०९॥

अर्थ-जिनके मूत्रकी धारासे शब्द हो वे सुखी होते हैं, और मूत्रधारासे शब्द नहीं होता होय वे निर्धन होते हैं; दो, तीन, चार, धारा होकर लहराती हुई मूत्रधारा दाहिनी ओर गिरै तौ वह राजा होता है; मूत्र बिखराहुआ गिरै तौ निर्धन होता है;एकही धारा लहराती हुई गिरै तौ सुन्दर पुत्रकी देनेवाली होती है ॥ १०८ ॥ १०९ ॥

## अथ रुधिरलक्षणम् ।

स्निग्धं प्रवालतुल्यं यस्यांग भवति शोणितं न चिरम् ॥

**स वहति स्वकीयभुजया मनुजो निखिलाम्बुधिमेखलां वसुधाम्॥ ११० ॥**

अर्थ-जिसके शरीरमें रुधिर मूँगेके रंगके समान बहुत चिकना नहीं होय वह अपनी भुजाओंके बलसे समुद्रसहित पृथ्वीको भोगता है ॥ ११० ॥

**रुधिरं यस्य शरीरे रक्ताम्बुजवर्णसंमितं भवति ॥**
**भुजवल्लिकङ्कणरणत्कारा तमनुसरति राज्यश्रीः ॥१११॥**

अर्थ-जिसके शरीरमें रुधिर लालकमलके समान हो, उस पुरुषकी भुजारूपी बेलमें जो कङ्कण उसका जो ठन् ठन् शब्द तिसको करनेवाली राज्यलक्ष्मीरूप स्त्री मिलती है ॥ १११ ॥

**बस्तिः प्रशस्ता विपुला मृद्वी स्तोकसमुन्नता ॥**
**रोमशा च शिराला च रेखाङ्का नैव शोभना ॥११२॥**

अर्थ-जिन पुरुषोंका पेंडू मांससे भरा, कोमल, और कुछ ऊँचा हो, वह उत्तम होता है. रोमावलीयुक्त, नसोंकरके युक्त, और रेखाओंके चिह्नवाला शोभन नहीं होता है ॥ ११२ ॥

## अथ नाभिलक्षणम् ।

**नाभिःप्रशस्ता गम्भीरा दक्षिणावर्तिका शुभा ॥११३॥**

अर्थ-गहरी और दक्षिणकी ओरको झुँकीहुई नाभि शुभ है ॥११३॥

**मत्स्योदरा बहुधना नाभिभिः सुखिनः स्मृताः ॥**
**विस्तीर्णाभिर्बहुलाभिर्निम्नाभिः क्लेशभागिनः ॥**
**वलिमध्यगता नाभिः शूलबाधां करोति हि ॥**
**वामावर्ता च साध्यं वै मेधां च दक्षिणस्तथा ॥**
**पार्श्वायता चिरायुः स्यात्तूपरिष्टाद्धनेश्वरः ॥**
**अधोगवाढ्यं कुर्य्याच्च नृपत्वं पद्मकर्णिका ॥११४ ॥**

अर्थ—यदि नाभि मछलीके उदर ( पेट ) के समान होय तौ वह पुरुष अत्यन्त धनवान् होता है; जिसकी नाभि चौड़ी हो वह सुखी होता है; अत्यन्त नीची नाभिवाले दुःखी होते हैं; यदि नाभि त्रिवलीके बीचमें होय तौ शूलरोग करती है, जिसकी नाभिमें वामावर्त्त हो वह शक्तिमान् होता है; दक्षिणावर्त्त हो तौ बुद्धि देता है; जिसकी नाभि पसलियोंकी ओरको चौड़ी होय वह दीर्घायु होता है; जिसकी नाभि ऊपरको हो वह धनवान् होता है; जिसकी नाभि नीचेको हो उसके गोधन होता है, तथा जिसकी नाभि कमलकी कलीके समान होय वह त्ता होता है ॥ ११४ ॥

सुखी गम्भीरा दक्षिणावर्ता नाभिः स्यात् सुखसम्पदे ।
वामावर्त्ता समुत्ताना व्यक्तग्रन्थिर्न शोभना ॥
नाभिश्च दक्षिणावर्त्ता सा नारी सुखमेधते ॥ ११५ ॥

अर्थ—गम्भीर और दक्षिणावर्त्त चिह्नवाली नाभि सुख और संपदाकी देनेवाली होती है; वामावर्त्त चिह्नवाली, और जिसमें ग्रन्थि चमकती होय वह नाभि श्रेष्ठ नहीं होती है, और जिस स्त्रीकी नाभि दक्षिण ओरको झुकी हुई होय वह सुखको प्राप्त होता है ॥ ११५ ॥

त्वक् स्निग्धा विपुला भोगा अल्पायुर्नाभिरुन्नता ॥
विस्तीर्णा मांसोपचिता गम्भीरा विपुला शुभा ॥
नाभिश्च दक्षिणावर्त्ता गंभीराऽब्जतुला शुभा ॥
नाभिः प्रदक्षिणावर्त्ता मध्यं त्रिवलिशोभितम् ॥ ११६ ॥

अर्थ—जिसकी नाभिका चर्म्म चिकना हो वह सौभाग्यशाली होता है; जिसकी नाभि ऊँची होती है, वह अल्पायु होता है; जिसकी नाभि चौड़ी, पुष्ट, बड़ी गहरी, कमलकी कलीके समान और दक्षिणकी ओरको झुकी हुई शुभ होती है, और उदर त्रिवलियुक्त शोभायमान होता है ॥ ११६ ॥

परिमण्डलोन्नताभिर्विस्तीर्णाभिश्च नाभिभिः सुखिनः ॥
स्वल्पा त्वदृश्यानिम्ना नाभिः क्लेशावहा भवति ॥११७॥

अर्थ–गोल, ऊँची, और साथही साथ चौड़ी नाभिवाले सुखी होते हैं; जिनकी नाभि छोटी हो, तथा दबीहुई होय वह पुरुष क्लेश भोगते है ॥ ११७ ॥

पार्श्वायता चिरायुषमुपरिष्टाच्चेश्वरं गवाढ्यमधः ॥
शतपत्रिकर्णिकाभा नाभिर्मनुजेश्वरं कुरुते ॥ ११८ ॥

अर्थ–अगल बगल किसी किनारेको नाभि चौंड़ी होय तौ वह दीर्घायु होता है; ऊपरको चौंड़ी होय तौ प्रभु होता है, नीचेको चौंड़ी होय तौ गौओंका सेवनवाला होता है, और कमलकी कलीके समान नाभिवाला राजा होता है ॥ ११८ ॥

## अथ कुक्षिलक्षणम् ।

समकुक्षा भोगाढ्या निम्नाभिर्भोगपरिहीणाः ॥
उन्नतकुक्षाः क्षितिपाः कुटिलाः स्युर्मानवाविषमकुक्षाः ॥

अर्थ–समान कोखवाले भोगी और कमती बाहरी कोखवाले भोगहीन होते हैं; ऊँची कोखवाले राजा होते हैं, और नीची ऊँची कोखवाले कुटिल होते है ॥ ११९ ॥

समजठरा भोगयुता घटपिठरनिभोदरा निःस्वाः ॥
अविकलपार्श्वाधनिनोनिम्नैर्वक्रैश्चभोगसन्त्यक्ताः॥१२०॥

अर्थ–समान पेटवाले भोगी, घट और कुप्पेके समान पेटवाले निर्धन होते हैं; पार्श्वदेश विकल न होनेसे धनी, और दबा हुआ टेढ़ा होनेसे भोगहीन होते है ॥ १२० ॥

कुक्षिर्यस्य गभीरा विनिपातं स लभते नरः प्रायः ॥
उत्ताना यस्य पुनर्नारीवृत्तेन जीवते सोपि ॥ १२१ ॥

अर्थ–जिसकी कोख गहरी हो वह प्रायः परास्त होजाता है; अथवा गिरता है; जिसकी कोख ऊंची होय उसकी आजीविका स्त्रीसे होती है ॥ १२१ ॥

सूते सुतान् बहून्नारी पृथुकुक्षिः सुखास्पदान् ॥
क्षितीशं जनयेत् पुत्रं मण्डूकाभेन कुक्षिणा ॥ १२२ ॥

अर्थ–मोटी कोखवाली स्त्री सुखके देनेवाले बहुतसे पुत्रोंको उत्पन्न करती है और जिस स्त्रीकी कोख मेंडकके समान होय वह जिस पुत्रको उत्पन्न करती है वह राजा होता है ॥ १२२ ॥

उन्नतेन वलीभाजा सावर्त्तेनापि कुक्षिणा ॥
वन्ध्या प्रव्रजिता दासी क्रमाद्योषाभवेदिह ॥ १२३ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीकी ऊंची कोख हो वह बन्ध्या होती है; जिसकी कोखमें वली पड़ी हों वह संन्यासिनी हो जाती है, और जिसकी कोखमें आवर्त्त हो वह स्त्री दासी होती है ॥ १२३ ॥

## अथ पार्श्वलक्षणम् ।

मांसलमृदुभिः पार्श्वैः प्रदक्षिणावर्त्तरोमभिर्भूपाः ॥
विपरीतैर्निर्द्रव्याः सुखपरिहीणाः परप्रैष्याः ॥ १२४ ॥

अर्थ–जिनका पार्श्वदेश मांसयुक्त, कोमल, तथा दाहिनी ओरको मुड़ेहुए रोमोंसे व्याप्त हो वह राजा होते हैं; इसके विपरीत होय तो निर्धन, दुःखी और दास होते हैं ॥ १२४ ॥

यस्यादृश्यशिरे पार्श्वे उन्नते रोमसंयुते ।
निरपत्या च दुःशीला सा भवेद्दुःखसेविनी ॥ १२५ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके दोनों पार्श्वदेशोंकी नसें नहीं दीखती हों, ऊँचे हो, रोमोंकरके युक्त हों, वह स्त्री सन्तानहीन, दुष्ट स्वभाववाली और दुःखोंको भोगनेवाली होती है ॥ १२५ ॥

समैः समांसैर्मृदुभिर्योषिन्मग्नास्थिभिः शुभैः ॥
पार्श्वैः सौभाग्य सुखयोर्निधानं स्यादसंशयः ॥१२६॥

अर्थ-जिस स्त्रीके दोनों पार्श्वदेश समान, पुष्ट, कोमल और मांससे छिपी हुई हैं हड्डी जिनमें ऐसे हों तो शुभ होते हैं और वह स्त्री सौभाग्य और सुखका स्थान होती है ॥ १२६ ॥

## अथ उदरलक्षणम् ।

भोगाढ्याः समजठरा निस्वाः स्युर्घटसन्निभाः ॥
सर्पोदरा दरिद्रा स्युरेखाभिश्चायुरुच्यते ॥ १२७॥

अर्थ-जिसका पेट समान हो वह भोगी होता है, और जिन पुरुषोंका पेट घटके समान हो वह निर्धन होतेहैं, और जिनका पेट सर्पके समान हो वह दरीद्री होतेहैं, और जिनके पेटपर रेखा हों वह दीर्घायु होते हैं ॥ १२७ ॥

सुविशालोदरा नारी निरपत्या च दुर्भगा ॥
प्रलम्बजठरा हन्ति श्वशुरं चापि देवरम् ॥ १२८ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीका पेट बहुत चौड़ा हो वह सन्तानहीन और दुश्चारिणी होती है, और जिस स्त्रीका पेट लम्बा हो वह स्त्री श्वशुर और देवरका नाश करनेवाली होती है ॥ १२८ ॥

श्ववृकोदरो दरिद्रः शृगालतुल्योदरोदरोपेतः ॥
पापः कृशोदरः स्यान्मृगभुक्सदृशोदरश्चौरः ॥ १२९॥

अर्थ-जिसका पेट कुत्ते और भेंड़ियेके समान होय वह दरिद्री होताहै, और गीदड़के समान पेटवाला डरपोंक होता है दुर्बल पेटवाला पापी होताहै, चीतेके समान पेटवाला चोर होता है ॥ १२९ ॥

कुम्भाकारं दरिद्राया जठरं च मृदङ्गवत् ॥

कूष्माण्डाभं यवाभं च दुष्कूलं जायते स्त्रियाः॥१३०॥

अर्थ—जिस स्त्रीका पेट कुम्भके आकारका अथवा मृदङ्गके आकारका हो वह दरिद्री होती है, और जिस स्त्रीका पेट कुम्हाड़ाके अथवा यव ( जौ ) के आकारका होय वह स्त्री दुष्कुलकी उत्पन्न हुई होती है ॥ १३० ॥

उदरेण ह्यतुङ्गेन विशिरेण मृदुत्वचा ॥
योषिद्भवति भोगढ्या नित्यमिष्टान्नसेविनी ॥ १३१ ॥

अर्थ—जिस स्त्रीका पेट बहुत ऊंचा न हो, नसोंकरके रहित हो, कोमल चर्म्मवाला हो वह स्त्री सदा भोगवती होती है और नित्य मिष्टान्नका भोजन करनेवाली होती है ॥ १३१ ॥

## अथ वलिलक्षणम् ।

शास्त्रान्तं स्त्रीभोगिनमाचार्य्यं बहुसुतं यथासंख्यम् ।
एकाद्वित्रिचतुर्भिर्वलिभिर्विद्यान्नृपं त्ववलिम् ॥ १३२ ॥

अर्थ—जिसके पेटमें एक वलि ( सकोड़न ) हो वह शास्त्रका पारङ्गत होता है और दो वलि हों तो स्त्रीका भोग करनेवाला, तीन वलि हो तो आचार्य्य और चार वलि हों तो बहुत पुत्रवाला होता है, राजाके कोईभी वलि नहीं होती है ॥ १३२ ॥

विषमवलयो मनुष्या भवन्त्यगम्याभिगामिनः पापाः।
ऋजुवलयः सुखभाजः परदारद्वेषिणश्चैव ॥ १३३ ॥

अर्थ—जिनके पेटकी बलि छोटी बड़ी हो वह पुरुष अगम्यागमन करनेवाले होते हैं, और जिनके पेटमें सूधी बलि हो वह पुरुष सुखभोगनेवाले और परस्त्रियोंसे द्वेष करनेवाले होते है ॥ १३३ ॥

## अथ हृदयलक्षणम् ।

हृदयं समुन्नतं पृथुसवेपलं मांसलञ्च नृपतीनाम्॥

**अधमानां विपरीतं खररोमचित्तं शिरालं च ॥ १३४॥**

अर्थ-राजाओंका हृदय ऊंचा, चौंड़ा, कम्पायमान, और मांसयुक्त होता है, अधम पुरुषोंका हृदय पूर्वोक्त लक्षणोंसे प्रतिकूल और खुदरा, रोमावलीयुक्त और नसोंकरके युक्त होता है ॥ १३४ ॥

**समवक्षसोऽर्थवन्तः पीनैः शूरास्त्वकिंचनास्तनुभिः ।**
**विषमं वक्षो येषां ते निःस्वाः शस्त्रनिधनाश्च ॥१३५॥**

अर्थ-जिनका हृदय ( छाती ) समान हो, वे धनी होते हैं; पुष्ट छातीवाले शूर होते हैं; पतली छाती होनेसे निर्धन, और नीची ऊंची छातीवाले निर्धन और शस्त्रकी चोटसे मरणको प्राप्त होनेवाले होते है ॥ १३५ ॥

**उद्भिन्नरोमहृदया पतिं हन्ति विनिश्चितम् ॥**
**अष्टादशांगुलततमुरः पीवरमुत्तमम् ॥**
**सुखाय दुःखाय भवेद्रोमशं विम्बकं पृथु ॥ १३६ ॥**

अर्थ-जिस स्त्रीकी छातीपर रोम निकले हुए हों वह निःसन्देह पतिका नाश करनेवाली होती है; अठारह १८ अंगुल चौंड़े, पुष्ट, और ऊँचे वक्षःस्थलवाली स्त्री सुख भोगती है, और रोमयुक्त तथा ऊँचे नीचे वक्षःस्थलवाली स्त्री दुखोंको भोगनेवाली होती है ॥ १३६ ॥

**समोन्नतं च हृदयमकम्पं मांसलं पृथु ॥**
**नृपाणामधनानां च खररोमशिरालकम् ॥ १३७ ॥**

अर्थ-समान, ऊँचा, कम्परहित, पुष्ट, और चौड़ा हृदय राजाओंका होताहै; और खरखरा, रोमयुक्त, तथा नसोंकरके युक्त वक्षःस्थल अधमोंका होता है ॥ १३७ ॥

**समवक्षा हि भोगाढ्या निम्नवक्षा धनोज्झिता ॥**
**विस्तीर्णहृदया योषा पुंश्चली निर्दया तथा ॥ १३८ ॥**

अर्थ–जिस स्त्रीकी छाती समान हो वह भोगवती होती है; नीची छातीवाली निर्धन होती है; और चौड़ी छातीवाली स्त्री व्यभिचारिणी होती है, तथा दयारहित होती है ॥ १३८ ॥

निर्लोम हृदयं यस्याः समं निम्नत्ववर्जितम् ॥
ऐश्वर्यं चाप्यवैधव्यं प्रियप्रेमा च सा भवेत् ॥१३९॥

अर्थ–जिस स्त्रीका हृदय रोमरहित हो, समान हो, नीचा नहीं हो, वह ऐश्वर्यवर्धनी, सदा सौभाग्यवती, और प्रिय ( पति ) से प्रेम करनेवाली होती है ॥ १३९ ॥

अर्थवान्समवक्षाः स्यात् पीनैर्वक्षोभिरूर्जितः ॥
वक्षोभिर्विषमैर्निःस्वाः शस्त्रेण निधनास्तथा ॥१४०॥

अर्थ–समान वक्षःस्थलवाला पुरुष धनी होताहै, और पुष्ट वक्षःस्थल-वाला तेजस्वी और बलवान् होताहै; नीचे ऊँचे वक्षःस्थलवाले निर्धन होते हैं, और उनकी शस्त्रसे मृत्यु होती है ॥ १४० ॥

उरसा घनेन धनवान् पीनेन भटस्तथोर्ध्वरोम्णा स्यात् ।
निःस्वःस्तनुना विषमेणाकालमृतिरकिंचनश्च नरः १४१॥

अर्थ–कड़ी छातीवाला नर धनवान् होताहै; पुष्ट और ऊपरको रोमयुक्त छातीवाला बीर ( योद्धा ) होताहै; पतली छातीवाला निर्धन होताहै; नीची ऊँची छातीवाला कृपण होताहै, और उसकी अकाल मृत्यु होती है ॥ १४१ ॥

## अथ स्तनलक्षणम् ।

मूले स्थूलौ क्रमकृशावग्रे तीक्ष्णौ पयोधरौ ॥
सुखदौ बाल्यकाले तु पश्चादत्यन्तदुःखदौ ॥१४२॥

अर्थ–मूलमें मोटे और क्रमसे आगेको दुबले और तीखे स्तन

बाल्यावस्थामें सुख देनेवाले होते हैं, और बाल्यावस्थाके अनन्तर अत्यन्त दुःख देते हैं ॥ १४२ ॥

**अरघट्टघटीतुल्यौ कुचौ दौःशील्यसूचकौ ॥**
**पीवरास्यौ सान्तरालौ पृथूपान्तौ न शोभनौ ॥१४३॥**

अर्थ–जिसके स्तन ढेंकलीके समान हों वह स्त्री दुश्चरित्रा होती है; और पुष्ट मुखवाले, बीचमें पतले, तथा आगेको फिर मोटे स्तन शुभ नहीं होते हैं ॥ १४३ ॥

**दक्षिणोन्नतवक्षोजा पुत्रिणी त्वग्रणी मता ॥**
**वामोन्नतकुचा सूते कन्यां सौभाग्यसुन्दरीम् १४४**

अर्थ–जिस स्त्रीका दहिना स्तन ऊँचा हो वह पुत्रवती और सबमें श्रेष्ठ होती है; और जिस स्त्रीका वाम स्तन ऊँचा हो वह स्त्री सौभाग्यवती और रूपवती कन्याको उत्पन्न करती है ॥ १४४ ॥

**स्तनौ सुविपुलौ यस्याः पतितौ जठरोपरि ॥**
**तस्याश्च म्रियते भर्ता सामुद्रवचनं यथा ॥ १४५ ॥**

अर्थ--सामुद्रिकशास्त्रमें इस प्रकारसे वर्णन कियाहै कि, जिस स्त्रीके स्तन बहुत लम्बे चौड़े और पेटके ऊपर पड़े हुए हों उसके पतिका मरण हो जाता है ॥ १४५ ॥

**अरोमशौ स्तनौ पीनौ घनाववियमौ शुभौ ॥**
**घनौ वृत्तौ दृढौ पीनौ समौ शस्तौ पयोधरौ ॥**
**स्थूलाग्रौ विरलौ सूक्ष्मौ वामोरूणां न शर्मदौ १४६**

अर्थ--रोमरहित, तैयार, घने और समान स्तन शुभ होते हैं; घने, गोल, कठोर, पुष्ट, और समान स्तन प्रशंसनीय होते हैं; और अग्रभागमें मोटे, बीचमें पतले, अथवा बिलकुल अर्थात् मूलसे अग्रभागतक पतले स्त्रियोंके स्तन शुभकारक नहीं होते ॥ १४६ ॥

सुभगा भवन्त्यनुद्वद्धचूचुका निर्धना विषमदीर्घैः ॥
पीनोपचितनिम्नगैःक्षितिपतयश्चूचुकैः सुखिनः ॥१४७॥

अर्थ-जिनके चूचुक अथात् स्तनका अग्रभाग मांससे भराहुआ हो वह सुभग होते हैं; ऊँचे नीचे और लम्बे चूचुकवाले निर्धन होते हैं; जिनके स्तनके अग्रभाग स्थूल पुष्ट और दबे हों वह राजा सुखी होते हैं ॥ १४७ ॥

सुदृशं चूचुकयुगं शस्तं श्यामं सुवर्त्तुलम् ।
अन्तर्मग्नं च दीर्घं च कृशं क्लेशाय जायते ॥ १४८ ॥

अर्थ-जिनके दोनों स्तनोंके अग्रभाग देखनेमें सुन्दर, श्यामवर्ण और गोल हों वे शुभ होते हैं, और भीतरको घुसेहुए, लम्बे, और पतले स्तन क्लेश देनेवाले होते हैं ॥ १४८ ॥

## अथ जत्रुलक्षणम् ।

विषमैर्विषमो जत्रुभिरर्थविहीनोऽस्थिसन्धिपरिणद्धैः ॥
उन्नतजत्रुर्भोगी निम्नैर्निःस्वोऽर्थवान् पीनैः ॥ १४९ ॥

अर्थ-जिनके दोनों जत्रु अर्थात् कण्ठके दोनों ओरकी हड्डीयां कमती बढ़ती हों वह भयानक होताहै, और चौंड़ी हों तो धनहीन होता है; ऊँची जत्रुवाला भोगी होता है; नीची जत्रुवाला निर्धन और पुष्ट जत्रुवाला धनी होता है ॥ १४९ ॥

## अथ स्कन्धलक्षणम् ।

वृषस्कन्धो गजस्कन्धः कदलीस्कन्ध एव च ॥
महाभागो महाधन्यः स सर्वपार्थिवोपमः ॥ १५० ॥

अर्थ-जिसके कन्धे बैलकेसे, हाथीकेसे, और केलेकेसे हों, वह बड़ा भाग्यवान् परमधन्य और सम्पूर्ण राजाओंकी उपमाको स्थान अर्थात राजतुल्य होताहै ॥ १५० ॥

**कदलीस्कन्धसदृशो गजस्कन्धसमो भवेत् ॥**
**राजानं तं विजानीयात् सामुद्रवचनं यथा ॥ १५१ ॥**

अर्थ—सामुद्रिक शास्त्रका बचन है कि, कदली और हाथीके समान कन्धेवाला जो पुरुष होय उसको राजा जानै ॥ १५१ ॥

**अबद्धावनतौ स्कन्धावदीर्घावकृशौ शुभौ ॥**
**वक्रौ स्थूलौ च रोमाढ्यौ प्रैष्यवैधव्यसूचकौ॥१५२॥**

अर्थ—जिस स्त्रीके कन्धे अबद्ध हों, नमे हुए न हों, बहुत बड़े न हों, दुर्बल न हों, टेढे हों, मोटे हों और रोमाञ्चयुक्त हों वह स्त्री दासी और विधवा होती है ॥ १५२ ॥

**निगूढसन्धी स्रस्ताग्रौ शुभावंसौ सुसंहतौ ॥**
**वैधव्यदौ समुच्चाग्रौ निर्मांसावतिदुःखदौ ॥ १५३ ॥**

अर्थ—जिनके जोड़ मांसमें छुपे हों, अग्रभागमें ढीले हों, खूब मिलेहुए हों, वे कन्धे शुभ होते हैं, और जिनका अग्रभाग ऊँचा हो वह स्त्रीको विधवा करते हैं. और दुबले कन्धे दुःखदायक होते हैं ॥ १५३ ॥

**निर्मांसौ रोमचितौ भुग्नावल्पौ च निर्द्धनस्यांसौ ॥**
**विपुलावव्युच्छिन्नौ सुश्लिष्टौ सौख्यवीर्यवताम् ॥ १५४ ॥**

अर्थ—मांसहीन, रोमोंसे व्याप्त, टेढे और छोटे कन्धेवाले पुरुष निर्धन होते हैं; और बड़े, समान, गोल, और गंठेहुए कन्धेवाले पुरुष सुखी तथा बलवान् होते हैं ॥ १५४ ॥

## अथ कक्षालक्षणम् ।

**अस्वेदनपीनोन्नतसुगन्धिसमरोमसंकुलाः कक्षाः ॥**
**विज्ञातव्या धनिनामतोऽन्यथार्थैर्विहीनानाम् ॥ १५५ ॥**

अर्थ—पसीनेरहित, पुष्ट, ऊँची, सुगन्धियुक्त, और समान बालोंसे

भरीहुई बगलें धनियोंकी होतीं हैं और पसीनेयुक्त, दुर्बल गहरी, दुर्गन्धियुक्त, तथा छोटे बड़े रोमवाली बगलैं निर्धनोंकी होती हैं ॥ १५५ ॥

**कक्षाऽश्वत्थदला श्रेष्ठा सुगन्धिन्यूर्ध्वरोमिका॥**
**अन्यथा ह्यर्थहीनानां दरिद्रस्य च कारणम्॥१५६॥**

अर्थ—पीपलके पत्तेके आकारवाली, सुगन्धियुक्त और ऊपरको रोमयुक्त ऐसी बगल श्रेष्ठा होती है; इससे विपरीत लक्षणोंकरके युक्त बगल जिनकी हो वे निर्धन और दरिद्री होते हैं ॥ १५६ ॥

**समकक्षाश्च भोगाढ्या निम्नकक्षा धनोज्झिताः ॥**
**नृपाश्चोन्नतकक्षाः स्युर्जिह्मा विषमकक्षकाः॥ १५७ ॥**

अर्थ—जिनकी बगल समान हो वे भोगी होते हैं; नीची बगल वाले धनहीन होते हैं; ऊँची बगलवाले राजा होते हैं और नीची ऊँची बगलवाले कुटिल होते हैं ॥ १५७ ॥

## अथ भुजलक्षणम् ।

**करिकरसदृशौ वृत्तावाजान्ववलम्बिनौ समौ पीनौ ॥**
**बाहू पृथिवीशानामधमानां रोमशौ ह्रस्वौ ॥ १५८ ॥**

अर्थ—हाथीकी सूँड़की आकारके, गोल, जानुपर्य्यन्त लम्बे, समान, और पुष्ट भुजा राजाओंकी होती हैं; और अधम पुरुषोंकी भुजायें रोमयुक्त और छोटी होती हैं ॥ १५८ ॥

**निर्मांसौ चैव भुग्नाल्पौ श्लिष्टौ च विपुलौ शुभौ ॥**
**आजानुलंबितौ बाहू वृत्तौ पीनौ नृपेश्वरे ॥ १५९ ॥**

अर्थ—मांसरहित, टेढ़े, छोटे, मिलेहुए ( चिपटे हुए ) बड़े बड़े भुज श्रेष्ठ होते हैं; जानुपर्य्यन्त लम्बे, गोल, और पुष्ट बाहु राजाके होते हैं १५९

**समांसौ चैव भुग्नाल्पौ श्लिष्टौ च विपुलौ भुजौ ॥**

आजानुलम्बितौ बाहू यस्य पीनौ नृपेश्वरः ॥ १६० ॥

अर्थ-जिसके भुज मांसयुक्त, टेढ़े, छोटे, चिपटेहुए, विपुल, जानु-पर्य्यन्त लम्बे, व पुष्ट भुज हों वह राजा होता है ॥ १६० ॥

स्यातां दोषौ सुनिर्दोषौ गूढास्थिग्रन्थिकोमलौ ॥
विशिरौ च विरोमाणौ सरलौ हरिणीदृशाम् ॥ १६१ ॥

अर्थ-सब प्रकारके दोषरहित, और मांसमें छिपी हुई हड्डियोंकी गांठें जिनमें, और कोमल नसोंरहित, रोमरहित और सीधे बाहु शुभलक्षणा स्त्रियोंके होते हैं ॥ १६१ ॥

वैधव्यं स्थूलरोमाणौ ह्रस्वौ दौर्भाग्यसूचकौ ॥
परिक्लेशाय नारीणां परिदृश्यशिरौ भुजौ ॥ १६२ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके भुजोंपे मोटे २ रोम हों वह विधवा होती है, छोटे भुज दौर्भाग्यके बतानेवाले होते हैं; जिस स्त्रीके बाहुओंमें नसें चमकती हों वह स्त्री क्लेशोंको भोगती है ॥ १६२ ॥

पाणी नृपतेः श्लक्ष्णौ निस्वेदौ मांसलौ तथाऽच्छिद्रौ ॥
अरुणावकर्मकठिनावुष्णौ दीर्घाङ्गुली स्निग्धौ १६३ ॥

अर्थ-राजाओंके भुज सुन्दर, पसीनेरहित, पुष्ट, छिद्ररहित, लाल वर्णके, विना कार्य्य करेही कठोर, गरम, बड़ी अङ्गुलीवाले, और चिकने होते हैं ॥ १६३ ॥

क्रव्यादरूपैर्हस्तैश्च वृककाकादिसन्निभैः ॥
शिरालैर्विषमैः शुष्कैर्वित्तहीना भवन्ति हि ॥ १६४ ॥

अर्थ-जिनके हाथ राक्षसोंके हाथोंके समान, वृक और काक आदिकके हस्तोंके समान, नसोंकरके युक्त, नीचे, ऊँचे और सूखे हुए होते हैं वे पुरुष निर्धन होते हैं ॥ १६४ ॥

कापेतुल्यकरा निःस्वा व्याघ्रतुल्यकरैर्बलम् ॥
चौर्याय कृष्णमांसैश्च दीर्घैर्भर्तुश्च मृत्यवे ॥ १६५ ॥

अर्थ--जिस स्त्रीके हाथ वानरकेसे हों वह निर्धन होती है, और जिसके व्याघ्रके समान हों वह बलवती होती है; जिसके हाथका मांस काला होय वह चोरी करती है और बड़े हाथ हों तो पतिको मारनेवाली होती है ॥ १६५ ॥

मणिबन्धनैर्निगूढैर्दृढैश्च सुश्लिष्टसन्धिभिर्भूपाः ॥
हीनैर्हस्तच्छेदः श्लथैः सशब्दैश्च निर्द्रव्याः ॥ १६६ ॥

अर्थ–हाथका पहुँचा यदि मांससे छिपा हुआ, मजबूत, और अच्छी, तरह गँठेहुए जोड़वाला होय तो राजा होता है; यदि प्रमाणसे कम हो तो हाथ कटते हैं; ढीले और शब्द युक्त हों तो पुरुष निर्धन होता है ॥ १६६ ॥

मणिबन्धैर्निगूढैश्च सुश्लिष्टैः शुभगन्धिभिः ॥
नृपा हीनाः करैश्छिन्नैः सशब्दैर्धनवर्जिताः ॥ १६७ ॥

अर्थ--जिसके पहुँचे मांससे ढँके हुए चिपटे हुए और सुन्दर सुगंधिवाले हों वह राजा होता है; छेदयुक्त और चटचटाशब्दयुक्त पहुँचेवाले निर्धन होते हैं ॥ १६७ ॥

निगूढमणिबन्धौ च पद्मगर्भोपमौ करौ ॥
न निम्नं नोन्नतं स्त्रीणां भवेत् करतलं शुभम् ॥
दुःखिता पापनिरता चोर्ध्वनाडी च डाकिनी ॥ १६८ ॥

अर्थ--जिस स्त्रीका पहुँचा मांससे ढँका हुआ, हाथ कमलके मध्यभागके समान, और हथेली न नीची न उँची अर्थात् एकसी हो वह स्त्री ऐश्वर्य्य भोगती है, और जिसका पहुँचा ऊर्ध्वनाड़ीयुक्त हो वह स्त्री पापिनी, डाकिनी, और दुःखिनी होती है ॥ १६८ ॥

## अथ करपृष्ठलक्षणम् ।

अवहस्तं करपृष्ठं विस्तीर्णं पीनमुन्नतं स्निग्धम् ॥
विनिगूढशिरं परितः क्षोणिपतेः फणिफणाकारम् १६९

अर्थ—अच्छा, चौंड़ा, मोटा, उँचा, चिकना, और जिसके छोर चारों ओर मांससे छिपे हुए हों ऐसा और सर्पके फनके आकारका हाथका पृष्ठ राजाओंका होता है ॥ १६९ ॥

विरोमं विशिरं शस्तं पाणिपृष्ठं समुन्नतम् ॥
वैधव्यहेतु रोमाढ्यं निर्मांसं स्नायुमत्त्यजेत् ॥१७०॥

अर्थ—रोमरहित, नसोंकरके रहित, और उँचा हाथका पृष्ठभाग श्रेष्ठ होता है; और रोमयुक्त, मांसरहित, और नसों करके युक्त हाथ स्त्रीको विधवा करता है ॥ १७० ॥

## अथ करतललक्षणम् ।

मृदुमध्योन्नतं रक्तं तलं पाण्योररन्ध्रकम् ॥
प्रशस्तं शस्तरेखाढ्यमल्परेखं शुभप्रदम् ॥ १७१ ॥

अर्थ—कोमल. बीचमें उँचा, लाल वर्ण और छिद्ररहित हाथका तलुआ (हथेली) शुभ है. शुभ रेखाओंकरके युक्त थोड़ी रेखाओंवाला करतलभी शुभकारक होता है ॥ १७१ ॥

पितृवित्तविनाशश्च निम्नात् करतलान्नराः ॥
संवृत्तैश्चैव निम्नैश्च धनिनः परिकीर्तिताः ॥
प्रोत्तानकरदातारो विषमैर्विषमा नराः ॥ १७२ ॥

अर्थ—नीची हाथकी हथेली होय तो पिताके धनका नाश होता है; गोल और नीची हथेलीवाले पुरुष धनवान् होते हैं; उँची हथली-वाले दाता होते हैं; और उँची नीची हथेलीवाले मध्यम श्रेणीके होते हैं ॥ १७२ ॥

करैः करतलैश्चैव लाक्षाभैरीश्वरस्ततः ॥
परदाररताः पीतैरूक्षैर्निःस्वा नरा मताः ॥ १७३॥

अर्थ–जिनके हाथकी हथेली, और स्तन लाखी रङ्गके हों वह राजा होता है; पीले हों तो परस्त्रीमें प्रीति करनेवाले होते हैं; और रूखे हों तो मनुष्य निर्धन होते हैं ॥ १७३ ॥

## अथ हस्तरेखानिरूपणम् ।

अधुना मीनाद्याकृतिरेखाणां लक्षणं स्फुटं वक्ष्ये ॥
वामकरे नारीणां दक्षिणकरे नराणां तु ॥ १७४ ॥

अर्थ–अब हथेलीमें मत्स्यादिकी आकृतिवाली रेखाओंके लक्षण स्पष्ट रीतिसे लिखते हैं. वे लक्षण स्त्रियोंके वाम हस्तमें और पुरुषोंके दाहिने हाथमें देखै ॥ १७४ ॥

जीवितमरणं लाभालाभं सुखदुःखमिह जगत्यखिलम् ॥
कररेखाभिः प्रायः प्राप्नोति नरोऽथवा नारी ॥ १७५ ॥

अर्थ–इस संसारमें स्त्री और पुरुष प्रायः हाथकी रेखाओंके फलके अनुसार जीवन–मरण, लाभ, हानी, तथा सुख दुःखको प्राप्त होते हैं १७५

शक्तितोमरबाणश्चेत् करमध्ये प्रदृश्यते ॥
रथचक्रध्वजाकारं स च राज्यं लभेन्नरः ॥१७६॥

अर्थ–जिसके हाथमें शक्ति, तोमर ( यह दोनों शस्त्रविशेष हैं ) बाण, रथ, चक्र, और ध्वजाके आकारकी रेखा दीखैं, वह पुरुष राज्यको प्राप्त होता है ॥ १७६ ॥

यस्य मीनसमा रेखा कर्मसिद्धिश्च जायते ॥
धनाढयश्च स विज्ञेयो बहुपुत्रो न संशयः ॥१७७॥

अर्थ–जिसके हाथमें मीन ( मछली ) के आकारकी रेखा हो वह

पुरुष धनवान् होता है; उसके कार्य्य सिद्ध होते हैं, और निःसन्देह उसके पुत्रभी अधिक होते हैं ॥ १७७ ॥

**त्रिशूलं करमध्ये तु तेन राजा प्रवर्त्तते ॥**
**यज्ञे धर्मे च दाने च देवद्विजप्रपूजने ॥ १७८ ॥**

अर्थ–यदि राजाके हाथमें त्रिशूलके आकारकी रेखा होय तौ वह यज्ञ करनेमें, धर्म्मकार्य्यमें, दान करनेमें और देवता तथा ब्राह्मणोंका पूजन करनेमें प्रवृत्त होता है ॥ १७८ ॥

**तुला ग्रामं तथा वज्रं करमध्ये च दृश्यते ॥**
**तस्य वाणिज्यसिद्धिः स्यात् पुरुषस्य न संशयः १७९**

अर्थ–जिस पुरुषके हाथमें तराजूके आकारकी रेखा, नगरकीसी चौकोन रेखा तथा वज्रके आकारकी रेखा दीखै, उस पुरुषके व्यापार करनेमें निःसन्देह कार्य्यसिद्धि होती है ॥ १७९ ॥

**चक्रशंखध्वजाकारो माषाकारश्च दृश्यते ॥**
**सर्वविद्याप्रदानेन बुद्धिमान् स भवेन्नरः ॥ १८० ॥**

अर्थ–जिस पुरुषके हाथमें चक्र शंख, ध्वजा और माष ( उड़द ) के आकारकी रेखा दीखै, वह पुरुष सम्पूर्ण विद्याओंका पढ़ानेवाला और बुद्धिमान् होता है ॥ १८० ॥

**पद्म चापादि खड्गं च अष्टकोणादि दृश्यते ॥**
**स्त्रियाश्च पुरुषस्यापि धनवान् स सुखी नरः ॥१८१॥**

अर्थ–कमल, धनुष-बाण, तलवारके आकारकी रेखा और अष्टकोण रेखा जिसके हाथमें दीखै वह स्त्री हो या पुरुष हो धनवान् होता है १८१

**अंकुशं कुण्डलं छत्रं यस्य हस्ततले भवेत् ॥**
**तस्य राज्यं महाश्रेष्ठं सामुद्रवचनं यथा ॥ १८२ ॥**

अर्थ–जिसके हाथकी हथेलीमें अंकुश, कुंडल, और छत्रके आ-

कारकी रेखा हो वह परमश्रेष्ठ राज्यको प्राप्त होताहै, ऐसा सामुद्रिक शास्त्रमें वर्णन कराहै ॥ १८२ ॥

तर्जनीमूलपर्यन्तमूर्ध्वरेखा च दृश्यते ।
राजदूतो भवेत्तस्य धर्मनाशो हि जायते ॥ १८३ ॥

अर्थ–जिसके हाथमें तर्जनी अंगुलीके मूल पर्य्यन्त ऊपरको रेखा हो वह पुरुष राजाका दूत होता है और उसका धर्म नष्ट हो जाताहै ॥ १८३ ॥

करमध्ये स्थिता रेखा पितृवंशसमुद्भवः ॥
पूर्णरेखा पितुर्वंशोर्द्धरेखापरवंशकः ॥ १८४ ॥

अर्थ–जिसके हाथमें पितृरेखा खूब दीखती हो वह पिताका औरस पुत्र होताहै; यदि पितृरेखा आधी दीखती हो तो दूसरे वंशका ( दत्तक ) पुत्र होताहै ॥ १८४ ॥

गिरिकङ्कणयोनीनां नरमुण्डघटस्य च ॥
करे वै यस्य चिह्नानि राजमंत्री भवेन्नरः ॥ १८५ ॥

अर्थ–जिसके हाथमें पहाड़, कङ्कण, योनि, नरमुण्ड, और घटके आकारकी रेखा होय वह राजाका मन्त्री होताहै ॥ १८५ ॥

अनामिकोर्ध्वरेखायां व्यवसाये धनागमः ।
सुखदुःखेन जीवेत पुत्रपौत्रगृहादिमान् ॥ १८६ ॥

अर्थ–जिस मनुष्यके हाथमें ऊर्ध्वरेखा अनामिका अंगुलीके मूल पर्य्यन्त होय उसके उद्योग करनेपर धनकी प्राप्ति होतीहै, और कभी सुखसे और कभी दुःखसे दिन व्यतीत होते हैं; पुत्र पौत्र गृह आदि उसके सब होते हैं ॥ १८६ ॥

सूर्यचन्द्रलतानेत्रअष्टकोणत्रिकोणकम् ॥
मन्दिराणि गजेन्द्राणां चिह्नं स्यात् स सुखी नरः १८७॥

अर्थ-जिस मनुष्यके हाथमें सूर्य, चन्द्रमा, बेल ( लता ), नेत्र, स्थान, घोड़ा हाथीके आकारकी रेखा तथा अष्टकोण और त्रिकोण रेखा होय तौ वह पुरुष सुखी होताहै ॥ १८७ ॥

**मध्यमामूलपर्यन्तमूर्ध्वरेखा च दृश्यते ॥**
**पुत्रपौत्रादिसम्पन्नो धनवान् स सुखी नरः ॥ १८८ ॥**

अर्थ-जिस पुरुषके हाथमें ऊर्ध्व रेखा मध्यमाके मूलपर्य्यन्त हो वह पुरुष पुत्र-पौत्रादिकोंकरके युक्त और धनवान् तथा सुखी होता है ॥ १८८ ॥

**मातृरेखा करे चैव एकैकं युग्ममेव च ॥**
**एकैकमंसमादाय युग्मरेखा च दृश्यते ॥ १८९ ॥**

अर्थ--हाथमें दो रेखा होती हैं. प्रथमको पितृरेखा और दूसरीको मातृरेखा कहते हैं. तर्जनीके मूलसे लेकर अंगूठेके मूलतक आयुरेखाके नीचे जो सूधी रेखा दीखती है उसका नाम मातृरेखा है, और तर्जनी तथा अंगूठेके मूलके मध्यसे होकर नीचेतक जो रेखा है उसको पितृरेखा कहते हैं. इन रेखाओंके देखनेसे अनुभव होताहै कि मनुष्य माता पिताके शुक्रशोणितके सम अंशसे जन्म धारण करताहै ॥ १८९ ॥

**गतापाणितले या च सोर्ध्वरेखास्मृता बुधैः ॥**
**स्त्रीणां पुंसां तथा चैव राज्याय च सुखाय च ॥१९०॥**

अर्थ-हाथके पहुँचेसे हथेलीके बीचमें होकर जो रेखा ऊपरतक चली गई है उसको ऊर्ध्वरेखा कहते हैं. वह रेखा स्त्रीके हो अथवा पुरुषके हो राज्य सुख देतीहै ॥ १९० ॥

**पुत्रपौत्रादिसम्पन्ना चोर्ध्वरेखा शुभप्रदा ॥**

अर्थ-स्त्रीके ऊर्ध्वरेखा होय तौ वह पुत्र पौत्रादि सम्पत्तिको प्राप्त होती है ॥

अंकुशं कुलिशं छत्रं यस्य पाणितले भवेत् ॥ १९१ ॥
तस्यैश्वर्यं विनिर्दिष्टं अशीत्यायुर्भवेद्ध्रुवम् ॥
पुत्रं प्रसूयते नारी नरेंद्रं लभते पतिम् ॥ १९२ ॥

अर्थ--अंकुश, वज्र, और छत्रके आकारकी रेखा जिसके हाथमें हों वह ऐश्वर्य्यवान् होता है, और निःसन्देह उसकी ८० वर्षकी आयु होती है और स्त्रीके हाथमें हो तौ वह पुत्रको उत्पन्न करती है, और राजाकी स्त्री होती है ॥ १९१ ॥ १९२ ॥

बहुरेखाभिर्भवेत् क्लेशः स्वल्पाभिर्धनहीनता ॥
रेखायां वा मनःसौख्यं सामुद्रवचनं यथा ॥ १९३ ॥

अर्थ-जिसके हाथमें बहुत रेखा हों वह क्लेशोंको भोगता है, जिसके हाथमें बहुत कम रेखा हों वह निर्धन होता है, जिसके हाथमें न कमती न मोटी किन्तु यथोचित्त रेखा हों वह मनसे सुखको प्राप्त होता है; इस प्रकार सामुद्रिकशास्त्रमें वर्णन करा है ॥ १९३ ॥

रेखाभिर्बहुभिर्दुःखं स्वल्पाभिर्धनहीनता ॥
रक्ताभिः श्रियमाप्नोति कृष्णाभिः प्रेष्यतां व्रजेत् १९४॥

अर्थ-बहुत रेखाओंसे दुःख होता है; कमती रेखाओंसे धनहीनता होती है; रेखाओंमें श्यामता होय तौ दास हो कार्य्य करनेवाला होता है और रेखा लाल हों तौ धनवान् होता है ॥ १९४ ॥

धनुर्यस्य भवेत् पाणौ पङ्कजं वाऽथ तोरणम् ॥
तस्यैश्वर्यं च राज्यं च अशीत्यायुर्भवेद्ध्रुवम् १९५॥

अर्थ-जिसके हाथमें धनुषका, कमलका, और तोरण ( बन्दनवार ) का चिन्ह होय वह ऐश्वर्य्यवान् अथवा राजा होता है, और निःसन्देह उसकी अस्सी वर्षकी आयु होती है ॥ १९५ ॥

मत्स्यपुच्छप्रकीर्णेन विद्यावित्तसमन्वितः ॥
पितुः पितामहादीनां धनं स लभते नरः ॥१९६॥
पितामहस्य वा किंचिद्धनं च लभते ध्रुवम् ॥

अर्थ—जिसकी हथेलीमें मछलीकी पूँछके आकारकी रेखा हो वह विद्या और धनयुक्त होता है; वह पिताके और पितामहके धनको प्राप्त होता है, अथवा पितामहके कुछ थोड़ेसे धनको प्राप्त होता है ॥१९६॥

तर्जनीमूलगामिन्यां रेखायां छिद्रता यदि ॥
श्वाविन्मूषिकमार्जारसर्पदंष्ट्रो भविष्यति ॥१९७॥

अर्थ—तर्जनी अंगुलीके मूलमें गई हुई रेखा यदि छिद्रवाली (टूटी हुई) होय तो वह पुरुष कुत्तेसे, या मूसेसे अथवा सर्पसे काटा जाता है ॥१९७॥

कनिष्ठायाः स्थिता रेखा संख्या यावतिकाः स्मृताः ॥
तावती पुरुषाणांतु नारी भवति निश्चितम् ॥ १९८ ॥

अर्थ—कनिष्ठिका अंगुलीके नीचे जितनी रेखा दीखें उतनीही पुरुषोंके स्त्री होती हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं है ॥ १९८ ॥

एकमुद्रो भवेद्राजा द्विमुद्रो धनवान्नरः ॥
त्रिमुद्रो रोगसम्पन्नो बहुमुद्रो बहुप्रजः ॥ १९९ ॥

अर्थ—जिसके हाथमें एक मुद्रा दीखै वह राजा होता है; जिसके हाथमें दो मुद्रा हों वह धनवान् होता है; जिसके हाथमें तीन मुद्रा हों वह रोगी होता है; जिसके चार मुद्रा हों वह बहुत सन्तानवाला होता है ॥ १९९ ॥

करमध्यगता रेखा ध्रुवा ऊर्ध्वंभवेद्यदि ॥
नृपो वा नृपतुल्यो वा चिरंख्यातोऽर्थवान्भवेत् २००

अर्थ—हाथके पहुँचेसे ऊपरको गई हुई ऊर्ध्वरेखा यदि पूर्ण और

स्पष्ट होय तौ वह राजा हो, अथवा राजाके समान कोई अन्य पुरुष हो. वह चिरकालपर्य्यन्त प्रसिद्ध और धनी होताहै ॥ २०० ॥

अयवस्य कुतो विद्या मत्स्यहीने कुतो धनम् ॥
अपुच्छस्य कुतो विद्या अयवस्य कुतो धनम् ॥
ऊर्ध्वरेखाविहीनस्य कुतो राज्यं कुतो यशः ॥२०१॥

अर्थ–जिसके हाथमें यवकी रेखा न हो उसको विद्या कहाँ, जिसके हाथमें मत्स्यकी रेखा न हो उसको धन कहाँ ? जिसके हाथमें मछली-की पूँछकी रेखा न हो उसको विद्या कहाँ ? जिसके हाथमें यवकी रेखा न हो उसको धन कहाँ ? जिसके हाथमें ऊर्ध्वरेखा न हो उसको राज्य और यशकी प्राप्ति कहाँ ? ॥ २०१ ॥

यस्य पाणितले रेखा पीवरा दृश्यते यदि ॥
अविच्छिन्ना पादसौख्यं सम्पूर्णा च सुशोभनम् २०२

अर्थ–जिसके हाथकी हथेलीमें गहरी और साबित रेखा देखनेमें आवै वह किसी बड़े पदका अधिकारी होताहै, और वह रेखा पूर्ण होय तौ सुखी और सम्पत्तिमान् होताहै ॥ २०२ ॥

कनिष्ठामूलरेखाया परतश्च तथाहि वै ॥
भवन्ति रेखास्तावत्यः पुत्राः कन्याश्च निश्चिताः ॥
कन्या द्विमुखरेखायां एकस्यां च तथात्मजः ॥२०३॥

अर्थ–कनिष्ठिका अंगुलीकी मूलके नीचे जितनी रेखा हों उतनेही पुत्र और कन्याओंकी उत्पत्ति होती है. उन सब रेखाओंमें जितनी द्विमुख रेखा हों उतनी कन्या होतीहैं; और जितनी एकमुख रेखा हों उतनेही पुत्र होतेहैं ॥ २०३ ॥

कनिष्ठांगुलिमूले तु रेखा तिष्ठति या ध्रुवम् ॥
विवाहं तावज्जानीयाद्यथोक्तं दानिभाषितम् ॥ २०४ ॥

अर्थ-जिसके कनिष्ठिका अंगुलीके मूलमें जितनी पूर्ण रेखा हों उस पुरुषके उतनेही विवाह होतेहैं. इस प्रकार दानिनामक सामुद्रिक शास्त्रके आचार्य्यने कहा है ॥ २०४ ॥

मत्स्यपुच्छे शतं ज्ञेयं कुलिशे तु सहस्रकम् ॥
पद्मे लक्षेश्वरश्चेति शंखे कोटीश्वरो भवेत् ॥
मत्स्ये शतं विजानीयान्मकरे तु सहस्रकम् ॥ २०५ ॥

अर्थ-जिस पुरुषकी हथेलीमें मछलीकी पूँछका चिन्ह होय वह पुरुष शतपति होताहै; वज्रका चिन्ह होय तौ सहस्रपति, कमलका होय तौ लक्षपति, शंखका होय तौ कोटयधीश, मत्स्यका होय तौ शतपति और मकरका होय तौ सहस्रपति होताहै ॥ २०५ ॥

कनिष्ठाङ्गुलिमूले तु रेखा चोद्वाहनिर्णिका ॥
कनिष्ठाधोरेखा संख्या यावती युवती तथा ॥
तावती तेन तस्यैव नारीणां स्वप्यते नृप ॥ २०६ ॥

अर्थ-कनिष्ठा अंगुलीके नीचे जो रेखा होतीहै, वह विवाहरेखा है, इसकारण कनिष्ठाके नीचे जितनी रेखा हों उतनीही स्त्री होतीहैं. यदि स्त्रीके यह रेखा एक होय तौ वह पतिसेही प्रेम करती है, और अनेक रेखा हों तौ व्यभिचारिणी होती है ॥ २०६ ॥

अंकुशं कुण्डलं चक्रं यस्य पाणितले भवेत् ॥
चामरं पुण्डरीकं च तस्य राज्यं विनिर्दिशेत् ॥ २०७ ॥

अर्थ-अङ्कुश, कुण्डल, चक्र, चमर, और कमलका चिन्ह जिसकी हथेलीमें होय उससे कहै कि, तुझे राज्यकी प्राप्ति होयगी ॥ २०७ ॥

यस्य पाणितले रेखा दीर्घाकारद्वयं भवेत् ॥
युग्मे सुखे सुजातो च ह्ययुग्मे जारजो ध्रुवम् ॥ २०८ ॥

अर्थ-जिसके हाथमें बड़ी बड़ी दो रेखा हों उन दोनोंकाही नाम

मातृरेखा और पितृरेखा हैं. उन दोनों रेखाओंका मुख मिला हो तो पुरुष खास अपने पितासे उत्पन्न होता है, और दोनों रेखाओंका मुख खुला हो तो वह निःसंदेह जारज होता है ॥ २०८ ॥

युग्मिमीनाङ्कितो यो वै भवेत् सत्रप्रदो नरः ॥
वज्राकाराश्च धनिनां मत्स्यपुच्छनिभा बुधैः ॥२०९॥
शंखातपत्रशिबिकागजपद्मोपमा नृपे ॥
कुम्भाङ्कुशपताकाभा मृणालाभा निधीश्वरे ॥ २१०॥
दामाभाश्च गवाढयानां स्वस्तिकाभा नृपेश्वरे ॥
चक्रासितोमरधनुर्दण्डाभा नृपतेः करे ॥ २११ ॥
उलूखलाभा यज्ञाढया वेदीभाश्चाग्निहोत्रिणि ॥
वापीदेवकुलाभाश्च त्रिकोणाभाश्च धार्मिके ॥२१२॥

अर्थ–जिस पुरुषके हाथमें मछलीके जोड़ेका चिन्ह होय वह पुरुष यज्ञ करनेवाला होता है, इसी प्रकार जिसके हाथमें वज्रका चिन्ह होय वह धनवान् होता है; जिसके हाथमें मछलीकी पूँछका चिन्ह हो वह विद्वान् होता है; और जिसके हाथमें शंख, छत्र, पालकी, हाथी, या कमलका चिन्ह हो वह राजा होता है; जिसके हाथमें कलश, अकुंश, पताका, अथवा कमलकी नालका चिन्ह होय वह खजानेका मालिक होता है; और जिसके हाथमें दामका चिन्ह होय वह अनेक गौओं-वाला होता है. जिसके हाथमें स्वस्तिक आभूषणके आकारका, चिन्ह होय वह चक्रवर्त्ती राजा होता है; जिसके हाथमें चक्र, तलवार, तोमर, धनुप, अथवा दण्डका चिन्ह होय वह यज्वा होता है; जिसके हाथमें वेदीका चिन्ह होय वह अग्निहोत्री होता है; जिसके हाथमें तालाव; गङ्गा, अथवा त्रिकोणाकारका चिन्ह होय वह पुरुष धर्ममें प्रीति करनेवाला होता है ॥ २०९ ॥ २१० ॥ २११ ॥ २१२ ॥

ज्ञानरेखा च प्रथमा अंगुष्ठादनुवर्त्तते ॥
मध्यमा च करे रेखा आयूरेखा अतः परम् ॥२१३॥

अर्थ–अंगूठेकी मूलमें जो सम्पूर्ण रेखा हैं उनमें पहिली रेखा ज्ञानरेखा कहलाती है; और जो कनिष्ठा ( कनअंगुली ) के मूलसे मध्यमाके मूलपर्य्यन्त गई है वह आयुरेखा कहाती है ॥ २१३ ॥

अंगुष्ठमूलगा रेखाः पुत्राश्च सुखदायिकाः ॥
निःस्वाश्च बहुरेखाः स्युर्निर्द्रव्याश्चिबुकैः कृशैः ॥२१४॥

अर्थ–जिस पुरुषके अंगूठेकी मूलमें बहुत रेखा हों वह पुरुष पुत्रवान् और सुख भोगनेवाला होता है; जिसके हाथमें बहुतसी रेखा दीखनेमें आवें वह दरिद्री होता है, और जिसका चिबुक दुर्बल होय वह धनहीन होता है ॥ २१४ ॥

घनांगुलिश्च सधनस्तिस्रो रेखाश्च यस्य वै ॥
नृपतेः करतलगा मणिबन्धे समुत्थिताः ॥ २१५ ॥

अर्थ–जिसकी अंगूली घनी हों और पहुँचेसे उठकर तीन रेखा हथेलीको गई हों वह पुरुष राजा होता है ॥ २१५ ॥

रेखास्वधः स्थिता रेखा संख्या यावतिकाः स्मृताः ॥
तावांस्तु पुरुषाणांतु पुत्रो भवति निश्चितम् ॥२१६॥
रेखास्वधः स्थिता रेखा संख्या यावतिकाः स्मृताः ॥
तावती पुरुषाणांतु कन्या भवति निश्चितम् ॥ २१७॥

अर्थ–जिसकी कनिष्ठिकाकी मूलमें नीचेकी ओरकी रेखाके नीचे जितनी रेखा हों उस पुरुषके उतनेही पुत्र होते हैं, और जिसके उन रेखाओंके नीचे जितनी छोटी रेखा हों उतनीही उसके कन्या होती हैं ॥ २१६ ॥ २१७ ॥

करमध्यस्थिता रेखा त्रिभ्यश्चोर्ध्वं भवेद्यदि ॥

नृपो वा नृपतुल्यो वा चिरं ख्यातोऽथवा भवेत् ॥२१८॥

अर्थ—जिस पुरुषकी हथेलीमें तीनों रेखाओंसे ऊपरकी एक सूधी रेखा गई हो वह पुरुष राजा अथवा राजाके तुल्य होता है; और चिरकालपर्यान्त उसकी कीर्ति पृथ्वीतलपर रहती है. इस रेखाकोही ऊर्ध्वरेखा कहते हैं ॥ २१८ ॥

मृदु मध्योन्नतं रक्तं तलं पाण्योररन्ध्रकम् ॥
प्रशस्तं शस्तरेखाढ्यं अल्परेखं शुभप्रदम् ॥ २१९ ॥

अर्थ—जिसके हाथकी हथेली कोमल, बीचमें ऊँची, लालवर्ण और छिद्ररहित, तथा शुभरेखाओंकरके युक्त अथवा थोड़ी रेखाओंवाली होय तौ शुभकारक होती है ॥ २१९ ॥

विधवा बहुरेखेण विरेखेण दरिद्रिणी ॥
भिक्षुकी सुशिराढयेन नारी करतलेन वै ॥ २२० ॥

अर्थ—जिस स्त्रीकी हथेलीमें बहुत रेखा हों वह विधवा होती है, और बिलकुल रेखा न हों तौ दरिद्रा होती है, और जिसकी हथेलीमें बहुतसी नसें चमकती हों वह भिखारिनी होती है ॥ २२० ॥

मत्स्येन सुभगा नारी स्वस्तिकेन च सुप्रजा ॥
पद्मेन भूपतेः पत्नी जनयेत् भूपतिं सुतम् ॥ २२१ ॥

अर्थ—जिस स्त्रीके हाथमें मत्स्यका चिन्ह होय वह सौभाग्यवती होतीहै; जिसके हाथमें स्वस्तिकका चिन्ह होय वह प्रजावती होती है, और जिसके हाथमें कमलका चिन्ह होय वह दानी होती है और राजपुत्रको उत्पन्न करतीहै ॥ २२१ ॥

चक्रवर्त्तिस्त्रियाः पाणौ नन्द्यावर्तप्रदक्षिणः ॥
शंखातपत्रकमठा राजमातृत्वसूचकाः ॥ २२२ ॥

अर्थ—जिस स्त्रीके हाथमें दक्षिणावर्त्तमण्डलका चिन्ह होय वह चक्र-

वर्तीकी स्त्री होती है, और जिसके हाथमें शंख, छत्र, और कच्छपका चिन्ह होय वह स्त्री राजमाता होती है ॥ २२२ ॥

यस्याः पाणितले रेखा प्राकारो तोरणं भवेत् ॥
अपि दासकुले जाता राज्ञित्वमधिगच्छति ॥ २२३ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके हाथमें वाड़ और बन्दनवारके आकारकी रेखा होय वह स्त्री यदि दासकुलमें उत्पन्न हुई होय तौभी राजाकी रानी होती है ॥ २२३ ॥

कृषीवलस्य पत्नी स्याच्छकटेन युगेन वा ॥
चामरांकुशकोदण्डै राजपत्नी भवेद्ध्रुवम् ॥ २२४ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके हाथमें गाड़ी अथवा जुवेंका चिन्ह होय वह किसानकी स्त्री होती है, और जिसके हाथमें चमर अंकुश, और धनुषका चिन्ह होय वह निःसन्देह राजपत्नी होती है ॥ २२४ ॥

अंकुशं कुण्डलं चक्रं यस्याः पाणितले भवेत् ॥
पुत्रं प्रसूयते नारी नरेंद्रं लभते पतिम् ॥ २२५ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके हाथमें अंकुश, कुण्डल, और चक्रका चिन्ह होय वह स्त्री पुत्रवती होतीहै, और राजरानी होती है ॥ २२५ ॥

अंगुष्ठमूलान्निर्गत्य रेखा याति कनिष्ठिकाम् ॥
यदि स्यात् पतिहन्त्री सा दूरतस्तां त्यजेत् सुधीः ॥ २२६ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके हाथमें अंगूठेसे निकलकर कनअंगुलीपर्य्यन्त रेखा गई हो वह स्त्री पतिका वध करनेवाली होती है; बुद्धिमान् पुरुष उसको दूरसेही त्याग देवे ॥ २२६ ॥

अल्पायुषे लघुच्छिन्ना दीर्घच्छिन्ना महायुषे ॥
शुभं तु लक्षणं स्त्रीणां प्रोक्तं त्वशुभमन्यथा ॥ २२७ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके हाथमें अंगूठेके नीचेकी रेखा थोड़ी छिन्न भिन्न होय उसकी अल्पायु होती है, और अधिक छिन्न भिन्न होय तो दि-र्घायु होतीहै· इस रेखाके होनेसे स्त्री शुभलक्षणा होतीहै, और न होनेसे अशुभलक्षणा होती है ॥ २२७ ॥

वाजिकुंजरश्रीवृक्षयूपेषुयवतोमरैः ॥
ध्वजचामरमालाभिः शैलकुण्डलवेदिभिः ॥ २२८ ॥
शंखातपत्रपद्मैश्च मत्स्यस्वस्तिकसद्रथैः ॥
लक्षणैरंकुशाद्यैश्च स्त्रियः स्यू राजवल्लभाः ॥ २२९ ॥

अर्थ–जिन स्त्रियोंके हाथमें घोड़ा, हाथी, विल्व, स्तम्भ, बांसा, यव और तोमरका चिन्ह होय अथवा ध्वजा, चमर, और मालाका चिन्ह होय, अथवा पर्वत, कुण्डल, और वेदिका चिन्ह होय अथवा शंख, छत्र, कमलका चिन्ह होय अथवा मत्स्य, स्वस्तिक और रथका चिन्ह होय, अथवा अंकुशादि शुभ चिन्ह होयँ तो उन स्त्रियोंके पति राजा होतेहैं ॥ २२८ ॥ २२९ ॥

त्रिशूलासिगदाशक्तिदुंदुभ्याकृतिरेखया ॥
नितम्बिनी कीर्त्तिमती करेण पृथिवीतले ॥ २३० ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके हाथकी हथेलीमें त्रिशूल, तलवार, गदा, शक्ति, और दुन्दुभिके आकारकी रेखा होय उस स्त्रीकी पृथ्वीतलमें कीर्ति होती है ॥ २३० ॥

अंकुशं कुण्डलं यानं यस्याः पाणितले भवेत् ॥
दीर्घायुषं पतिं प्राप्य पुत्रवृद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ २३१ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके हाथमें अंकुश कुण्डल, और गाड़ीका चिन्ह होय वह स्त्री दीर्घायु पतिको प्राप्त होतीहै और निःसन्देह उसके पु-त्रोंकी वृद्धि होतीहै ॥ २३१ ॥

तुलामानाकृती रेखा वणिक्पत्नी त्वहेतुका ॥
गजवाजिवृषाकारा करे वामे मृगीदृशाम् ॥ २३२ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके हाथमें तराजूकी दण्डीके आकारकी रेखा होय वह वैश्यकी स्त्री होती है; अथवा हाथी, घोड़ा, और बैलके आकारका चिन्ह होय तौभी वह वैश्यकी स्त्री होती है ॥ २३२ ॥

कङ्कजम्बूकमण्डूकवृकवृश्चि . . . . .
रासभोष्ट्रबिडालाः स्युः करस्था दुःखदा स्त्रियाः ॥२३३॥
पाणौ प्रदक्षिणावर्त्तो धर्म्मो वामो न शोभनः ॥२३४॥

अर्थ-जिस स्त्रीके हाथमें कङ्क, गीदड़, मैंडक, वृक ( भेडिया ), बिच्छू, सर्प, गर्दभ, ऊँट, तथा बिडालके आकारका चिन्ह होय उस स्त्रीको पतिका दुःख होता है; जिसके हाथमें दक्षिणावर्त्त रेखा हो वह स्त्री धर्म्मपरायण और जिसके वामावर्त्त रेखा हो वह हतभाग्या होतीहै ॥ २३३ ॥ २३४ ॥

रक्ताऽव्यक्ता गभीरा च स्निग्धा पूर्णा च वर्त्तुला ॥
कररेखाऽङ्गनायाः स्याच्छुभा भाग्यानुसारतः ॥२३५॥

अर्थ-जिस स्त्रीके हाथकी रेखा लालवर्ण, स्पष्ट, गहरी, चिकनी, पूर्ण, और गोल होय उस स्त्रीको भाग्यानुसार शुभ फलकी प्राप्ति होती है ॥ २३५ ॥

रेखा प्रासादवज्राभा सुते तीर्थकरं सुतम् ॥
कृषीवलस्य पत्नी स्याच्छकटेन मृगेण वा ॥ २३६ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके हाथमें स्थान और वज्रके आकारकी रेखा हो वह शास्त्रकार पुत्रको उत्पन्न करती है; और गाड़ी, अथवा मृगका चिन्ह होय तौ किसानकी स्त्री होतीहै ॥ २३६ ॥

मत्स्येन सुभगा नारी स्वस्तिकेन वसुप्रदा ॥
पद्मेन भूपतेः पत्नी जनयेद्भूपतिं सुतम् ॥ २३७ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके हाथमें मत्स्यका चिन्ह होय वह सौभाग्यवती होती है; स्वस्तिकका चिन्ह होय तौ धनवती होती है, और कमलका चिन्ह होय तौ राजाकी स्त्री होती है, और राजपुत्रको उत्पन्न करती है ॥ २३७ ॥

वृद्धा मूले च या रेखा भ्रातृभगिनीप्रदायिकाः ॥
कृष्णा सूक्ष्मा क्रमेणैव हीना च्छिद्रप्रदायिकाः २३८

अर्थ–अंगूठेके मूलमें जितनी रेखा हों उस पुरुषके उतनेही भ्राता और बहिन होती हैं; यदि यह रेखा क्रमसे कृष्णवर्ण और सूक्ष्म हों तौ भ्राता और बहिनोंको मरण तथा कलङ्क होता है ॥ २३८ ॥

यस्याः करतले रक्ता दीर्घरेखा च दृश्यते ॥
नृपतिं च पतिं प्राप्य बहुपुत्रवती भवेत् ॥ २३९ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके हाथमें लालवर्णकी दीर्घ रेखा होय उस स्त्रीका पति राजा होता है, और उसके पुत्रोंकी संख्या बहुत होती है ॥ २३९ ॥

कनिष्ठांगुलिमध्यस्था रेखा चेदवतिष्ठति ॥
ऊर्ध्वाच्छिन्ना भवेद्यस्य विंशत्यायुर्विनिर्दिशेत् ॥२४०॥

अर्थ–जिसके हाथकी कनिष्ठिका अंगुलीके मध्यदेशमें रेखा विद्यमान होय और वह रेखा यदि ऊपरकी ओरको छिन्न होय तौ उसकी बीस वर्षकी आयू होती है ॥ २४० ॥

पाणिपादतले रेखा ताम्रवर्णा नखानि च ॥
जीववत्सा चिरंजीविपुत्रपौत्रसमन्विता ॥ २४१ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके हाथके और पैरके तलुवोंकी रेखा लालवर्णकी हो और नखभी लाल हों वह चिरकालपर्य्यन्त जीती है, और जीते हुए पुत्र पौत्र आदिका सुख भोगती है ॥ २४१ ॥

रेखान्वितां त्वविधवां कुर्यात् सम्भोगिनीं स्त्रियम् ॥
रेखा या मणिबन्धोत्था गता मध्यांगुलीकरे ॥२४२॥
गता पाणितले या च योर्ध्वपादतले स्थिता ॥
स्त्रीणां पुंसां तथा वा स्याद्राज्याय च सुखाय च ॥
पुत्रपौत्रादिसम्पन्ना चोर्ध्वरेखा शुभप्रदा ॥ २४३ ॥

अर्थ-जो रेखा हाथके पहुँचेसे उठकर हाथकी हथेलीके मध्यमें होकर मध्यमा अंगुलीके मूलपर्य्यन्त होय उसको सामुद्रिक शास्त्रज्ञ पण्डित ऊर्ध्वरेखा कहते हैं. यह रेखा चरणके तलुवेमेंभी होती है. जिस स्त्रीकी हथेली अथवा पैरके तलुवेमें यह रेखा हो वह स्त्री उमरभर पतिवती और सौभाग्यवती होती है, तथा पुत्रपुत्रौदिसम्पन्न होती है. स्त्री हो या पुरुष हो जिसकी हथेलीमें यह रेखा हो वह राज्यको पाता है; सुख भोगता है; और उसके पुत्रपौत्रादिसे वंशकी वृद्धि होती है. वह सब प्रकारसेही कल्याणको प्राप्त होता है ॥ २४२ ॥ २४३ ॥

यस्याः करतले पद्मं पूर्णं कुम्भं तथैव च ॥
राजपत्नीत्वमाप्नोति पुत्रः पौत्रः प्रवर्द्धते ॥ २४४ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके हाथकी हथेलीमें कमल और पूर्ण कलशका चिन्ह हो वह स्त्री राजपत्नी होती है, और उसके पुत्र तथा पौत्रोंकी वृद्धि होती है ॥ २४४ ॥

मध्यमातर्जनीमूले यवो यस्य च दृश्यते ॥
धनवान् सुखभोगी स्यात् पुत्रदारगृहादिमान् ॥२४५॥

अर्थ-जिस पुरुषकी मध्यमा और तर्जनी अंगुलीके मूलमें

यव ( जौ ) का चिन्ह होय वह पुरुष धनवान्, सुख भोगनेवाला और पुत्र, स्त्री, तथा गृहआदिके सुखको भोगनेवाला होता है ॥ २४५ ॥

वृद्धा मूलस्य मध्ये चेन्मिलिता विभवोऽवशः ॥
पृथग्रेखा भवेज्ज्ञेयं निश्चितं लक्षणंत्विदम् ॥ २४६ ॥

अर्थ-जिसके हाथके अंगूठेके मूलमें बहुतसी रेखा एक स्थानमें दीखें वह पुरुष बहुतकालपर्य्यन्त ऐश्वर्य्य भोगता है, और वह रेखा-समूह यदि अलग अलग होय तो वह पुरुष शुभलक्षण होता है ॥२४६॥

अंगुष्ठस्योर्ध्वभागस्थो यवो यस्य विराजते ॥
उत्पन्नावधिभोगी स्यात् स नरः सुखमेधते ॥ २४७ ॥

अर्थ-जिस पुरुषके अँगूठेके ऊपरके भागमें यवका चिन्ह होय वह पुरुष जीवनपर्य्यन्त अनेक प्रकारके भोगोंको भोगता है, और सुख-पूर्वक रहता है ॥ २४७ ॥

वृद्धे मूले च रेखे द्वे मातुर्भक्तो विशेषतः ॥
बहुभोगैश्च युक्तः स्याद्यस्य वज्रांकितं परम् ॥२४८॥

अर्थ-जिस पुरुषके हाथके अंगूठेके मूलमें दो रेखा हों वह पुरुष माताका अत्यन्त भक्त होता है, और जिसके हाथमें वज्रका चिन्ह हो वह अनेक प्रकारके भोगोंको भोगता है ॥ २४८ ॥

अंगुष्ठोदरमध्ये तु रेखा यस्य यवाकृतिः ॥
यशस्वी च भवेद्विद्वान् धनी दाता च नित्यशः २४९॥

अर्थ-जिस पुरुषके हाथके अंगूठेके मध्यभागमें यवके आकारकी रेखा हो वह पुरुष यशवान्, विद्वान्, धनवान् और नित्य दान करने-वाला होता है ॥ २४९ ॥

अंगुष्ठोदरमध्ये तु यवो यस्य विराजते ॥

विभवं भोजनं तस्य स नरः सुखमेधते ॥
सर्वविद्याप्रशस्तश्च स भवेन्नात्र संशयः ॥ २५० ॥

अर्थ-जिस पुरुषके हाथके अंगूठेके मध्यभागमें यवके आकारकी रेखा हो वह ऐश्वर्यवान् और श्रेष्ठ भोजन तथा सुखको प्राप्त होताहै; तथा सम्पूर्ण विद्याओंमें निःसन्देह निपुण होताहै ॥ २५० ॥

अंगुष्ठोदरमध्ये तु कुण्डली यस्य दृश्यते ॥
भोज्यमुत्पाद्यते तस्य प्रचुरं च सुखं भवेत् ॥२५१॥

अर्थ-जिस पुरुषके हाथके अंगूठेके पेटकी ओर मध्यभागमें सर्पका चिन्ह होय वह पुरुष अनेक प्रकारके भोगोंको भोगताहै, और अत्यन्त सुखी रहताहै ॥ २५१ ॥

अंगुष्ठपर्वमध्ये तु यवो यस्य विराजते ॥
पररेखा भवेद्यस्य स नरः सुखमेधते ॥ २५२ ॥

अर्थ-जिस पुरुषके हाथके अँगूठेके पर्वके मध्यमें यवके आकारकी रेखा हो, और उसके साथ यदि दूसरी रेखा मिली हुई होय तो वह पुरुष सुखी होता है ॥ २५२ ॥

अंगुष्ठस्याप्यूर्ध्वरेखा वर्त्तते नृपतेः शुभा ॥
सेनापतिर्धनेशश्च मध्यमायुर्नरो भवेत् ॥ २५३ ॥

अर्थ-जिस पुरुषके हाथके अँगूठेके ऊपर शुभलक्षणयुक्त ऊर्ध्वरेखा होय वह पुरुष राजा, सेनापति, अथवा अत्यन्त ऐश्वर्यवान् होताहै; और उसकी आयु मध्यम होती है ॥ २५३ ॥

कनिष्ठामूलसंयुक्ता त्रिरेखा यस्य दृश्यते ॥
एकं युग्मं च त्रितयं चतुर्थं बाणसम्मितम् ॥
युग्मं वापि पृथग् वापि विपुलं भोगदायकः ॥२५४॥

अर्थ-जिस पुरुषकी हथेलीकी तीनों रेखा कनिष्ठिकाके मूलमें जाकर मिली हों वह सुखी तथा भोगी होताहै; और यदि एक, दो, तीन, चार, अथवा पाँच रेखा हों तो वह परमभोगदायक हो ॥ २५४ ॥

तर्जनीमूलपर्यन्तमूर्ध्वरेखा च दृश्यते ॥
राजदूतो भवेत्तस्य धर्म्मनाशो हि जायते ॥ २५५ ॥

अर्थ-जिस पुरुषके हाथमें ऊर्ध्वरेखा तर्जनी अंगुलीके मूलपर्य्यन्त गई हो वह राजदूत होताहै और धर्मनाश होताहै ॥ २५५ ॥

दीक्षाणां च यथा धर्मं पदवीं सुखमेव च ॥
विद्यां मानापमानं च अमूलामूलसंस्थिता ॥२५६॥

अर्थ-जिस पुरुषकी कनिष्ठिका अंगुलीके मूलमें रेखाका चिन्ह होय उस पुरुषकी दीक्षा, धर्म, पदवी, सुख, विद्या, मान और अपमान आदि सर्व वृद्धिको प्राप्त होते हैं ॥ २५६ ॥

मध्यमामूलपर्यन्तमूर्ध्वरेखा च दृश्यते ॥
पुत्रपौत्रादिसम्पन्नो धनवान्स सुखी नरः ॥ २५७ ॥

अर्थ-जिस पुरुषके हाथकी ऊर्ध्वरेखा मध्यमाके मूलपर्य्यन्त पहुँची हुई हो वह पुरुष पुत्रपौत्रादिसम्पन्न और धनवान् तथा सुखी होताहै ॥ २५७ ॥

अनामिकोर्ध्वरेखायां व्यवसाये धनागमः ॥
सुखदुःखैश्च जीवेत पुत्रपौत्रगृहादिमान् ॥ २५८ ॥

अर्थ-जिस पुरुषके हाथकी ऊर्ध्वरेखा अनामिकाके मूलपर्य्यन्त हो, उसको उद्योग करनेपर धनकी प्राप्ति होती है; पुत्र, पौत्र, और गृह आदिकरके युक्त होताहै; कभी सुखसे और कभी दुःखसे समयको व्यतीत करताहै ॥ २५८ ॥

अंगुलीनां पृथग्रेखात्रितयं मन्यते पृथक् ॥

रेखाद्वादशकं सौख्यं धनधान्यप्रदायकम् ॥ २५९ ॥

अर्थ-चारों अंगुलियोंकी तीन तीन पर्व रेखा यदि अलग अलग दीखती हों तौ वह पुरुष धनधान्यकरके युक्त होता है और निःसन्देह सुख भोगता है ॥ २५९ ॥

अंगुष्ठोदरमध्ये तु यवो यस्य विराजितः ॥
उन्नतं शोभनं तस्य शतं जीवति मानवः ॥ २६० ॥

अर्थ-जिस पुरुषके हाथके अंगूठेके पेटकी ओर मध्यभागमें यवका चिन्ह हो उस पुरुषकी अवस्था गौरव और शोभाके साथ व्यतीत होती है, और सौ वर्षकी परमायु होती है ॥ २६० ॥

अंगुलीनां पृथग्रेखागणने चेत्त्रयोदश ॥
महादुःखं महाक्लेशं सामुद्रवचनं यथा ॥ २६१ ॥

अर्थ-जिस पुरुषकी कनिष्ठिकादि चारों अंगुलियोंकी पर्वरेखा अलग अलग गिननेसे तेरह १३ हों उस पुरुषको महाक्लेश और परम दुःख होता है. यह सामुद्रिकशास्त्रके जाननेवाले आचार्य्योंका मत है ॥ २६१ ॥

दीर्घायुः सुभगश्चैव सधनो विरलांगुलिः ॥
घनांगुलिश्च अधनस्तिस्रो रेखाश्च यस्य वै ॥२६२॥

अर्थ-जिस पुरुषकी अंगुली छीदी हों वह पुरुष धनवान् दीर्घायु और सौभाग्यवान् होता है, और जिसकी अंगुली घनी और तीन रेखाओंकरके युक्त हों वह निर्धन होता है ॥ २६२ ॥

अंगुष्ठमूलगा रेखा पुत्राश्च सुखदायकाः ॥
ऊनविंशे भवेन्मान्यो गुणज्ञो लोकपूजितः ॥
तपस्वी विंशतौ ज्ञेयो महात्मा एकविंशतौ ॥२६३॥

अर्थ-जिस पुरुषके हाथकी ऊर्ध्वरेखा अंगूठेके मूलपर्य्यन्त हो उसके सुखदायक पुत्र होते हैं; जिसकी अंगुलियोंकी पर्व रेखा उन्नीस १९ हों वह मान्य होता है; गुणज्ञ होता है; और जगत्में उसका सत्कार होता है; जिसकी अंगुलियोंकी पर्वरेखा बीस हों वह तपस्वी होता है, और जिसके हाथकी अंगुलियोंकी पर्वरेखा इक्कीस हों वह महात्मा होता है ॥ २६३ ॥

रेखापंचदशे चौरः षोडशे द्यूतवंचकः ॥
पापी सप्तदशे ज्ञेयो धर्मात्माऽष्टादशे भवेत् ॥ २६४ ॥

अर्थ-जिसके हाथकी अंगुलियोंमें पर्व रेखा पन्द्रह १५ हों वह चोर होता है; जिसके सोलह हों वह द्यूतके द्वारा जगत्को ठगानेवाला होता है; सत्रह १७ हों तौ पापी होता है, और अठारह १८ हों तौ धर्म्मात्मा होता है ॥ २६४ ॥

ताम्रैर्भूपा धनाढ्याश्च अंगुष्ठैः सयवैस्तथा ॥
अंगुष्ठमूलजैः पुत्री स्याद्दीर्घांगुलिपर्वकः ॥ २६५ ॥

अर्थ-जिस पुरुषके हाथका अंगूठा लालवर्ण हो और उसमें यवका चिन्ह होय तौ वह अतिऐश्वर्य्यवान् राजा होता है; जिसकी अंगुलियोंके पर्व बड़े हों वह निःसन्देह पुत्रवान् होता है ॥ २६५ ॥

सर्वासुचक्रे परिपूरितांगुली ॥
महाबलप्राप्तिवरेण्यलक्षणम् ॥ २६६ ॥

अर्थ-जिस पुरुषकी अंगुलियोंमें चक्राकार रेखाओंका समूह हो वह पुरुष महाबली और श्रेष्ठलक्षणयुक्त होता है ॥ २६६ ॥

मध्यमायां यदि यवा दृश्यन्तेत्यन्तशोभनाः ॥
तदान्यसंचितं वित्तं प्राप्नोत्यंगुष्ठगे यवे ॥ २६७ ॥

अर्थ--जिस पुरुषके हाथकी मध्यमा अंगुलीमें अथवा अंगूठेमें अत्यन्त शोभायमान यवके आकारकी रेखा हों वह पुरुष निःसन्देह अन्यके इकठे करेहुए धनको प्राप्त होता है ॥ २६७ ॥

कनिष्ठायां भवेच्चक्रं वाणिज्येन धनं लभेत् ॥
तेनैव विपरीते तु व्ययो भवति निश्चितम् ॥ २६८ ॥

अर्थ--जिन पुरुषोंके हाथकी कनिष्ठिका अंगुलीमें चक्रके आकारका चिन्ह हो वे व्यापारसे धन प्राप्त करते हैं; जिसके यह चिन्ह नहीं होय उसको प्राप्ति कम और खर्च अधिक होता है ॥ २६८ ॥

मध्यमायां स्थिते चक्रे देवद्वारा धनं लभेत् ॥
तेनैव विपरीतं तु व्ययो भवति निश्चितम् ॥ २६९ ॥

अर्थ-जिसके हाथकी मध्यमा अंगुलीमें चक्रके आकारका चिन्ह हो वह देवताके द्वारा धन प्राप्त करता है, और जिसके यह चिन्ह न होय अन्य प्रकारका चिन्ह होय वह निर्धन होता है ॥ २६९ ॥

यस्याथ चक्रमंगुष्ठे यवः पद्मश्च दृश्यते ॥
तदा पितामहादीनामर्जितं धनमाप्नुयात् ॥ २७० ॥

अर्थ-जिस पुरुषके हाथके अंगूठेमें चक्रका, यवका, अथवा कमलका चिन्ह हो वह पितामह आदिके धनको प्राप्त होता है ॥ २७० ॥

अनामिकायां चक्रे तु सर्वद्वारा धनं लभेत् ॥
तेनैव विपरीते तु व्ययो भवति निश्चितम् ॥ २७१ ॥

अर्थ-जिस पुरुषके हाथकी अनामिका अंगुलीमें चक्रके आकारका चिन्ह हो वह सर्वथा धनकी प्राप्ति करता है. यह चिन्ह नहीं होय तो निःसन्देह निर्धन होता है ॥ २७१ ॥

पंचभिः सव्यकरगैर्नृपोक्षैः पूरितांगुलिभिः ॥

नृपाधिकारमाप्नोति बहुलाभकरः पुमान् ॥ २७२ ॥

अर्थ—जिस पुरुषके बायें हाथकी पाँचों अंगुलियोंमें पाँच चक्र चिन्ह हों वह राजा होता है और दो चक्र हों तो निःसन्देह उसको अधिक लाभ होकर राजाधिकार प्राप्त होता है ॥ २७२ ॥

अंगुष्ठमूलाद्यदि वै तु रेखा
स्थूला तथा चक्रकृता च नारी ॥
अवारिता षण्डप्रचण्डता च ॥
परान्विता शून्यहृदा च खण्डिता ॥ २७३ ॥

अर्थ—जिस स्त्रीके हाथके अंगूठेसे मध्य हथेलीपर्य्यन्त एक बड़ी और स्पष्टचक्राकार रेखा हो वह स्त्री कुलटा, दुष्टचरित्रा, दयादि गुण-रहित, परपुरुषासक्त, नपुंसकके समान प्रचण्ड और स्वाधीन होती है ॥ २७३ ॥

समस्तांगुलिकानांतु कोष्ठरेखा भवेद्यदि ॥
तदा स्वर्णांगुलीं दिव्यां चिरं स लभते ध्रुवम् ॥२७४॥

अर्थ—जिस पुरुषके हाथकी सम्पूर्ण अंगुलियोंमें प्रकोष्ठरेखाका चिन्ह होय वह पुरुष निःसन्देह चिरकालपर्य्यन्त अंगुलियोंमें सुवर्णकी अंगूठी धारण करता है ॥ २७४ ॥

अंगुष्ठे कुलिशं चिह्नं यस्य पाणितले भवेत् ॥
तोरणं पुण्डरीकं च राज्यं तस्य भविष्यति ॥ २७५ ॥

अर्थ—जिस पुरुषके हाथके अंगूठेमें वज्रका चिन्ह और हथेलीमें तोरण ( बन्दनवार ) और कमलका चिन्ह होय उस पुरुषको राज्यकी प्राप्ति होती है ॥ २७५ ॥

अनामिका भवेच्छिन्ना सा भवेत् कलहप्रिया ॥
मध्यमा च भवेच्छिन्ना सा नारी कुटिला स्मृता॥२७६॥

**तर्जनी च भवेच्छिन्ना विधवा सा प्रकीर्तिता ॥**
**कनिष्ठा च भवेच्छिन्ना सा नारी दुःखभागिनी ॥२७७॥**

अर्थ-जिस स्त्रीकी अनामिका अंगुलीकी रेखाओंका समूह छिन्न होय वह अतिकलहप्रिय होती है, और मध्यमाकी रेखाओंका समूह छिन्न होय तो वह स्त्री कुटील होती है, और तर्जनी अंगुलीकी रेखाओंका समूह छिन्न होय तो वह विधवा होती है, और यदि कनिष्ठिका अंगुलीका रेखासमूह छिन्न होय तो वह स्त्री दुःख भोगनेवाली होती है ॥ २७६ ॥ २७७ ॥

**मत्स्येनैकेन चैश्वर्यं सहस्रं लाभः सम्पदाम् ॥**
**पद्मं शंखं विजानीयाद्व्यजनं चक्रमेव च ॥ २७८ ॥**

अर्थ-जिसकी हथेलीमें एक मत्स्यका चिन्ह होय वह ऐश्वर्य्यवान् होताहै, और जिसके हाथमें चक्र, व्यजन, कमल, और शंखका चिन्ह हो वह निःसन्देह सहस्रों प्रकारकी संपत्तियोंको भोगता है ॥ २७८ ॥

**पद्मे कोटिर्भवेच्छत्रे शंखे कोटिशतानि च ॥**
**लक्षाधिपश्च व्यजने चक्रे राजा न संशयः ॥ २७९ ॥**

अर्थ-जिसकी हथेलीमें छत्रका अथवा कमलका चिन्ह हो वह करोड़पति होता है; जिसके शंखका चिन्ह हो वह सौ करोड़पति होता है; जिसके व्यजनका चिन्ह हो वह लक्षाधीश होताहै, और जिसके चक्रका चिन्ह हो वह निःसन्देह राजा होता है ॥ २७९ ॥

## अथ परमायुरेखानिरूपणम् ।

**अनामिकापूर्वमूले कनिष्ठादिक्रमेण तत् ॥**
**आयुष्यं दशवर्षाणि सामुद्रवचनं यथा ॥ २८० ॥**

अर्थ-सामुद्रिक शास्त्रमें इस प्रकार वर्णन करा है कि, जिसके हाथ-

की कनिष्ठिकासे अनामिकाकी मूलके पूर्वभागपर्य्यन्त रेखा हो उसकी दशवर्षमात्रकी आयु होती है ॥ २८० ॥

अंगुष्ठस्याप्यूर्ध्वरेखा वर्त्तते नृपतेः शुभा ॥
सेनापतिर्धनेशश्च मध्यमायुर्नरो भवेत् ॥ २८१ ॥

अर्थ-जिसके हाथके अँगूठेके ऊपरके भागमें शुभ लक्षण उर्ध्वरेखा हो वह राजा अथवा सेनापति या धनेश होता है, और उसकी मध्यमायु होती है ॥ २८१ ॥

येषां पाण्यूर्ध्वरेखा स्यात् कनिष्ठामूलसंस्थिता ॥
ते नराः परदेशेषु शतमायुर्लभन्ति वै ॥ २८२ ॥

अर्थ-जिन प्राणियोंके हाथकी ऊर्ध्व रेखा कनिष्ठिका अंगुलीके मूलके पर्य्यन्त हो वह मनुष्य परदेशमें रहते हैं, और उनकी सौ वर्षकी परमायु होती है ॥ २८२ ॥

आयुष्मती भवेद्रेखा तर्जनीमूलसंस्थिता ॥
शतवर्षं भवेदायुः सुखमृत्युर्न संशयः ॥ २८३ ॥

अर्थ-जिसकी हथेलीमें कनिष्ठिकाके मूलसे तर्जनीके मूलपर्य्यन्त रेखा हो उसकी सौ वर्षकी परमायु होती है, और निःसन्देह उसका सुखमेंही मरण होता है ॥ २८३ ॥

मध्यमामूलपर्यन्तमायुरेखा च दृश्यते ॥
चतुर्दशचतुर्विंशत्यायुर्बलविनाशनम् ॥ २८४ ॥

अर्थ-जिसके हाथमें आयुरेखा कनिष्ठिकाके मूलसे मध्यमा अंगुलीके मूलपर्य्यन्त हो उसकी अड़तीस ३८ वर्षकी परमायु होती है और बल नष्ट होजाता है ॥ २८४ ॥

आयुर्बलं भवेत् रेखाऽनामिकामूलसंस्थिता ॥
त्रिदशं वा त्रिषष्टिं वा आयुर्बलविनाशनम् ॥ २८५ ॥

अर्थ—यदि आयुरेखा कनिष्ठिकाके मूलसे अनामिकाके मूलपर्य्यन्त होय तौ तेरह १३ अथवा तिरसठ ६३ वर्षका परमायु होता है, और बल नष्ट हो जाता है ॥ २८५ ॥

**आयुर्हीनं यथा स्वल्पं बहुदीर्घं च दृश्यते ॥**
**ते नराः सुखदुःखैश्च चाल्पमृत्युर्न संशयः ॥२८६॥**

अर्थ—हाथमें जो छोटिसी आयुरेखा दीखै तौ अल्पकालमेंही मरण होजाय, और यदि आयुरेखा बहुत बड़ी होय तौ प्राणी सुख और दुःखोंको भोगकर थोड़ेही कालमें कालके गालमें पहुँच जाते हैं ॥ २८६ ॥

**कनिष्ठामूलरेखा तु कुर्याच्चैव शतायुषम् ॥**
**अनामिका मध्यमाभ्यामन्तरे संयुता सती ॥ २८७ ॥**

अर्थ—यदि आयुरेखा कनिष्ठिका अंगुलीके मूलसे उठकर अनामिका और मध्यमाके बीचमें जाकर मिलगई होय तौ उस प्राणीकी सौ वर्षकी परमायु होती है ॥ २८७ ॥

**ऊना ऊनायुषं कुर्याद्रेखा चांगुष्ठमूलगा ॥**
**बृहत्यः पुत्रास्ताः क्षीणाः प्रमदाः परिकीर्त्तिताः २८८॥**

अर्थ—अंगूठेके मूलमें जो रेखा है वह छोटी होय तौ उस पुरुषकी आयु कम होती है; यदि बड़ी होय तौ उस पुरुषके पुत्रवृद्धि होय, और वे रेखा सूक्ष्म होयँ तौ बहुतसी कन्या उत्पन्न हों ॥ २८८ ॥

**कनिष्ठां हि समाश्रित्य मध्यमायामुपागता ॥**
**षष्टिवर्षायुषं कुर्यादायुरेखा न संशयः ॥ २८९ ॥**

अर्थ—जिस पुरुषके हाथमें आयुरेखा कनिष्ठिका अंगुलीसे उठकर मध्यमाके मूलपर्य्यन्त गई होय उस पुरुषकी निःसन्देह साठ ६० वर्षकी आयु होती है ॥ २८९ ॥

**कनिष्ठांगुलिदेशात्तु रेखा गच्छति तर्जनीम् ॥**

**अविच्छिन्ना भवेद्यस्य शतमायुर्विनिर्दिशेत् ॥ २९० ॥**

अर्थ–जिसके हाथमें आयुरेखा कनिष्ठिका अंगुलीके मूलसे तर्जनीके मूलपर्यन्त गई हो और कहीं छिन्न नहीं हुई होय तौ उस पुरुषकी सौ १०० वर्षकी आयु होती है ॥ २९० ॥

**कनिष्ठाङ्गुलिमूलात्तु रेखा गच्छति मध्यमाम् ॥**
**अविच्छिन्ना भवेद्यस्याशीतिस्तस्य विनिर्दिशेत् ॥ २९१ ॥**

अर्थ–जिसके हाथमें आयुरेखा कनिष्ठिका अंगुलीसे मध्यमाके मूलपर्य्यन्त गई हो और कहीं छिन्न नहीं हुई होय तौ उसकी अस्सी ८० वर्षकी आयु होती है ॥ २९१ ॥

**कनिष्ठांगुलिदेशे तु रेखा गच्छति नान्यतः ॥**
**अच्छिन्नाविरला चैव विंशत्यायुर्विनिर्दिशेत् ॥ २९२ ॥**

अर्थ–जिसके हाथमें आयुरेखा केवल कनिष्ठिकाके मूलमेंही फैलकर रहगई हो आगेको नहीं गई होय, और छिन्न नहीं हुई होय तौ बीस २० वर्षकी आयु होती है ॥ २९२ ॥

**कनिष्ठांगुलिमूले तु रेखा गच्छत्यनामिकाम् ॥**
**अविच्छिन्ना भवेद्यस्य चत्वारिंशत् स जीवति ॥ २९३ ॥**

अर्थ–जिसके हाथमें कनिष्ठिकाके मूलसे उठकर अनामिकापर्य्यन्त आयुरेखा गई हो, और छिन्न भिन्न नहीं होय तौ वह पुरुष चालीस ४० वर्ष जीता है ॥ २९३ ॥

**यस्योत्तीर्णकनिष्ठा च तर्जनी मध्यमा समा ॥**
**मध्यमायां शतायुः स्यात्तर्जन्यां भूपतिर्भवेत् ॥ २९४ ॥**

अर्थ–जिसके हाथमें कनिष्ठिकासे उठीहुई आयुरेखा मध्यमाके मूलपर्य्यन्त होय तौ सौ वर्षकी आयु होती है और तर्जनीपर्य्यन्त होय तौ वह पुरुष राजा होय ॥ २९४ ॥

तर्जन्या मध्यमांगुल्या आयुरेखा तु मध्यतः ॥
सम्प्राप्ता या भवेच्चैव स जीवेच्छरदः शतम् ॥ २९५ ॥

अर्थ-जिस पुरुषके हाथमें कनिष्ठिकाके मूलसे उठकर आयुरेखा तर्जनी और मध्यमा अंगुलीके मध्यपर्य्यन्त गई होय वह पुरुष सौ १०० वर्षपर्य्यन्त जीता है ॥ २९५ ॥

प्रदेशिनीं गता रेखा कनिष्ठामूलगामिनी ॥
शतायुषं च कुरुते छिन्नया तरुतो भयम् ॥ २९६ ॥

अर्थ-जिसके हाथमें कनिष्ठिकाके मूलसे तर्जनीके मूलपर्य्यन्त आयुरेखा दीखती हो वह सौ वर्ष जीताहै, और यदि वह रेखा छिन्न होय तो उस प्राणीकी वृक्षसे गिरकर मृत्यु होती है ॥ २९६ ॥

कनिष्ठिकामूलभवा रेखा कुर्याच्छतायुषम् ॥
प्रदेशिनी मध्यमाभ्यामन्तरेण गता सती ॥ २९७ ॥

अर्थ-जिस प्राणीके हाथमें कनिष्ठिकाके मूलसे उठकर आयुरेखा मध्यमा और तर्जनीके मध्यपर्य्यन्त होय तो उस पुरुषकी एकसौ १०० वर्षकी आयु होती है ॥ २९७ ॥

कनिष्ठा तर्जनीं यावद्रेखा भवति चाक्षता ॥
विंशत्यब्दाधिकशतं नरो जीवत्यनामयः ॥ २९८ ॥

अर्थ-जिसके हाथमें कनिष्ठिका अंगुलीसे तर्जनी अंगुलीपर्य्यन्त अक्षत आयु रेखा होय वह पुरुष नीरोग होकर एकसौ बीस वर्षपर्य्यन्त जीता है ॥ २९८ ॥

कनिष्ठां मध्यमां यावद्रेखा भवति चाक्षता ॥
शताब्दं वाथ चाशीतिं नरो जीवेन्न संशयः ॥ २९९ ॥

अर्थ-जिस प्राणीके हाथमें कनिष्ठासे लेकर मध्यमा अंगुलीपर्य्यन्त

अक्षत आयुरेखा होय उस प्राणीकी निःसन्देह सौ वर्षकी अथवा अस्सी वर्षकी आयु होती है ॥ २९९ ॥

**कनिष्ठानामिकायां चेद्रेखा भवति चाक्षता ॥**
**षष्टिं पंचाशदब्दं वा नरो जीवत्यसंशयः ॥ ३०० ॥**

अर्थ—जिसके हाथकी कनिष्ठिकासे अनामिकाके मूलपर्य्यन्त आयुरेखा अक्षत होय वह पुरुष निःसन्देह साठ वर्ष या पचास वर्ष जीता है ॥ ३०० ॥

**रेखया भिद्यते रेखा स्वल्पायुश्च भवेन्नरः ॥**
**यत्संख्या भिद्यते रेखा अपमृत्युश्च तद्भवेत् ॥ ३०१ ॥**

अर्थ—जिस पुरुषके हाथमें आयुरेखा अन्य किसी रेखासे कटी हुई होय तौ उस पुरुषकी आयु थोड़ी होती है, और यदि बहुतसी रेखाओंसे कटी होय तौ अपमृत्युसे प्राणान्त होता है ॥ ३०१ ॥

**एवमपरापि पाणौ शुभसंस्थाना शुभावहा रेखा ॥**
**किं बहुना मनुजानामशुभा पुनरशुभसंस्थाना ३०२**

अर्थ—इसी प्रकार मनुष्योंके हाथमें औरभी शुभ रेखा शुभफल देती है, और अशुभ रेखा अशुभ फल देती हैं; बस इस रेखाफलका कहाँतक वर्णन करै? ॥ ३०२ ॥

## अथांगुष्ठलक्षणम् ।

**ऋजुरंगुष्ठः स्निग्धस्तुंगो वृत्तः प्रदक्षिणावर्त्तः ॥**
**अंगुष्ठोऽपि धनवतां सुघनानि समानि पर्वाणि ३०३**

अर्थ—धनवानोंका अंगूठा सूधा, चिकना, ऊँचा, गोल, दाहिनी-ओरको झुकाहुआ होता है, और अंगूठेके पोरुवेभी कठिन और बराबर होते हैं ॥ ३०३ ॥

**उन्नतो मांसलोऽङ्गुष्ठो वर्त्तुलोऽतुलभोगदः ॥**

वक्रो ह्रस्वश्च चिपिटः सुखसौभाग्यभंजकः ॥ ३०४ ॥

अर्थ-ऊँचा और पुष्ट तथा गोल अँगूठा अनुपम भोगोंका देनेवाला होता है; और टेढ़ा, छोटा, तथा चपटा अंगूठा सुख और सौभाग्यका नष्ट करनेवाला होता है ॥ ३०४ ॥

## अथांगुलिलक्षणम् ।

अंगुष्ठोऽङ्गुलयो वा संख्या न्यूनाधिकाः स्फुटं यस्य ॥
धनधान्यैः परिहीनः सोऽल्पायुर्भूतले भवति ॥ ३०५ ॥

अर्थ-जिस पुरुषकी अंगुलियां संख्यामें कमती हों अथवा बढ़ती हों तो वह पुरुष धनधान्यकरके हीन और पृथ्वीपर थोड़ेही दिनोंतक जीता है ॥ ३०५ ॥

छिद्रं मिथः कनिष्ठानामामध्यप्रदेशिनां स्यात् ॥
वृद्धत्वे तारुण्ये बाल्ये क्रमशो नरस्य सुखम् ॥ ३०६ ॥

अर्थ-जिसकी कनिष्ठिका अंगुलीमें छिद्र होय वह वृद्धावस्थामें सुखी होता है; अनामिकामें छिद्र होय तो युवावस्थामें सुखी होता है, मध्यमा और प्रदेशिनीके बीचमें छिद्र होय तो बाल्यावस्थामें सुखी होता है ॥ ३०६ ॥

मेधाविनां च सूक्ष्माः स्युर्भृत्यानां चिपिटाः स्मृताः ॥
स्थूलांगुलीभिर्निःस्वाः स्युर्नताः स्युः सुकृशैस्तदा ३०७

अर्थ-जिनके हाथोंकी अंगुली अग्रभागमें सूक्ष्म हों वे मेधावी होते हैं; जिनकी चिपटी हों वे भृत्य होते हैं. जिनकी मोटी हों वे निर्धन होते हैं, और जिनके हाथकी अंगुली दुर्बल हों वे नम्र होते हैं ॥ ३०७ ॥

दीर्घायुः सुभगश्चैव निर्धनो विरलांगुलिः ॥
घनांगुलिश्च सधनास्तिस्रो रेखाश्च यस्यवै ॥ ३०८ ॥

नृपतेः करतलगा मणिबन्धात् समुत्थिताः ॥३०९॥

अर्थ--बिरली अंगुलीवाले दीर्घायु, सौभाग्यवान्, और निर्धन होते हैं; घनी अंगुलीवाले धनवान् होते हैं; और जिसके पहुँचेसे हथेली मेंकी तीन रेखा गई हों वह राजा होता है ॥ ३०८ ॥ ३०९ ॥

ताम्रैर्भूपा धनाढ्याश्च अंगुष्ठैः सयवैस्तथा ॥
अंगुष्ठमूलजैः पुत्री स्याद्दीर्घांगुलिपर्वकः ॥ ३१० ॥

अर्थ--जिनके अंगूठे लाल वर्ण और यवके आकारके चिन्हकरके युक्त हों वे राजा अथवा धनी होते हैं; जिनके अँगूठेके पर्व बड़े हों और अंगूठेके मूलमें रेखा हों वे निःसन्देह पुत्रवान् होते हैं ॥ ३१० ॥

दीर्घांगुलिभिः कुलटा कृशाभिरतिनिर्धना ॥
ह्रस्वाभिः स्याच्च ह्रस्वायुर्भुग्नाभिर्भुग्नवर्त्तिनी ॥ ३११ ॥

अर्थ—जिसकी अंगुली बड़ी लंबी हों वह कुलटा होती है; काली अंगुलियोंवाली अत्यन्त निर्धन होती है, छोटी अंगुलियोंवाली अल्पायु होती है; और टेढ़ी अंगुलियोंवाली कुटिल होती है ॥ ३११ ॥

चिपिटाभिर्भवेद्दासी चिपिटाभिर्दरिद्रिणी ॥
परस्परं यदांगुल्यः समारूढा भवन्ति हि ॥
हत्वा बहूनपि पतीन् परप्रष्या तदा भवेत् ॥३१२॥

अर्थ--चपटी अंगुलियोंवाली दासी होती है और दरिद्री होती है और जिसकी अंगुली परस्पर चढ़ी हुई हों वह स्त्री बहुतसेभी पतियोंको मारकर परदासी होती है ॥ ३१२ ॥

अरुणाः सशिखास्तुंगाः करजाः सुदृशां शुभाः ॥
निम्ना विवर्णाः शुक्त्याभाः पीता दारिद्र्यदायकाः॥३१३॥

अर्थ--जिन स्त्रियोंके हाथकी अंगुलियां लालवर्ण शिखायुक्त और

ऊँची हों वे स्त्रियां सुलक्षण होती हैं, और जिनकी अंगुली नीची विवर्ण और सीपीके समान हों वे दरिद्रिणी होती हैं ॥ ३१३ ॥

अम्भोजमुकुलाकारमंगुष्ठांगुलिसम्मुखम् ॥
हस्तद्वयं मृगाक्षीणां बहुभोगाय जायते ॥ ३१४ ॥

अर्थ—जिस स्त्रीके दोनों हाथ मनोहर और कमलकी कलीके समान हों वह हरिणनेत्रा अनेक प्रकारके भोगोंको भोगती हैं ॥ ३१४ ॥

अतिह्रस्वाः कृशा वक्रा विरला रोगहेतुकाः ॥
दुःखायांगुलयः स्त्रीणां बहुपर्वसमन्विताः ॥ ३१५ ॥

अर्थ—अत्यन्त छोटी, पतली, टेढ़ी और छीदी हुई स्त्रियोंके हाथकी अंगुलियों बहुतसे पर्वोंकरके युक्त होयँ तो रोगकारक और दुःखदायक होती हैं ॥ ३१५ ॥

शुभदः सरलोंगुष्ठो वृत्तो वृत्तनखो मृदुः ॥
अंगुल्यश्च सुपर्वाणो दीर्घा वृत्ताः क्रमात् कृशाः ॥
चिपिटाः स्थपुटा रूक्षाः पृष्ठरोमयुजोऽशुभाः ॥३१६॥

अर्थ—सीधा, गोल, गोल नखयुक्त और कोमल, हाथका अंगूठा शुभ फलदायक होताहै; सुन्दर पर्वोंकरके युक्त, वड़ी, गोल और क्रमसे पतली अर्थात् ढलाववाली अंगुलियां शुभकारक होती हैं; और चपटी, रूखी तथा पीठपर रोमाञ्चयुक्त अंगुलियां अशुभफलदायक होती हैं ॥ ३१६ ॥

## अथ नखलक्षणम् ।

विद्रुमरुचयः श्लक्ष्णाः पाणिनखाः कच्छपोन्नताः स्निग्धाः
सशिखाः क्रमेण विपुलाः पर्वार्द्धमिता महीशानाम् ३१७

अर्थ—राजाओंके हाथोंके नख मूँगेके समान रंगवाले, चिकने,

कछुवेकी पीठकी तुल्य ढलाववाले, चमकदार, बड़े बड़े और आधे आधे पोववेके बराबर होते हैं ॥ ३१७ ॥

दीर्घाः कुटिलारूक्षाःशुक्लनिभायस्यकरनखा विशिखाः ॥
तेजोमृजा विहीनाः स हीयते धान्यधनभोगैः ॥ ३१८ ॥

अर्थ–जिस पुरुषके हाथोंके नख बड़े टेढ़े रूखे, सफेद, तेजोहीन, स्वच्छतासे रहित और चमकरहित होते हैं वह पुरुष धनधान्यके भोगों-करके हीन होता है ॥ ३१८ ॥

पुष्पयुतैर्दुःशीलाः श्वेतैः श्रमणास्तुषोपमैः क्लीबाः ॥
परतर्कका विवर्णैश्चिपिटैः स्फुटितैर्नखैर्निःस्वाः ॥ ३१९ ॥

अर्थ–जिनके नखोंमें फूलकेसे छींटे हों वे कुटिलस्वभाव होते हैं; सफेद नखवाले भिखारी होते हैं; भूसीके समान नखवाले नपुंसक होते हैं; मैले नखवाले कुतर्की होते हैं; चपटे और टूटे फूटे नखवाले निर्धन होते हैं ॥ ३१९ ॥

अपसव्यसव्यकरयोर्नखेषु सितबिंदवश्चरणयोर्वा ॥
आगन्तवः प्रशस्ताः पुरुषाणां भोजराजमतम् ॥ ३२० ॥

अर्थ–राजा भोजका यह मत है कि–जिन मनुष्योंके बाएँ या दाहिने हाथके अथवा पाँवके नखोंमें श्वेत बिन्दु आजायँ वे परमशुभकारक होते हैं ॥ ३२० ॥

## अथ पृष्ठलक्षणम् ।

कच्छपपृष्ठो राजा हयपृष्ठो भोगभाजनं भवति ॥
धनसम्पत्तिसुसेनाधिपतिः शार्दूलपृष्ठोऽपि ॥ ३२१ ॥

अर्थ–कछुवेकी समान पीठवाला राजा होताहै; घोड़ेकी समान पीठवाला सब प्रकारके भोगोंका पात्र होताहै; शार्दूलकी समान पीठ-वाला धन सम्पत्तिकरके युक्त और सेनापति होताहै ॥ ३२१ ॥

लभते शिरालपृष्ठो निर्धनतां भुग्नवंशपृष्ठोऽपि ॥
कष्टं रोमशपृष्ठः पृथुपृष्ठो बन्धुविच्छेदम् ॥ ३२२ ॥

अर्थ-नसोंकरके युक्त पीठवाला अथवा टेढ़ी पीठवाला निर्धन होताहै; रोमयुक्त पीठवाला दुःखोंको भोगताहै, और मोटी पीठवालेके भ्राताओंका वियोग होताहै ॥ ३२२ ॥

## अथ कृकाटिकालक्षणम् ।

ऋज्वी कृकाटिका श्रेष्ठा समांसा च समुन्नता ॥
शुष्का शिराला रोमाढ्या विशाला कुटिलाऽशुभा ३२३॥

अर्थ-सीधी, मांसकरके युक्त और यथायोग्य ऊँची कृकाटिका ( पीठकी सन्धि ) शुभ होतीहै, और सूखी नसोंकरके युक्त, रोमोंकरके युक्त, चौड़ी और टेढ़ी कृकाटिका अशुभ होती है ॥ ३२३ ॥

## अथ ग्रीवालक्षणम् ।

चिपिटग्रीवो निःस्वः शुष्का सशिरा च यस्य वा ग्रीवा ॥
महिषग्रीवः शूरः शस्त्रान्तो वृषसमग्रीवः ॥ ३२४ ॥

अर्थ-चपटी गर्दनवाला निर्धन होताहै, या जिसकी गर्दन सूखी, नसोंकरके युक्त हो वहभी निर्धन होताहै; भैंसेके समान गर्दनवाला शूर होताहै; बैलके समान ग्रीवावाले पुरुषकी शस्त्रसे मृत्यु होती है ॥ ३२४ ॥

कठिना रोमशा शस्ता मृदुग्रीवा च कंबुभा ॥
ग्रीवया ह्रस्वया निःस्वा दीर्घया च कुलक्षयः ॥३२५॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी गर्दन कठोर, रोमयुक्त, कोमल, और शंखके समान हो वह सुलक्षणा होती है; जिसकी गर्दन छोटी हो वह निर्धन होती है; जिसकी गर्दन बड़ी हो वह कुलकी नाशक होती है ॥ ३२५ ॥

स्थूलग्रीवा च विधवा वक्रग्रीवा च किंकरी ॥
वन्ध्या हि चिपिटग्रीवा ह्रस्वग्रीवा च निःसृता ॥३२६॥

अर्थ-जिसकी गर्दन मोटी हो वह विधवा होती है; टेढ़ी गर्दन-वाली स्त्री दासी होती है; चपटी गर्दनवाली बन्ध्या होती है, और अति-छोटी गर्दनवाली निपूती होती है ॥ ३२६ ॥

## अथ चिबुकलक्षणम् ।

निःस्वाश्च बहुरेखाः स्युर्निर्द्रव्याश्चिबुकैः कृशैः ॥
चिबुकं द्व्यंगुलं शस्तं वृत्तं पीनं सकोमलम् ॥ ३२७॥
स्थूलं द्विधा सविभक्तमायतं रोमशं त्यजेत् ॥

अर्थ-जिनकी गर्दनमें बहुतसी रेखा हों वे निर्धन होते हैं; जिनकी ठोढ़ीका गड्ढा दुर्बल हो वे निर्धन होते हैं; दो अंगुलका ठोढीका गड्ढा शुभ होताहै; और गोल, पुष्ट, तथा अतिकोमल ठोढ़ीका गड्ढा शुभ होताहै; और दो टुकड़े हुआ, चौंड़ा, तथा अतिरोमयुक्त ठोढ़ीका गड्ढा अशुभ होताहै ॥ ३२७ ॥

## अथ हनुलक्षणम् ।

हनुश्चिबुकसंलग्ना निर्लोमा सुघना शुभा ॥
वक्रा स्थूला कृशा ह्रस्वा रोमशा न शुभप्रदा ॥३२८॥

अर्थ-पुरुषकी ठोढ़ीके दोनों ओरके जो बड़े खूब चिबुकसे मिलेहुए रोमरहित और पुष्ट हों तौ शुभ होते हैं; और टेढ़े, मोटे, दुर्बल, छोटे तथा रोमयुक्त हों तौ शुभकारक नहीं होते हैं ॥ ३२८ ॥

## अथ कूर्चलक्षणम् ।

कूर्चंप्रलम्बमुज्ज्वलमस्फुटिताग्रं निरंतरं मृदुलम् ॥
स्निग्धं पूर्णं सूक्ष्मं मेचकं तु विशिष्यते पुंसाम् ॥३२९॥

अर्थ–जिन पुरुषोंकी ठोढ़ीके बाल लम्बे, उज्वल, जिनका अग्रभाग कटा न हो ऐसे घने, कोमल, चिकने, भरेहुए, महीन और चमकदार हों वे पुरुष सुलक्षण होते हैं ॥ ३२९ ॥

## अथ श्मश्रुलक्षणम् ।

अस्फुटिताग्रं स्निग्धं श्मश्रु शुभं मृदु च सन्नतं चैव ॥
रक्तैः परुषैश्चौराः श्मश्रुभिरल्पैश्च विज्ञेयाः ॥ ३३० ॥

अर्थ–जिनकी डाढ़ी मूछोंके बालोंकी नोकैं फटीहुई न हों कोमल हों नीचेको नमेहुए हों, वह, सुलक्षण होते हैं; लालवर्णकी कठोर और छोटी डाड़ी मूछोंवाले चोर होते हैं ॥ ३३० ॥

सान्तर्द्वितीयदशामिह शुक्रो द्व्येकोधिकः क्रमेण नृणाम्॥
तदयं श्मश्रुभेदस्तद्विकृतिः षोडशे वर्षे ॥ ३३१ ॥

अर्थ–यदि बीस वर्षके भीतर अथवा इक्कीस वर्षके भीतर डाड़ी मूँछें निकलैं तो वीर्य्यकी वृद्धि होती है, और सोलह वर्षके भीतर निकलैं तो वीर्य्यमें विकार होताहै, इस प्रकार भेद है ॥ ३३१ ॥

## अथ कपोललक्षणम् ।

सिंहव्याघ्रगजेंद्राणां कपोलसदृशा यदि ॥
कृषिभोगी भवेन्नित्यं बहुपुत्रश्च जायते ॥ ३३२ ॥

अर्थ–जिसके कपोल ( गाल ) सिंह व्याघ्र और, हाथीके समान हों वह खेतीके द्वारा अनेक प्रकारके भोगोंको भोगता है; और बहुत पुत्र होते हैं ॥ ३३२ ॥

## अथ गण्डस्थललक्षणम् ।

सिते कूपे गण्डयोश्च साधुवद्व्यभिचारिणी ॥
भोगी वै निम्नगण्डः स्यान्मंत्री सम्पूर्णगण्डकः ॥ ३३३ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी कनपटी सफेद हो वह स्त्री साधुके वेषमें रहकर व्यभिचार करनेवाली होती है; जिसकी कनपटी नीची हो वह भोगी होताहै; भरीहुई कनपटीवाला मंत्री होताहै ॥ ३३३ ॥

यस्य गण्डो हि सम्पूर्णः पद्मपत्रसमप्रभः ॥
भोगवान् स्त्रीजयी चैव सर्वविद्याधरस्तथा ॥३३४॥

अर्थ-जिसकी कनपटी भरी हुई कमलके पत्तेके समान कान्तिवाली हो वह पुरुष भोगी, स्त्रीको जीतनेवाला और सम्पूर्ण विद्याओंका जाननेवाला होताहै ॥ ३३४ ॥

निम्नौ यस्य कपोलौ निर्मांसौ स्वल्पकूर्चरोमाणौ ॥
पापास्ते दुःखजुषो भाग्यविहीनाः परप्रेष्याः ॥ ३३५ ॥

अर्थ-जिसके गाल नीचे मांसरहित, और थोड़े ठोढ़ीके बालोंकरके युक्त हों वे पुरुष पापी और दुःखोंको भोगनेवाले, भाग्यहीन तथा अन्यपुरुषोंके दास होते हैं ॥ ३३५ ॥

## अथ मुखलक्षणम् ।

समवृत्तमबलं सूक्ष्मं स्निग्धं सौम्यं समसुरभिवदनम् ॥
सिंहेभनिभं राज्यं सम्पूर्णं भोगिनां चेति ॥ ३३६ ॥

अर्थ-जिनका मुख सब ओरसे गोल, भयानकतारहित, छोटा, चिकना, देखनेमें रमणीय, बराबर, सुगन्धियुक्त, सिंह और हाथीके समान पूर्ण हो वे राजा अथवा भोगी होते हैं ॥ ३३६ ॥

शस्तौ कपोलौ वामाक्ष्याः पीनौ वृत्तौ समुन्नतौ ॥
रोमशौ परुषौ निम्नौ निर्मांसौ परिवर्जयेत् ॥ ३३७ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके कपोल पुष्ट गोल और ऊँचे हों वह सुलक्षणा होती है; और रोमाञ्चयुक्त, कठोर, नीचे तथा मांसरहित कपोलवाली स्त्री कुलक्षणा होती है ॥ ३३७ ॥

**जननीमुखानुरूपं मुखकमलं भवति यस्य मनुजस्य ॥**
**प्रायो धन्यः स पुमानित्युक्तमिदं समुद्रेण ॥ ३३८ ॥**

अर्थ–सामुद्रिक शास्त्रके आचार्य्योंका यह मत है कि, जिस पुरुषका मुख अपनी माताके मुखके समान हो वह पुरुष प्रायः धन्यवादका पात्र होताहै ॥ ३३८ ॥

**भीरुवक्त्रः पापकर्मा धूर्त्तानां चतुरस्त्रकम् ॥**
**निम्नं वक्त्रमपुत्राणां कृपणानां च ह्रस्वकम् ॥ ३३९ ॥**

अर्थ–जिसका मुख भयानक होवे है वह पापकर्म्म करनेवाला होता है; चौकोना मुखवाले पुरुष धूर्त्त होते हैं; नीचे मुखवाले पुरुष निपूते होते हैं और छोटे मुखवाले पुरुष कृपण होते हैं ॥ ३३९ ॥

**कृष्णं च पुरुषवक्त्रं समं सौम्यं च संवृतम् ॥**
**भूपानाममलं श्लक्ष्णं विपरीतं च दुःखिनाम् ॥ ३४० ॥**

अर्थ–कृष्णवर्ण, लावण्ययुक्त, समान, देखनेमें रमणीय. गोल निर्म्मल और चमकदार मुख राजाओंका होताहै; इसके विपरीत लक्षणोंकरके युक्त मुखवाले दुःखी होतेहैं ॥ ३४० ॥

**महामुखं दुर्भगानां स्त्रीमुखं हीनसन्ततेः ॥**
**आढयानां वर्तुलं वक्त्रं निर्द्रव्याणां च दीर्घकम् ॥ ३४१ ॥**

अर्थ--जिनका बड़ा मुख हो वे दुर्भग होते हैं; जिनका स्त्रीके समान मुख हो उनके सन्तान नहीं होती है; जिनका गोल मुख हो वे धनाढय होते हैं, जिनका लम्बा मुख हो वे निर्धन होते हैं ॥ ३४१ ॥

**समं समांसं सुस्निग्धं स्वामोदं वर्तुलं मुखम् ॥**
**जनेतृवदनच्छायं धन्यानामिह जायते ॥ ३४२ ॥**

अर्थ–जिनका मुख समान, मांसयुक्त, खूब चिकना, देखनेमें आन-

न्ददायक, गोल, और पिताके मुखके समान होताहै वे पुरुष इस संसारमें धन्यवादके पात्र होते हैं ॥ ३४२ ॥

**पद्मवक्त्राश्च पुरुषा धनधान्यादिभोगिनः ॥**
**न हास्यवदना ये ते दुःखदारिद्र्यभोगिनः ॥ ३४३ ॥**

अर्थ--जिन पुरुषोंका मुख कमलके समान हो वे धन धान्यके भोगनेवाले होते हैं; और जिनका मुख कभी हास्ययुक्त देखनेमें न आवै वह दुःख और दरिद्रको भोगतेहैं ॥ ३४३ ॥

**चंद्रबिम्बोपमं वक्त्रं धर्मशीलः सदा भवेत् ॥**
**मृगमूषिकवक्त्राश्च नरा भाग्यविवर्जिताः ॥ ३४४ ॥**

अर्थ--जिस पुरुषका मुख चन्द्रमण्डलके समान हो वह सदा धर्म्मात्मा होताहै; जिन मनुष्योंका मुख मृग और मूषकके समान हो वे पुरुष भग्यहीन होते हैं ॥ ३४४ ॥

**रासभकरभप्लवगव्याघ्रमुखा दुःखभागिनः पुरुषाः ॥**
**जिह्ममुखा विकृतमुखाः शुष्कमुखाः हयमुखा निःस्वाः४५**

अर्थ--गधा, ऊंट वानर और व्याघ्रके समान मुखवाले पुरुष दुःख भोगनेवाले होते हैं, और जिनका मुख टेढ़ा विकराल और सूखा तथा घोड़ेके समान हो वे निर्धन होते हैं ॥ ३४५ ॥

## अथौष्ठलक्षणम् ।

**मसृणो मत्तकाशिन्याश्चोत्तरोष्ठः सुभोगदः ॥**
**किंचिन्मध्योन्नतोरोमाविपरीतो विरुद्धकृत् ॥ ३४६ ॥**

अर्थ--स्त्रीका ऊपरका होंठ चिकना होय तौ अनेक प्रकारके भोगोंका देनेवाला होता है; और कुछ बीचमें ऊँचा और रोमरहित स्त्रीका ऊपरका होंठ शुभ होता है; अन्यथा अशुभ होता है ॥ ३४६ ॥

**कृशः प्रलम्बः स्फुटितो रूक्षो दौर्भाग्यसूचकः ॥**

श्यावः स्थूलोऽधरोष्ठः स्याद्वैधव्यकलहप्रदः ॥ ३४७ ॥

अर्थ—स्त्रीका नीचेका होंठ पतला, लम्बा, फटाहुआ, रूखापनलिये हुए होय तौ दौर्भाग्यका सूचक होता है, और धुमैले वर्णका मोटा होय तौ विधवापन और कलहका देनेवाला होता है ॥ ३४७ ॥

मांसलैश्च धनोपेता अव्यक्तैरधरैर्नृपाः ॥
बिम्बोपमैश्च स्फुटितैरोष्ठै रूक्षैश्च खण्डितैः ॥३४८॥
विषमैश्च दरिद्राः स्युः सामुद्रवचनं यथा ॥

अर्थ—सामुद्रिकशास्त्रके आचार्य्योंका यह मत है कि, जिनका होंठ पुष्ट हो वे धनी होते हैं; बिम्बाफलके समान और अप्रकट अधरोष्ठवाले राजा होते हैं; और फटेहुए रूखे टेढ़े बड़े होंठवाले दरिद्री होते हैं ॥ ३४८ ॥

श्यामः स्थूलोऽधरोष्ठः स्याद्वैधव्यकलहप्रदः ॥
मसृणो मत्तकाशिन्याश्चोत्तरोष्ठः सुभोगदः ॥ ३४९ ॥

अर्थ—काला और मोटा स्त्रीका अधर विधवापन और कलहका देनेवाला होता है; तथा स्त्रीका ऊपरका होंठ चिकना होय तौ नानाप्रकारके भोगोंको देता है ॥ ३४९ ॥

पाटलो वर्त्तुलः स्निग्धो रेखाभूषितमध्यभूः ॥
सीमन्तिनीनामधरो राज्ञां चैव प्रियो भवेत् ॥३५०॥

अर्थ—जिसका अधर पाटलवर्ण गोल चिकना और मध्यभागमें रेखाओंसे युक्त हो वह स्त्री नानाप्रकारके भोगोंको भोगनेवाली और राजाओंको प्रिय होती है ॥ ३५० ॥

समुन्नततरौष्ठी या कलहे रूक्षभाषिणी ॥
या तु रोमोत्तरौष्ठी स्यान्न शुभा भर्त्तुरेव हि ॥३५१॥

अर्थ-जिसके होंठ अति ऊँचे हों वह कलहके समय पतिसे रूक्ष भाषण करती है; जिसके ऊपरके होंठपर रोम हों वह स्त्री पतिके लिये शुभ नहीं होती ॥ ३५१ ॥

## अथ दन्तलक्षणम् ।

दन्ताश्च विकटा यस्य नीचवन्नीचकर्मकृत् ॥
प्रगल्भो दन्तुरः सत्यं देशान्तररतो भवेत् ॥३५२॥

अर्थ-जिस पुरुषके दाँत विकट हों वह नीचप्रकृतिका और नीचकर्म्म करनेवाला होता है; और जिसके दाँत बड़े बड़े हों वह निःसन्देह प्रगल्भ और परदेशमें रहनेवाला होता है ॥ ३५२ ॥

द्वात्रिंशद्दशनो राजा भोगी स्यादेकहीनकः ॥
त्रिंशद्दन्ताः स्युः सुखिनो विनैकेन तु दुःखितः ॥
कदाचिद्दन्तुरो मूर्खः कदाचिल्लोमशोऽसुखी ॥३५३॥

अर्थ-बत्तिसदाँतवाला राजा होता है; इकतिस दाँतवाला भोगी होता है; तीस दाँतवाला सुखी होता है; उनतीस दाँतवाला दुःखी होता है; बड़े दाँतवाला कदाचितही मूर्ख होता है, लोमश ( बहुत केशवाला ) कदाचितही दुःखी होता है ॥ ३५३ ॥

दुःखितो विकृतै रूक्षैर्दन्तैर्मूषिकसन्निभैः ॥
सौभाग्यं मिलितैर्दन्तैर्विद्यावान् दन्तुरः पुनः ॥३५४॥

अर्थ-विकराल, रूखे और मूषकके समान दाँतोंवाला दुःखी होता है; जिनके दाँत मिलेहुए हों वह भाग्यवान् होते हैं; और दन्तुर विद्यावान् होता है ॥ ३५४ ॥

शुद्धैरुज्ज्वलदन्तैश्च दाडिमीबीजसन्निभैः ॥
सुशीलः स नरो ज्ञेयः प्रियाणां वश्यकारकः ॥३५५॥

अर्थ-जिसके दाँत शुद्ध उज्वल और दाड़िमीके दानोंकी समान हों वह पुरुष सुशील होता हैं; और अपने इष्ट मित्र आदि प्रियपुरुषोंको वशीभूत कर लेता है॥ ३५५॥

कुन्दपुष्पप्रतीकाशैर्दन्तैर्भूपतयस्तथा॥
ऋक्षवानरदन्ताश्च नित्यं ते क्षुत्तृषार्दिताः॥ ३५६॥

अर्थ-जिनके दाँत कुन्दके पुष्पके समान हों वे पुरुष राजा होते हैं, और रींछ तथा वानरके समान दाँतवाले सदा भूँखे प्यासे रहते हैं॥ ३५६॥

विषमैर्धनहीनाश्च दन्ताः स्निग्धा घनाः शुभाः॥
तीक्ष्णा दन्ताः समाः श्रेष्ठा जिह्वा रक्ता समा शुभा ३५७
श्लक्ष्णा दीर्घा च विज्ञेया तालुः श्वेतो धनक्षयः॥

अर्थ-जिनके दाँत परस्पर छोटे बड़े हों वे धनहीन होते हैं; चमकदार और घने दाँत शुभ होते हैं; तीखे और समान दाँत श्रेष्ठ हैं. समान और लाल, चिकनी लंबी जिव्हा शुभ है, और जिसका सफेद तालु हो उसके धनका नाश होता है॥ ३५७॥

अधस्तादधिकैर्दन्तैर्मातरं भक्षयेत् स्फुटम्॥
पतिहीना च विकटैः कुलटा विरलैर्भवेत्॥ ३५८॥

अर्थ-जिसके नीचेके दाँत संख्यामें अधिक हों उसकी माताका मरण होता है; जिस स्त्रीके दाँत विकट हों वह विधवा होती है और बिरले दाँतवाली स्त्री कुलटा होती है॥ ३५८॥

कराला विषमा दन्ताः क्लेशाय च भवन्ति ते॥
तथैव विषमा दन्ताः क्लेशाय च भयाय च॥३५९॥

अर्थ-विकल और नीचे ऊँचे दाँत क्लेशदायक होते हैं. तिसी प्रकार

केवल छोटे बड़े टेढ़े बड़े दातभी क्लेशके देनेवाले और भयदायक होते हैं ॥ ३५९ ॥

गोक्षीरसन्निभाः स्निग्धा द्वात्रिंशद्दशनाः शुभाः ॥
अधस्तादुपरिष्टाच्च समाः स्तोकसमुन्नताः ॥ ३६० ॥

अर्थ—गौके दुग्धके समान श्वेत, चिकने, गिनतीमें बत्तिस—नीचे ऊपर समान और कुछ ऊँचे दाँत शुभ होते हैं ॥ ३६० ॥

पीताः श्यामाश्च दशनाः स्थूला दीर्घा द्विपंक्तयः ॥
शुक्त्याकाराश्च विरला दुःखदौर्भाग्यकारणम् ॥३६१॥

अर्थ—पीले, काले, मोटे, लम्बे, दो पंक्तिवाले, सीपीके समान आकारवाले, और छीदे दाँत दुःख और दौर्भाग्यके देनेवाले होते हैं ॥ ३६१ ॥

सुप्ता परस्परं या तु दन्तान् किटिकिटायते ॥
सुलक्ष्मापि न सा शस्ता या किंचित् प्रलपेत्तथा ३६२

अर्थ—जो स्त्री निद्राके समय परस्पर दाँतोंको किटकिटाती है, या शयनके समय बराती है, वह स्त्री सुलक्षणा होय तौभी शुभ नहीं होती है ॥ ३६२ ॥

धनिनः खरद्विपरदा निःस्वा भल्लूकवानराः स्यूरदाः ॥
निंद्याः करालविरलद्विपंक्तिशितिविषमरूक्षरदाः ॥३६३॥

अर्थ—गधे और हाथीके समान लम्बे दातवाले धनवान् होते हैं; रींछ और बन्दरके समान दाँतवाले दरिद्री होते हैं; भयंकर और जुदे जुदे काले ऊँचे नीचे दाँतवाले पुरुष निन्दक होते हैं ॥ ३६३ ॥

स्यातां द्विजावधःप्राक् द्वादशगे मासि राजदंताख्यौ ॥
शस्तावूर्ध्वावशुभौ जन्मन्येवोद्गतौ तद्वत् ॥ ३६४ ॥

अर्थ—यदि बारह महीनेके भीतर नीचेके दाँत निकलैं तौ वे राज-

दन्त कहाते हैं और शुभ होते हैं; और ऊपरके प्रथम निकलैं तो अशुभ होते हैं; और जन्मकालमेंही निकलैं तोभी अशुभ होते हैं ॥ ३६४ ॥

सर्वे भवन्ति दशनाः पूर्णे वर्षद्वये जनिप्रभृति ॥
आसप्तमदशमान्तं नियतं पुनरुद्यमं यान्ति ॥३६५॥

अर्थ–जन्मसे लेकर दो वर्षपर्यन्त सब दाँत पूरे होजाते हैं, और सातवें वर्षसे दशवें वर्षपर्यन्त पहिले निकलकर दूसरे आते हैं ॥३६५॥

## अथ जिह्वालक्षणम् ।

रसना रक्ता दीर्घा सूक्ष्मा मृदुला तनुसमा येषाम् ॥
मिष्टान्नभोजिनस्ते यदि वा त्रैविद्यवक्तारः ॥ ३६६ ॥

अर्थ–जिनकी जीभ लाल, लम्बी, पतली, कोमल, और बराबर होय वे पुरुष मिष्टान्नभोजन करनेवाले होते है; अथवा वेदत्रयीके वक्ता अर्थात् कहनेवाले होते हैं ॥ ३६६ ॥

स्थूलजिह्वाक्रूरजिह्वा स नरोऽमृतभाषितः ॥
श्वेतजिह्वा नरा ये च तेऽप्याचारविवर्जिताः ॥
रक्ताजिह्वा भवेद्यस्य विद्यां लक्ष्मीं स चाप्नुयात् ॥३६७॥

अर्थ–जिसकी जिह्वा मोटी और कठोर हो वह पुरुष अमृतकी वर्षा करताहुआसा भाषण करता है; सफेद जिव्हावाले पुरुष आचारहीन होते हैं; लाल जिह्वावाले विद्यावान् और लक्ष्मीवान् होते हैं ॥ ३६७ ॥

यस्य जिह्वा भवेद्दीर्घा नासाग्रं लेढि सर्वदा ॥
योगी भवति निर्वाणः पृथ्वीं भ्रमति सर्वदा ॥३६८॥

अर्थ–जिस पुरुषकी जिह्वा इतनी लम्बी होय कि, वह पुरुष सदा अपनी नासिकाको चाट लेता है, यह निर्वाण ( मुक्त ) योगी होता है और सदा पृथ्वीपर भ्रमण करता है ॥ ३६८ ॥

सितया तोयमरणं श्यामया कलहप्रिया ॥
दरिद्रिणी मांसलया लम्बयाऽभक्ष्यभक्षिणी ॥
विशालया रसनया प्रमदाऽतिप्रमादभाक् ॥ ३६९ ॥

अर्थ-जिसकी जिव्हा सफेद हो उसकी मृत्यु जलसे होती है; और जिसकी जीभ काली हो वह स्त्री कलह करनेवाली होती है; जिसकी जीभ पुष्ट हो वह दरिद्री होती है; लम्बी जीभवाली स्त्री अभक्ष्यभक्षण करती है और चौड़ी जीभवाली स्त्रीको प्रमाद होता है ॥ ३६९ ॥

जिह्वेष्टमिष्टभोक्त्री स्याच्छोणा मृद्वी तथा सिता ॥
दुःखाय मध्यसंकीर्णा पुरोभागे सुविस्तरा ॥ ३७० ॥

अर्थ-जिसकी जिव्हा लाल, कोमल, अथवा सफेद हो वह स्त्री यथेष्ट पदार्थोंकी भोजन करनेवाली होती है; बीचमें पतली और अग्रभागमें चौड़ी जीभ दुःखदायक होती है ॥ ३७० ॥

कृष्णजिह्वा भवेद्यस्य स नरो दुःखभाजनः ॥
यः स्पृशेज्जिह्वया नासां स भवेत् पापकारकः ॥३७१॥

अर्थ-जिसकी जिव्हा काली हो वह पुरुष दुःखका भोगनेवाला होता है; जो जिव्हासे नासिकाका स्पर्श कर लेय वह पुरुष पाप करनेवाला होता है ॥ ३७१ ॥

## अथ तालुलक्षणम् ।

श्वेततालुनरा ये तु धनवन्तो भवन्ति ते ॥
रक्ततालुनरा ये च धनाढ्या मानवाधिपाः ॥ ३७२ ॥

अर्थ-जिन पुरुषोंका तालु श्वेत हो वे धनवान् होते हैं; जिनका तालु लालवर्णका हो वे पुरुष धनवान् और मनुष्योंके ऊपर आज्ञा करनेवाले होते हैं ॥ ३७२ ॥

**कृष्णतालुनरा ये तु भवन्ति कुलनाशकाः ॥**
**पद्मपत्रसमस्तालुः स नरो भूपतिर्भवेत् ॥ ३७३ ॥**

अर्थ–जिनका तालु काले वर्णका हो वे पुरुष कुलका नाश करनेवाले होते हैं; जिस पुरुषका तालु कमलके पत्तेके समान हो वह राजा होता है ॥ ३७३ ॥

**स्निग्धं कोकनदाभासं प्रशस्तं ताल कोमलम् ॥**
**सिते तालुनि वैधव्यं पीते प्रव्राजिता भवेत् ॥ ३७४॥**
**कृष्णेऽपत्यवियोगार्ता रूक्षे भूरिकुटुम्बिनी ॥**

अर्थ–चिकना कमलके समान कान्तिवाला कोमल तालु शुभ है; जिस स्त्रीका सफेद तालु हो वह विधवा होती है, पीले तालुवाली संन्यासिनी होती है; काले तालुवाली सन्तानके वियोगसे दुःखी रहती है और रूखे तालुवाली स्त्री कुटुम्बिनी होती है ॥ ३७४ ॥

## अथ घण्टिकालक्षणम् ।

**कण्ठेऽस्थूला सुवृत्ता च क्रमतीक्ष्णा सुलोहिता ॥**
**अप्रलम्बा शुभा घण्टी स्थूला कृष्णा च दुःखदा ३७५**

अर्थ–कण्ठमें पतली, गोल, क्रमसे तीखी, लालवर्ण, बहुत लम्बावसेरहित घाटी शुभ होती है; और मोटी काले वर्णकी घाँटी दुःखदायक होती है ॥ ३७५ ॥

## अथ हास्यलक्षणम् ।

**यस्यास्तु हसमानाया आरक्तं दृश्यते मुखम् ॥**
**तृतीये स्वामिनं हत्वा चतुर्थे सुखमेधते ॥ ३७६ ॥**

अर्थ–जिस स्त्रीके हँसतेसमय मुख लाल लाल दीखै वह स्त्री उमरके तीसरे भागमें पतिको मारकर चौथे भागमें सुखपूर्वक कालको व्यतीत करती है ॥ ३७६ ॥

अकम्पं हसितं श्रेष्ठं निमीलितमघावहम् ॥
असकृद्धसितं दुष्टं सोन्मादस्य ह्यनेकधा ॥ ३७७ ॥

अर्थ-जिसके हँसतेसमय कम्प न होय वह हास्य श्रेष्ठ होता है; जिसके हँसनेमें नेत्र मिच जायँ वह पापदायक होता है; बारम्बार हँसना अशुभ होता है; उन्मत्त पुरुषका अनेका प्रकारका हास्य होता है ॥३७७॥

यस्याश्च हसने कूपौ गण्डयोरुपजायते ॥
सा नाशयति भर्त्तारं गोपने कामचारिणी ॥ ३७८ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके हँसतेसमय गालोंमें गड्ढे पड़जाँय वह स्त्री पतिका नाश करनेवाली होती है; और पतिसे दुराकर व्यभिचार करती है ॥ ३७८ ॥

अलक्षितास्मितं किंचित् किंचित्फुल्लकपोलकम् ॥
स्मितं प्रशस्तं सुदृशामनिमीलितलोचनम् ॥
स्मिते कूपे गण्डयोश्च सा ध्रुवं व्यभिचारिणी ३७९

अर्थ-स्त्रियोंके जिस मुसकुरानेमें किञ्चिन्मात्र कपोल फूल जायँ और नेत्र नहीं मिचैं वह हरिणनयनी स्त्रियोंका मुसकुराना श्रेष्ठ होता है जिस स्त्रीके मुसकुराने समय कपोलोंमें गड्ढे पड़ जायँ वह स्त्री निःसन्देह व्यभिचारिणी होती है ॥ ३७९ ॥

## अथ नासिकालक्षणम् ।

धनिनोग्रवक्रनासा दक्षिणवक्राः प्रदक्षिणाः क्रूराः ॥
ऋज्वी स्वल्पच्छिद्रा सुपुटा नासा सभाग्यानाम् ३८०

अर्थ-जिनकी नासिका अग्रभागमें मुड़ी हुई हो वे धनी होते हैं; जिनकी नासिका दाईं ओरको वक्र हो वे अभक्ष्यभक्षी और क्रूर होते हैं; सीधी और छोटे छिद्रवाली तथा सुन्दर नथौड़ोंवाली नासिका भाग्यवानोंकी होती है ॥ ३८० ॥

नासा समा समपुटा स्त्रीणां सुरुचिरा शुभा ॥
शुकनासा सुखी स्याच्च शुष्कनासेतिजीवना ॥३८१॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी नासिकाके पुट समान हों और रमणीय हों वह सुलक्षणा होती है; तोतेके समान नासिकावाली सुखी होती है; और सूखी नासिकावाली अधिक जीती है ॥ ३८१ ॥

उच्चनासाश्च ये मर्त्यास्ते सर्वे जनवल्लभाः ॥
न नासाश्चाग्रविस्तीर्णास्तिललोमसु मध्यगाः ॥
ते सर्वे दुःखिता ज्ञेया धर्मशीलविवर्जिताः ॥ ३८२ ॥

अर्थ-जो पुरुष ऊँची नासिकावाले होते हैं वो मनुष्योंको प्रिय होते हैं; और जिनकी नासिका मध्यमें चौड़ी और तिल लोमोंसे युक्त हो वह नहीं, किन्तु वह दुःखी तथा धर्म्म शील करके रहित होते हैं ॥ ३८२ ॥

छिन्नाग्रः कूपनासः स्यादगम्यागमने रतः ॥
दीर्घनासे च सौभाग्यं चौरश्चाकुंचितेन्द्रियः ॥ ३८३ ॥

अर्थ-जिसकी नासिकाका अग्रभाग कटाहुआ और दोनों छिद्र कूपसमान गहरे हों वह अगम्यागमन करनेवाला होता है; लम्बी नासिकावाला भाग्यवान् होता है; सुकड़ी नासिकावाला चोर होता है ॥ ३८३ ॥

आकुंचितारुणाग्रा च वैधव्यक्लेशदायिनी ॥
परप्रेष्या च चिपिटा ह्रस्वा दीर्घा कलिप्रिया ॥३८४॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी नासिका सुकड़ी हुई और अग्रभागमें लाल हो वह विधवा होती है; चपटी और छोटी नाकवाली दासी होती है; तथा चपटी और लम्बी नाकवाली कलहकारिणी होती है ॥ ३८४ ॥

स्त्रीमृत्युश्चिपिटा नासा सुनासो भोगवान् भवेत् ॥

नासा समा समपुटा स्त्रीणां तु रूढिदा शुभा ॥३८५॥

अर्थ–जिसकी चपटी नासिका हो उसकी स्त्रीका मरण होता है; जिसकी रमणीय नासिका हो वह भोगी होता है; स्त्रियोंके समान और समान पुटवाली नासिका सुलक्षण करती है ॥ ३८५ ॥

पार्थिवाः शुकनासाश्च तिलपुष्पाश्च भोगिनः ॥
ह्रस्वनासा नरा ये तु अधर्मशीलका नराः ॥ ३८६ ॥

अर्थ–तोतेके समान नासिकावाले राजा होते हैं; तिलके पुष्पकें समान नासिकावाले भोगी होते हैं; जिनकी नासिका छोटी हो वे पुरुष अधर्म्मी होते हैं ॥ ३८६ ॥

समवृत्तपुटा नासा लघुच्छिद्रा शुभावहा ॥
स्थूलाग्रा मध्यनम्रा च न प्रशस्ता समुन्नता ॥ ३८७ ॥

अर्थ–समान और गोल पुटवाली तथा छोटे छिद्रवाली नासिका शुभकारक होती है; और अग्रभागमें मोटी, मध्यमें नीची और फिर ऊँची ऐसी नासिका शुभ नहीं होती है ॥ ३८७ ॥

## अथ क्षुतलक्षणम् ।

धनिनां क्षुतं सकृद् द्वित्रिपिण्डितं ह्लादि सानुनादं च ॥
दीर्घायुषां प्रमुक्तं विज्ञेयं संहतं चैव ॥ ३८८ ॥

अर्थ–जिनको हरबार एक छींक आवै वे धनी होती हैं; जिनको आनन्दकारक शब्दयुक्त दोबार छींक आवै वे पण्डित होते हैं; जिनको विना रोकटोक वारंवार बहुत छींकें आवैं वे दीर्घायु हैं ॥ ३८८ ॥

स्खलितं लघु च नराणां क्षुतं चतुर्भवति भोगवताम् ॥
ईषदनुनादसहितं करोति कुशलं निरंतरं पुंसाम् ॥३८९॥

अर्थ-भोगी पुरुषोंकी कुछ खाली कुछ भरी और हलकी छींक होती है; और थोड़े शब्दयुक्त छींक पुरुषोंको सदा मंगलकारक होती है ॥ ३८९ ॥

## अथ नेत्रलक्षणम् ।

**नकुलाक्षा मयूराक्षा जायन्ते जगति मध्यमाः पुरुषाः ॥**
**अधमा मण्डूकाक्षाः काकाक्षाः धूसराक्षाश्च ॥ ३९० ॥**

अर्थ-नौले और मोरके समान नेत्रवाले पुरुष जगत्में मध्यम श्रेणीके होते हैं; और मेंडक तथा काकके समान भद्मैले रंगके नेत्रवाले अधम होते हैं ॥ ३९० ॥

**बहुवयसो धूम्राक्षाः समुन्नताक्षा भवन्ति तनुवयसः ॥**
**विष्टब्धवर्त्तुलाक्षाः पुरुषा नातिक्रामन्ति तारुण्यम् ३९१**

अर्थ-जिनके नेत्र धुमैले हों वे दीर्घायु होते हैं; कछुवेके समान नेत्रवाले अल्पायु होते हैं; ऐंठे, अकड़े, और गोल नेनवाले पुरुष तरुणावस्थासे पहिलेही मरणको प्राप्त होते हैं ॥ ३९१ ॥

**न स्त्री त्यजति रक्ताक्षं नार्थः कपिललोचनम् ॥**
**न सुनेत्रा महैश्वर्यं नरो रूपं धनं सुखम् ॥ ३९२ ॥**

अर्थ-लालनेत्रवालेको स्त्री नहीं त्यागती है; कपिलवर्णके नेत्रवालेको धन नहीं त्यागता है; रमणीय नेत्रवाली परमऐश्वर्य्यको नहीं त्यागती है; रमणीय नेत्रवाला पुरुष रूप धन और सुखको प्राप्त होता है ॥ ३९२ ॥

**गम्भीराक्षा ईश्वराः स्युर्मन्त्रिणः स्थूलचक्षुषः ॥**
**नीलोत्पलाक्षा विद्वांसः सौभाग्यं श्यामचक्षुषाम् ॥३९३॥**

अर्थ-गहरे नेत्रवाले राजा होते हैं; ऊँचे नेत्रवाले मन्त्री होते हैं;

नील कमलसरीखे नेत्रवाले विद्वान् होते हैं; श्यामवर्ण नेत्रवाले पुरुष भाग्यवान् होते हैं ॥ ३९३ ॥

वक्रान्तैः पद्मपत्राभैर्लोचनैः सुखभागिनः ॥
मार्जारलोचनैः पापा दुरात्मा मधुपिङ्गलैः ॥ ३९४ ॥

अर्थ—कोनेपर टेढे और कमलके पत्तेके समान नेत्रवाले पुरुष सुखी होते हैं; बिलावके समान नेत्रवाले पापी होते हैं; पिङ्गल और शहदके समान रङ्गके नेत्रोंवाला दुष्टात्मा होता है ॥ ३९४ ॥

क्रूराः केकरनेत्राश्च हरिताक्षाः सकल्मषाः ॥
जिह्मैश्च लोचनैः शूराः सेनान्यो गजलोचनाः ॥ ३९५ ॥

अर्थ—केकरके समान नेत्रवाले क्रूर होते हैं; हरे नेत्रवाले पापी होते हैं; टेढ़े नेत्रवाले शूर होते हैं; और हाथीके समान नेत्रवाले सेनापति होते हैं ॥ ३९५ ॥

मधुपिङ्गाक्षी रमणी धनधान्यसमृद्धिभाक् ॥
प्रलम्बमणिकं यस्या देवरं हन्ति सा ध्रुवम् ॥ ३९६ ॥

अर्थ—शहदके समान पिंगल वर्णके नेत्रोंवाली स्त्री धनधान्यकी सम्पत्तिसे युक्त होती है; जिस स्त्रीके नेत्रकी पुतली लम्बी हो वह निःसन्देह देवरकी मारनेवाली होती है ॥ ३९६ ॥

मयूरनकुलाक्षाश्च शरच्चन्द्रोपमाः शुभाः ॥
शृगालाक्षा नरा ये च पिङ्गाक्षाः क्रूरकर्मिणः ॥ ३९७ ॥
गवाक्षाः सुभगा नित्यं केकराक्षाः दुराशयाः ॥

अर्थ—मोर और नौलेके समान नेत्रवाले और शरत्कालके चन्द्रमाके समान नेत्रवाले शुभ होते हैं; शृगालके समान नेत्रवाले और पीले नेत्रवाले क्रूर होते हैं; गौके समान नेत्रवाले शुभ होते हैं और टेढ़े नेत्रवाले दुष्टात्मा होते हैं ॥ ३९७ ॥

ललनालोचने शस्ते रक्तान्ते कृष्णतारके ॥
गोक्षीरवर्णविशदे सुस्निग्धे कृष्णपक्ष्मिणी ॥ ३९८ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके नेत्र दोनोंओर लाल, तारे काले और चारोंओर गौके दुग्धके समान स्वच्छ और रमणीय तथा काली पलकोंकरके युक्त हों वह स्त्री सुलक्षणा होती है ॥ ३९८ ॥

कामिनीनां तु नितरां गोपिङ्गाक्षी सुदुर्मदा ॥
पारावताक्षी दुःशीला रक्ताक्षी भर्तृघातिनी ॥ ३९९ ॥

अर्थ–गौके समान पिंगल वर्ण नेत्रवाली स्त्री स्त्रियोंमें दुर्मद होती है; कबूतरके समान नेत्रवाली दुःशीला होती है; लालनेत्रवाली पतिको मारनेवाली होती है ॥ ३९९ ॥

रक्ताक्षाश्च नरा ये तु व्याघ्रसिंहास्तु कोपनाः ॥
कुक्कुटाक्षाः सदा दक्षाः परोक्षाः शुभलोचनाः ४००॥
कोटरनयना दुष्टा गजनेत्रा न शोभना ॥
पुंश्चली वामकाणाक्षी वन्ध्या दक्षिणकाणिका ॥४०१॥

अर्थ--रक्त नेत्रवाले पुरुष व्याघ्र और सिंहके समान कोप करनेवाले होते हैं; मुरगेके समान नेत्रवाले चतुर होते हैं; खोकलके समान नेत्रवाली स्त्री दुष्ट होती है; हस्तीके समान नेत्रवाली अशोभना होती है. जिस स्त्रीका बाईं ओरका नेत्र काणा हो वह पुंश्चली होती है; जिसका दाहिनी ओरका नेत्र काणा हो वह स्त्री वन्ध्या होती है ॥ ४०० ॥ ४०१ ॥

उन्नताक्षी न दीर्घायुः वृत्ताक्षी कुलटा भवेत् ॥
मेषाक्षी महिषाक्षी च केकराक्षी न शोभना ॥ ४०२ ॥

अर्थ–ऊँचे नेत्रवाली स्त्री दीर्घायु नहीं होती है. गोल नेत्रवाली स्त्री

कुलटा होती है. मैंढ़ा भैंसाके समान और केकर ( कंजे ) नेत्रवाली स्त्री अशुभ होती है ॥ ४०२ ॥

नीलोत्पलनिभं चक्षुर्नासालग्नं शुभावहम् ॥
केकरे पिङ्गले नेत्रे श्यामे लोलेक्षणेऽसती ॥ ४०३ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके नेत्र नीलकमलके समान और नासिकापर्यन्त चौड़े हों वह सुलक्षणा होती है. भैंड़े पिंगल काले और चञ्चल नेत्रवाली दुष्टा जारिणी होती है ॥ ४०३ ॥

स्यात्कृष्णतारकाक्षाणां अक्ष्णामुत्पाटनं किल ॥
मण्डलाक्षाश्च पापाः स्युर्निःस्वाः स्युर्दीनलोचनाः ॥४०४॥

अर्थ–जिन नेत्रोंकी पुतली काली हों वे नेत्र निकाले जाते हैं; मण्डलाकार नेत्रवाले पापी होते हैं; दीननेत्रवाले पुरुष निर्धन होते हैं ॥ ४०४ ॥

ऋजु पश्यति सरलमनाः पश्यूंत्यूर्ध्वं सदैव पुण्याढ्याः॥
पश्यत्यधः स पापस्तिर्यक्पश्यति नरः क्रोधी ॥४०५॥

अर्थ–सीधा देखनेवाला सरलचित्त होता है; पुण्यात्मा पुरुषोंकी दृष्टि सदा ऊपरको रहती है; जो नीचेको देखै वह पापी होता है, तिर्छा देखनेवाला क्रोधी होता है ॥ ४०५ ॥

सततमबद्धो लक्ष्म्या विघूर्णते कारणं विना दृष्टिः ॥
यस्य म्लाना रूक्षा स पापकर्मा पुमान् नियतम्॥४०६॥

अर्थ–जिसकी दृष्टि विनाप्रयोजन घूमै वह पुरुष सदा लक्ष्मीहीन रहता है; और जिसकी दृष्टि मलीन और सुखी हो वह पुरुष निःसन्देह पापकर्म्म करनेवाला होता है ॥ ४०६ ॥

अन्धः क्रूरः काणः काणादपि केकरो मनुजात् ॥

काणात्केकरतोऽपि क्रूरतरः कातरो भवति ॥ ४०७॥

अर्थ—अन्धेसे काणा, काणेसे भेंडा, और भेंड़े मनुष्यसे आँखें चुरानेवाला क्रूर होता है; अर्थात् यह काणे अन्धे भेंडे और आँख चुरानेवाला दुष्टात्मा होता है ॥ ४०७ ॥

अहिदृष्टिः स्याद्रोगी बिडालदृष्टिः सदा पापः ॥
दुष्टो दारुणदृष्टिः कुक्कुटदृष्टिः कलिप्रियो भवति ॥४०८॥

अर्थ—सर्पके समान दृष्टिवाला रागी होता है; बिलावके समान दृष्टिवाला पापी होता है; दारुण दृष्टिवाला दुष्ट होता है, और मुर्गेके समान दृष्टिवाला कलह करता है ॥ ४०८ ॥

## अथ पक्ष्मलक्षणम् ।

सुदृढैः कृष्णैर्नयनच्छेदस्थितैः पक्ष्मभिर्घनैः सूक्ष्मैः ॥
सौभाग्यं चिरमायुर्लभते मनुजो धनेशत्वम् ॥ ४०९ ॥

अर्थ—अत्यन्त दृढ़, काले, नेत्रोंके छेदोंमें स्थित महीन घने आँखकी पलकोंवाले मनुष्य भाग्यवान् होते हैं; दीर्घायु तथा धनवान् हैं ॥ ४०९ ॥

पक्ष्मभिरधमा विटलैः पिङ्गैः स्थूलैर्विवर्णैश्च ॥
पक्ष्मततिविरहिताः पुनरगम्यनारीरताः पापाः ४१० ॥

अर्थ—कीचड़ (आँखका मल) युक्त, पीले, मोटे, भदमैले, व पलक-वाले और पलकरहित नेत्रवाले पुरुष अगम्य स्त्रीके विषे गमन करनेवाले और पापी होते हैं ॥ ४१० ॥

## अथ निमेषलक्षणम् ।

अनिमेषो रहितः पुरुषः स्यादेकमात्रा निमेषोऽपि ॥
निर्धनं द्विमात्रनिमेषः परजन्माश्रित्य जीवति सः ४११

अर्थ–एक मात्राके बोलनेवाले जितना समय लगै उतनेमें वह पुरुष अनिमेषरहित होते हैं, और दो मात्राके बोलनेमें जितना समय लगै उतने समयमें लगानेवाले परके आसरेसे जीते हैं ॥ ४११ ॥

**धनिनस्त्रिमात्रनिमेषा तथा चतुर्मात्रनिमेषवन्तोऽपि ॥**
**न तु पंचमात्रनिमेषा चिरायुषो भोगिनो धनिनः ॥४१२॥**

अर्थ–तीन मात्रा तथा चार मात्राके उच्चारण करनेमें जितना समय लगै उतने समयमें पलक लगै वे धनी होते हैं; पाँच मात्राके उच्चारणकालमें जिनकी पलक लगै वह भोगी तथा धनी नहीं होते हैं ॥ ४१२ ॥

**नयनं निमिषैरल्पैर्मध्यैर्दीर्घैश्च जायते पुंसाम् ॥**
**आयुः स्वल्पं मध्यं सुदीर्घमथानुपूर्विकया ॥ ४१३ ॥**

अर्थ–जिन पुरुषोंके नेत्र थोड़े पलक लगानेवाले हों उनकी आयु थोड़ी होती है; और बहुत देरमें पलक लगानेवालोंकी देरीके अनुसार कम ज्यादा आयु होती है ॥ ४१३ ॥

## अथ रुदितलक्षणम् ।

**मन्दरमन्थानकमध्यमानजलराशिघोषगम्भीरम् ॥**
**बालस्य यस्य रुदितं स महीं महीयान् सम्पालयति ४१४**

अर्थ–जिस बालकके रोनेका शब्द मन्दराचलसे मथते समय समुद्रके शब्दके अनुसार गम्भीर होय वह बालक पृथ्वीको पालन करनेवाला होता है ॥ ४१४ ॥

**रुदितमदीनमश्रु स्निग्धं च शुभावहं मनुष्याणाम् ॥**
**रूक्षं दीनं प्रचुराश्रु चैव न शुभप्रदं पुंसाम् ॥ ४१५ ॥**

अर्थ–दीनतारहित आँसूरहित, स्निग्ध रोदन मनुष्योंको शुभ

होता है, और रूखा, दीन, अधिक आँसुओंकरके युक्त रोदन मनुष्योंको शुभ नहीं होता है ॥ ४१५ ॥

## अथ भ्रूलक्षणम् ।

विशालोन्नताः सुखिनो दरिद्रा विषमभ्रुवः ॥
धनी दीर्घसंसक्तभ्रूर्बालेन्दून्नतसुभ्रुवः ॥ ४१६ ॥
आढ्यो निःस्वश्च खण्डभ्रूर्मध्ये च विनतभ्रुवः ॥
स्त्रीष्वगम्यास्वासक्ताः स्युः सुतार्थैः परिवर्जिताः ४१७

अर्थ–जिनकी चौड़ी और ऊँची भौंह हो वे सुखी होते हैं; ऊँची नीची भौंहवाले दुःखी होते हैं; लम्बी और मिली हुई भौंहवाले धनवान् होते हैं; द्वितीयाके चन्द्रमाके समान टेढ़ी ऊँची भौंहवाले धनवान् होते हैं; कटी हुई भौंहवाले निर्धन होते हैं; जिनकी भौंह बीचमें नमीहुई हो वह पुरुष अगम्य स्त्रियोंके विषे आसक्त और पुत्र तथा धनसे रहित होते हैं ॥ ४१६ ॥ ४१७ ॥

विशेषः पुनरेवास्य भ्रुवोर्मध्ये च वीक्षते ॥
न नारीं रोचते त्वन्यां राजा चापि वशो भवेत् ४१८

अर्थ–जिसकी दोनों भौंहोंके बीचमें तिलकका चिन्ह होय उसको विवाहिताके सिवाय अन्य स्त्रीकी अभिलाषा नहीं होती है, और राजा उसके वशीभूत होता है ॥ ४१८ ॥

खररोमा च पृथुला विकीर्णा सरला स्त्रियाः ॥
न भ्रूः प्रशस्ता मिलिता दीर्घरोमा च पिङ्गला ॥४१९॥

अर्थ–जिस स्त्रीकी कठोर रोमवाली, चौड़ी, बिखरी हुईसी, सीधी, परस्पर मिली हुई, बड़े बड़े रोमवाली, और पीली भौंह हो वह स्त्री कुलक्षणा होती है ॥ ४१९ ॥

भ्रुवौ सुवर्त्तुले तन्व्याः स्निग्धे कृष्णे असंहते ॥

**प्रशस्ते मृदुरोमाणौ सुभ्रुवः कार्मुकाकृती ॥ ४२० ॥**

अर्थ–सुन्दरी कामिनीकी भौंह रीतिसे गोलाई लिये हुए, चिकनी, कालेवर्णकी, दोनों अलग अलग, कोमल रोमवाली, और धनुषके आकारकी श्रेष्ठ होती है ॥ ४२० ॥

**धनवन्तः सुतवन्तः शिखरैः पुरुषाः समुन्नतैर्विशदैः ॥**
**निम्नैः पुनर्भवन्ति द्रव्यसुखापत्यपरिहीनाः ॥ ४२१ ॥**

अर्थ–जिनकी भौंह ऊँची और चौड़ी हों वे पुरुष धनवान् और पुत्रवान् होते हैं; जिनकी भौंह नीची हों वे द्रव्य, सुख, और सन्तानसे हीन होते हैं ॥ ४२१ ॥

## अथ कर्णलक्षणम् ।

**निर्मांसैश्चिपिटैर्भोगाः कृपणा ह्रस्वकर्णकाः ॥**
**शंकुकर्णाश्च राजानो रोमकर्णा गतायुषः ॥ ४२२ ॥**

अर्थ–जिनके कानोंपर मांस न हो और चपटे हों वे पुरुष भोगी होते हैं; छोटे कानवाले कृपण होते हैं; कीलके समान कानवाले राजा होते हैं और रोमयुक्त कानोंवाले आयुहीन होते हैं ॥ ४२२ ॥

**मानवो दीर्घकर्णस्तु बृहत्कर्णो महाधनी ॥**
**पापी कुटिलकर्णस्तु सिंहकर्णोऽतिनिर्धनः ॥ ४२३ ॥**

अर्थ–लम्बे और बड़े कानोंवाला पुरुष महाधनवान् होता है; टेढ़े कानवाला पुरुष पापी होता है; सिंहके समान कानवाला पुरुष अति निर्धन होता है ॥ ४२३ ॥

**बृहत्कर्णाश्च धनिनो राजानः परिकीर्त्तिताः ॥**
**कर्णैः स्निग्धैरनद्धैश्च व्यालम्बैर्मांसलैर्नृपाः ॥ ४२४ ॥**

अर्थ–बड़े बड़े कानवाले धनवान् या राजा होते हैं और चिकने, खुलेहुए अतिलम्बे, और मांसयुक्त कर्णवालेभी राजा होते हैं ॥ ४२४ ॥

ह्रस्वकर्णा महाधन्या दीर्घकर्णाश्च मध्यमाः ॥
रोमकर्णा मनुष्यास्ते सर्वदा सुखभोगिनः ॥ ४२५ ॥

अर्थ-जिनके छोटे कान हों वे बड़े धन्यवादके पात्र होते हैं; लम्बे कानवाले पुरुष मध्यम श्रेणीके होते हैं; और रोमयुक्त कर्णवाले सदा सुख भोगते हैं ॥ ४२५ ॥

अमांसलं कर्णयुगं समं मृदु समाहितम् ॥
लम्बौ कर्णौ शुभावर्त्तौ सुखदौ च शुभप्रदौ ॥
शष्कुलीरहितौ निन्द्यौ शिरालौ कुटिलौ कृशौ ॥४२६॥

अर्थ-पुष्टिरहित, समान, और कोमल कान शुभ होते हैं; लम्बे और शुभ आवर्त्तयुक्त कान सुखदायक और शुभ होते हैं; शष्कुली ( परदे ) रहित, नसोंयुक्त, टेढ़े और दुर्बल कान निन्दित होते हैं ॥ ४२६ ॥

मेधावी मूषिकाकर्णो गजकर्णः सुपण्डितः ॥
व्योमकर्णश्च दीर्घायुर्मृदुकर्णश्च निर्धनः ॥ ४२७ ॥

अर्थ-चूहेके समान कानवाला बुद्धिमान् होता है; हाथीके समान कानवाला पूर्ण पण्डित होता है; बड़े कानवाला दीर्घायु होता है, और कोमल कानवाला निर्धन होता है ॥ ४२७ ॥

## अथ भाललक्षणम् ।

उन्नतविपुलैः शंखैर्धन्या निम्नैः सुतार्थसंत्यक्ताः ॥
विषमललाटा विधना धनवन्तोऽर्द्धेन्दुसदृशेन ॥४२८॥

अर्थ-जिनके ऊँचे और चौड़े भाल हों वे धन्यवादके पात्र होते हैं; नीचे भालवाले पुत्र और धनरहित होते हैं, तथा नीचे ऊँचे ललाटवाले निर्धन और आधे चन्द्रमाके समान ललाटवाले धनी होते हैं ॥ ४२८ ॥

शुक्तिविशालैराचार्यता शिरासन्ततैरधर्म्मरताः ॥
उन्नतशिराभिराढ्याः स्वस्तिकवत्संस्थिताभिश्च ॥४२९॥

अर्थ–चौड़े ललाटवाले आचार्य होते हैं; नसोंयुक्त ललाटवाले अधर्म्मी होते हैं; ऊँची २ नसोंवाले धनी होते हैं; परन्तु जिनकी वे नसें तिलकके समान चमकती हों ॥ ४२९ ॥

निम्नललाटा वधबन्धभागिनः क्रूरकर्मनिरताश्च ॥
अभ्युन्नतैश्च भूपाः कृपणाः स्युः संकटललाटाः ॥ ४३० ॥

अर्थ–नीचे ललाटवाले वध ( मरण ) और बन्धनको प्राप्त होते हैं; तथा क्रूरकर्म करनेमें तत्पर होते हैं; ऊँचे ललाटवाले राजा, और विषम ललाटवाले कृपण होते हैं ॥ ४३० ॥

ललाटे यत्र दृश्यन्ते तिस्रो रेखाः समाहिताः ॥
सुखी पुत्रसमायुक्ताः स षष्टिं जीवते नरः ॥ ४३१ ॥

अर्थ–जिस पुरुषके ललाटमें तीन रेखा दीखैं वह सुखी और पुत्रवान् होता है; तथा वह पुरुष साठ ६० वर्षपर्य्यन्त जीता है ॥ ४३१ ॥

चत्वारिंशच्च वर्षाणि द्विरेखादर्शनान्नरः ॥
विंशत्यब्दमेकरेखा आकर्णा च शतायुषः ॥ ४३२ ॥

अर्थ–जिसके ललाटमें स्पष्ट रीतीसे दो २ रेखा दीखती हों वह चालिस ४० वर्ष, एक रेखा हो तौ बीस २० वर्ष, और कर्णपर्य्यन्त जिसके ललाटकी रेखा होवें वह सौ १०० वर्षपर्य्यन्त जीता हैं ॥४३२॥

सप्तत्यायुर्द्विरेखे तु षष्ट्यायुस्तिसृभिर्भवेत् ॥
व्यक्ताव्यक्ताभीरेखाभिर्विंशत्यायुर्भवेन्नरः ॥ ४३३ ॥

अर्थ–कितनेएकका ऐसा मत है कि, जिसके ललाटमें दो रेखा हों वह ७० वर्ष जीता है; तीन रेखा हों तौ साठ वर्ष जीता है; जिसके लला-

टकी रेखा कुछ प्रतीत हों और कुछ नहीं हों तो उस पुरुषकी बीस वर्षकी अवस्था होती है ॥ ४३३ ॥

त्रिशूलं पट्टिशं वापि ललाटे यस्य दृश्यते ॥
धनपुत्रसमायुक्तः स जीवेच्छरदां शतम् ॥ ४३४ ॥

अर्थ–जिस पुरुषके ललाटमें त्रिशूल अथवा पट्टिशनामक शस्त्रका चिन्ह दीखे वह धन और पुत्रकरके युक्त होता है और उसकी सौ १०० वर्षकी आयु होती है ॥ ४३४ ॥

आचार्याः शुक्तिविशालैः शिरालैः पापकारिणः ॥
उन्नताभिः शिराभिश्च स्वस्तिकाभिर्धनेश्वराः ॥ ४३५ ॥

अर्थ–विशाल ललाटवाले आचार्य्य होते हैं; नसोंयुक्त ललाटवाले पापी होते हैं; परन्तु जिनके मस्तकमें नसोंसे स्वस्तिकका चिन्ह बना हो वे धनवान् होते हैं ॥ ४३५ ॥

चत्वारिंशच्च वर्षाणि हीनरेखस्तु जीवति ॥
भिन्नाभिश्चैव रेखाभिरपमृत्युर्नरस्य हि ॥ ४३६ ॥

अर्थ–जिसके ललाटमें रेखा न हों वह चालीस ४० वर्ष जीता है; और जिसके ललाटकी रेखा टूटी हों उसकी अपमृत्यु होती है ॥ ४३६ ॥

भालस्थेन त्रिशूलेन निर्मितेन स्वयम्भुवा ॥
नितम्बिनीसहस्राणां स्वामित्वं योषिदाप्नुयात् ४३७

अर्थ–जिस स्त्रीके भालमें त्रिशूलका चिन्ह हो वह स्त्री हजारों स्त्रियोंका प्रभुत्व करती है ४३७ ॥

भालः शिराविरहितो निर्लोमोऽर्द्धेन्दुसन्निभः ॥
अनिम्नस्त्र्यंगुलो नार्याः सौभाग्यारोग्यकारणम् ॥
व्यक्तस्वस्तिकरेखं च ललाटं राज्यसम्पदे ॥ ४३८ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीका ललाट नसोंकरके रहित, रोमोंकरके रहित, तथा अर्द्धचद्रमाके समान और ऊंचा तथा तीन अंगुल हो वह स्त्री आरोग्य और सौभाग्ययुक्त होती है; स्वस्तिकयुक्त हो तो राज्यसम्पत्ति पाती है ॥ ४३८ ॥

शुभमर्द्धेन्दुसंस्थानमतुङ्गं स्यादलोमशम् ॥
नृपतीनां भवेच्चिह्नं ललाटं शुभदर्शनम् ॥ ४३९ ॥

अर्थ–अर्द्धचन्द्रमाके आकारका, समान, रोमरहित ललाट होना राजाओंका चिन्ह है. उसके मस्तकका दर्शन शुभफलदायक होता है ॥ ४३९ ॥

प्रलम्बिनि ललाटे तु देवरं हन्ति चाङ्गना ॥ ४४० ॥

अर्थ–लम्बे ललाटवाली स्त्री देवरका वध करनेवाली होती है ॥४४०॥

यस्योन्नतं ललाटं च ताम्रवर्णं च दृश्यते ॥
रेखाहीनश्च कक्षश्च स चोन्मत्तो महीं भ्रमेत् ॥४४१॥

अर्थ–जिस पुरुषका ललाट ऊँचा, ताम्बेके समान लालवर्णका हो और बगलमें रेखा न हों तो वह पुरुष उन्मत्त ( पागल ) होकर पृथ्वी पर भ्रमण करता है ४४१ ॥

ललाटे दृश्यते यस्य वक्ररेखाचतुष्टयम् ॥
अशीत्यायुः समाप्नोति पंचरेखाः शतं समाः ॥४४२॥

अर्थ–जिस पुरुषके ललाटमें टेढ़ी चार रेखा दीखती हों उस पुरुषकी अस्सी ८० वर्षकी आयु होती है, और जिसके ललाटमें पाँच रेखा हों वह सौ १०० वर्षपर्यन्त जीता है ॥ ४४२ ॥

पृथू च बालेन्दुनिभे भ्रुवौ चाथ ललाटकम् ॥
शुभमर्द्धेन्दुसंस्थानमतुङ्गं स्यादलोमशम् ॥ ४४३ ॥

अर्थ-मोटे और द्वितीयाके चन्द्रमाके समान भौंह और ललाट, तथा अर्द्धचन्द्राकार, समान, और रोमरहित ललाट शुभ होता है ॥ ४४३ ॥

केशान्तोपगताभिश्च अशीत्यायुर्नरो भवेत् ॥
नवतिः स्यादरेखाभिर्विच्छिन्नाभिस्तु पुंश्चलः ॥४४४॥

अर्थ-जिसके ललाटकी रेखा केशोंपर्य्यन्त हों उस मनुष्यकी असी वर्षकी आयु होती है और एक रेखा होय तो ९० वर्षकी आयु होती है; टूटी हुई रेखायुक्त ललाटवाला व्यभिचारी होता है ॥ ४४४ ॥

ललाटोपसृतास्तिस्रो रेखाः स्युः शतवर्षिणाम् ॥
नृपत्वं स्याच्चतसृभिरायुः पञ्च नवत्यथ ॥ ४४५ ॥

अर्थ-जिसके मस्तकमें पूर्ण तीन रेखा हों वह सौ वर्षका होता है; चार रेखावाला राजा होता है और पांच रेखावालेकी ९५ वर्षकी आयु होती है ॥ ४४५ ॥

चत्वारिंशच्च रक्ताभिस्त्रिंशद्युतलगामिभिः ॥
विंशतिर्वामवक्राभिरायुः क्षुद्राभिरल्पकम् ॥ ४४६ ॥

अर्थ-लालवर्णकी रेखा हों तो ४० वर्षकी और भौंहोंके तलेको गई हों तो ३० वर्षकी, जिसके ललाटकी रेखा बाईं ओर टेढ़ी हों उसकी २० वर्षकी, और छोटी रेखावालेकी थोड़े दिनोंकी आयु होती है ॥ ४४६ ॥

उन्नतेन ललाटेन धनाढ्यो जायते नरः ॥
विषमेण ललाटेन दुःखितो दुर्जनो नरः ॥
ललाटैश्चार्द्धचन्द्राढ्यैर्जायते पृथिवीपतिः ॥ ४४७ ॥

अर्थ-ऊँचे ललाटवाला मनुष्य धनाढ्य होता है; नीचे ऊँचे पुरुषोंके ललाटमें आधे चन्द्रमाका चिन्ह हो अथवा आधे चन्द्रमाके आकारके हों वह पुरुष राजा होता है ॥ ४४७ ॥

विपुलेन ललाटेन धनाढ्यो जायते नरः ॥

अल्पेन च ललाटेन चाल्पायुर्जायते नरः ॥
खरक्रयकरो नित्यं प्राप्नोति वधबन्धनम् ॥ ४४८ ॥

अर्थ–चौंड़े ललाटवाला मनुष्य धनाढय होता है; छोटे ललाटवाला मनुष्य अल्पायु होता है, और सदा गधोंकी खरीद करता है, तथा बध ( मरण ) और बंधनको प्राप्त होता है ॥ ४४८ ॥

त्रिशूलं कुलिशं चापं ललाटे यस्य दृश्यते ॥
ईश्वरं तं विजानीयात् प्रमदाजनवल्लभः ॥ ४४९ ॥

अर्थ–जिस पुरुषके ललाटमें त्रिशूल, कुलिश ( वज्र ) अथवा धनुषके आकारका चिन्ह हो वह राजा होता है और वह स्त्रियोंको प्रिय होता है ॥ ४४९ ॥

पंचभिः शतमादिष्टो ह्यशीतिः षड्भिरेव च ॥
भवेत् सप्ततिस्तिसृभिर्द्वाभ्यां वै विंशतिद्वयम् ॥४५०॥
रेखैकेन ललाटेन विंशत्यायुः प्रकीर्त्तितम् ॥
अरेखेन ललाटेन विज्ञेयं पंचविंशतिः ॥ ४५१ ॥

अर्थ–जिसके ललाटमें पाँच रेखा हों उसकी सौ वर्षकी, जिसके ललाटमें छः रेखा हों उसकी अस्सी वर्षकी, जिसके ललाटमें तीन रेखा हों उसकी सत्तर वर्षकी, दो रेखा हों तो उसकी चालिस वर्षकी, एक रेखावालेकी २० वर्षकी, और रेखाहीन ललाटवालेकी पच्चीस २५ वर्षकी आयु होती है ४५० ॥ ४५१ ॥

रेखाः पंच ललाटस्थाः समाः कर्णान्तलोचनाः ॥
भवेत्तद्यस्य गम्भीरं तं विद्यात् सकलायुषम् ॥ ४५२ ॥

अर्थ–जिसके ललाटमें समान, कर्णपर्य्यन्त लम्बी और गहरी रेखा हों उसकी पूर्णायु होती है ॥ ४५२ ॥

**ललाटे दृश्यते यस्यास्त्रिशूलं कृष्णपिङ्गलम् ॥**
**सा पंच जनयेत् पुत्रान्धनधान्यं विवर्द्धयेत् ॥ ४५३ ॥**

अर्थ–जिस स्त्रीके ललाटमें काले रंगका अथवा पिङ्गलवर्णका त्रिशूलाकार चिह्न हो वह पाँच पुत्रोंको उत्पन्न करती है, और धनधान्यकी वृद्धि करनेवाली होती है ॥ ४५३ ॥

**रेखाचतुष्टयं यस्य ललाटे च प्रदृश्यते ॥**
**चिरायुरपि विद्वांश्च सुखभोगादिभिर्युतः ॥ ४५४ ॥**

अर्थ–जिस पुरुषके ललाटमें चार रेखा हों वह दीर्घकालपर्य्यन्त जीता है; विद्वान् होता है; और सुखभोग आदिसे युक्त रहता है ॥४५४॥

**पंच रेखा भवेयुर्वै सुतसौख्यस्य कारणम् ॥**
**हीनायुश्च त्रिरेखायां रेखैकेन नृपो भवेत् ॥ ४५५ ॥**

अर्थ–जिसके ललाटमें पांच रेखा हों वह सुत और सौभाग्ययुक्त होता है; तीन रेखावाला हीनायु होता है; और एकरेखावाला राजा होता है ॥ ४५५ ॥

**ललाटे दृश्यते यस्य समरेखाचतुष्टयम् ॥**
**ग्रीवारेखाः पंच यस्य शुभं तस्य विनिर्दिशेत् ॥४५६॥**

अर्थ–जिस स्त्रीके ललाटमें समान चार रेखा हों, और जिसकी ग्रीवा ( गर्दन ) में पाँच ५ रेखा हों वह पुरुष सुलक्षण होता है ॥ ४५६ ॥

**ललाटे दृश्यते रेखाश्चतस्रः पाण्डुरूपिकाः ॥**
**अविच्छिन्ना विवर्णाः स्युरशीत्यायुः प्रकीर्त्तितः ॥४५७॥**

अर्थ–जिसके ललाटमें चार रेखा पाण्डु ( भदमैले ) वर्णकी, छिन्न भिन्न कहीं नहीं हुई हों, तो उस पुरुषकी अस्सी ८० वर्षकी आयु होती है ॥ ४५७ ॥

एकरेखा भवेद्यस्या ललाटे शोभना भवेत् ॥
श्रीवत्सं स्वस्तिकं चैव ललाटे दृश्यते सदा ॥ ४५८ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके ललाटमें एक रेखा होय, और जिस स्त्रीके ललाटमें श्रीवत्स अथवा स्वस्तिकका चिह्न हो वह सुलक्षणा होती है ॥४५८॥

## अथ शिरोलक्षणम् ।

छत्राकारं नरेन्द्राणां शिरो दीर्घं च दुःखिनाम् ॥
अधमानां च पापानां येषां स्थूलपटं पुनः ॥ ४५९ ॥

अर्थ-राजाओंका शिर छत्रके आकारका होता है; जिनका लम्बा शिर हो वह दरिद्री होते हैं; जिनका शिर बहुतही मोटा और लम्बा हो वह अधम और पापी होते हैं ॥ ४५९ ॥

शिरालमुन्नतं यस्य प्रशस्तं च शिरो यदि ॥
स राजा पृथिवीं भुंक्ते गजवाजिसमन्विताम् ॥ ४६० ॥

अर्थ-जिसका शिर ऊँचा और चौड़ा तथा नसोंकरके युक्त हो वह राजा हाथी घोड़ोंकरके युक्त होता है, और पृथ्वीका पालन करता है ॥ ४६० ॥

स्थूलशीर्षो नरो यस्तु धनवान् परिकीर्त्तितः ॥
स्थूलाकारेण शीर्षेण मानवो मानवाधिपः ॥ ४६१ ॥

अर्थ-मोटे शिरवाला धनवान् होता है, और कोई आचार्य्य इसप्रकार कहते हैं कि, बड़े मोटे शिरवाला मनुष्योंका सरदार होता है ॥४६१॥

छत्राकारैः शिरोभिस्तु नृपः शिवमयो धनी ॥
चिपिटैश्च पितुर्मृत्युर्धनाढ्याः परिमंडलैः ॥ ४६२ ॥

अर्थ-जिस राजाका शिर छत्राकारका हो वह मंगलमय और धन-

वान् होता है; चपटे शिरवालोंके पिताका मरण होता है, और धनवान् होते हैं ॥ ४६२ ॥

घटमूर्द्धा ध्यानरुचिर्द्विमस्तकः पापकृद्धनैस्त्यक्तः ॥
निम्नं तु शिरो महतां बहुनिम्नमनर्थदं भवति ॥४६३॥

अर्थ-घड़ेके समान मस्तकवालेकी ईश्वरका ध्यान करनेमें रुचि होती है; जिसके शिरमें दो मस्तक प्रतीत हों वह पापी और निर्धन होता है; नीचा शिर महान् पुरुषोंका होता है; और अधिक नीचा अनर्थदायक होता है ॥ ४६३ ॥

रोमशेन शिरालेन प्रांशुना रोगिणी मता ॥
स्थूलमूर्द्धा च विधवा दीर्घशीर्षा च बन्धकी ॥
विशालेनापि शिरसा भवेद्दौर्भाग्यभाजनम् ॥४६४॥

अर्थ-रोम और नसोंयुक्त तथा ऊँचे मस्तकवाली स्त्री रोगिणी होती है; मोटे शिरवाली विधवा होती है, लम्बे शिरवाली कुलटा होती है, चौंड़े शिरवाली दौर्भाग्यका पात्र होती है ॥ ४६४ ॥

विषमेण तु शीर्षेण नरेन्द्रः पुण्यहेतुकः ॥
दीर्घशीर्णशिरो यस्तु दुःखितो नात्र संशयः ॥
गजकुम्भशिरो यस्तु राजा स्यान्नात्र संशयः ॥४६५॥

अर्थ-नीचे ऊँचे शिरवाला राजा पुण्यात्मा होता है; लम्बे और शीर्ण शिरवाला निःसन्देह दुःखित रहता है; और हाथीके शिरके समान अथवा घड़ेके समान शिरवाला निःसन्देह राजा होना है ॥ ४६५ ॥

## अथ केशलक्षणम् ।

विरला मधुराः केशाः स्निग्धा भ्रमरसन्निभाः ॥

मेघवर्णाश्च ये केशास्ते नराः सुखभागिनः ॥ ४६६ ॥

अर्थ–विरल, देखनेमें रमणीय, चिकने, भ्रमरके समान काले, अथवा मेघके समान श्यामवर्ण केश जिन मनुष्योंके होते हैं, वह सुख भोगते हैं ॥ ४६६ ॥

केशाश्चैव पूजिताश्च प्रवासे म्रियते नरः ॥ ४६७ ॥

अर्थ–जिसके केश अतिपूजित हों उस पुरुषकी परदेशमें मृत्यु होती है ॥ ४६७ ॥

बहुमूलैश्च विषमैः स्थूलाग्रैः कपिलैस्तथा ॥
निम्नैश्चैवातिकुटिलैर्घनैरसितमूर्धजैः ॥ ४६८ ॥

अर्थ–जिसके केश एकही जड़मेंसे दो तीन निकलें, और जिसके केश छोटे बड़े हों, अग्रभागमें मोटे हों, कपिलवर्ण हों, नीचे हों, अत्यन्त टेढ़े हों, घने हों, नीले हों, वह पुरुष कुलक्षण होता है ॥ ४६८ ॥

कुटिलैर्मूर्द्धजै रूक्षैः स्थूलैश्च तस्करा नराः ॥
दुःखिताः पुरुषा ज्ञेयाः क्षुधया परिपीडिताः ॥ ४६९ ॥

अर्थ–जिसके केश टेढ़े, रूखे, और मोटे हों वह चोरी करनेवाला होता है, और दुःखी तथा भूँखा रहता है ॥ ४६९ ॥

कृष्णैराकुंचितैः केशैः स्निग्धैरेकैकसम्भवैः ॥
अभिन्नाग्रैश्च मृदुभिर्न चातिबहुभिर्नृपाः ॥ ४७० ॥

अर्थ–जिनके केश काले, मुड़ेहुए, चिकने, एक एक अलग अलग और अग्रभागमें मिलेहुए, तथा कोमल हों और बहुतसे न हों तो उन पुरुषोंको राज्यलाभ होता है ॥ ४७० ॥

परुषाः स्फुटिताग्राश्च विरलाश्च शिरोरुहाः ॥
पिंगला लघवो रूक्षा दुःखदारिद्र्यबन्धदाः ॥ ४७१ ॥

अर्थ-कठोर, अग्रभागमें फटेहुए, छीदे, पीले, छोटे, और रूखे शिरके केश दुःख और दारिद्र्य तथा बन्धनके देनेवाले होते हैं ॥ ४७१ ॥

केशा अलिकुलच्छायाः स्निग्धाः सूक्ष्माः सुकोमलाः ॥
किंचिदाकुंचिताग्राश्च कुटिलाश्चातिशोभनाः ॥४७२॥

अर्थ-जिस स्त्रीके शिरके केश भौंरोंके समूहके समान काले, चिकने, महीन, कुछ कुछ अग्रभागमें मुड़ेहुए, और टेढ़े हों वह स्त्री सुलक्षणा होती है ॥ ४७२ ॥

## अथ शरीरलक्षणम् ।

यद्यद्गात्रं रूक्षं मांसविहीनं शिरावनद्धं च ॥
तत्तदनिष्टं प्रोक्तं विपरीतमतः शुभं सर्वम् ॥ ४७३ ॥

अर्थ-जो शरीर रूक्षवर्ण, मांसरहित, व नसोंसे व्याप्त होता है वह अनिष्ट होता है, और इसके विपरीत लक्षणोंवाला शरीर शुभ होता है ॥ ४७३ ॥

## अथ रोमराजीलक्षणम् ।

मध्यक्षामा च सुभगा भोगाढ्या सुवलित्रया ॥
ऋज्वीतन्वी च रोमाली यस्याः सा शर्म्मनर्म्मभूः ॥४७४॥

अर्थ-जिस स्त्रीका पेट दुर्बल और त्रिवलियुक्त हो वह स्त्री भाग्यवान् और भोगवती होती है, और जिस स्त्रीके पेटपर बहुत महीन सूधे रोमोंकी पंक्ती हो वह सुख भोगती है, और आनन्दसे दिन व्यतीत करती है ॥ ४७४ ॥

कपिला कुटिला स्थूला विच्छिन्ना रोमराजिका ॥
चौरवैधव्यदौर्भाग्यं विदध्यादिह योषिताम् ॥ ४७५ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी रोमराजी कपिलवर्ण, टेढ़ी, मोटी, और कहीं २

उड़ी हुईसी हो वह स्त्री चोरी करनेवाली, दुर्भाग्यवती और विधवा होती है ॥ ४७५ ॥

उद्वृत्तकपिला यस्या रोमराजी निरन्तरम् ॥
अपि राजकुले जाता दासीत्वमुपगच्छति ॥ ४७६ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके पेटके ऊपरके भागमें गोल आकृतिकी और कपिलवर्ण रोमराजी हो वह स्त्री यदि राजकुलमें उत्पन्न हो तौभी दासीका कर्म्म करकेही जन्मको व्यतीत करती है ॥ ४७६ ॥

मृदुभिः सुषमैर्भूपा दक्षिणावर्त्तरोमभिः ॥
विपरीतैः परप्रेष्या निर्द्रव्याः सुखवर्जिताः ॥ ४७७ ॥

अर्थ–जिसके उदरपर कोमल और मनोहर तथा दक्षिणावर्त्त रोमराजी हो वह राजा हो, और इसके विपरित रोमराजी हो तौ वह पुरुष अन्यका दास, धनहीन, और सुखहीन होता है ॥ ४७७ ॥

## अथ क्षेत्रम् ।

त्रिषु विपुलो गम्भीरस्त्रिष्वेव षडुन्नतश्चतुर्ह्रस्वः ॥
सप्तसु रक्ता राजा पंचसु दीर्घश्च सूक्ष्मश्च ॥ ४७८ ॥

अर्थ–जिसके तीन अंग विस्तीर्ण होयँ, तीन गम्भीर होयँ, छः अंग ऊँचे होयँ, चार अंग छोटे होयँ, सात अंग लालवर्ण होयँ, पाँच अंग बड़े होयँ, और पंच अंग सूक्ष्म होयँ वह राजा होता है ॥ ४७८ ॥

नाभिः स्वरः सत्वमिति प्रदिष्टं गम्भीरमेतत् त्रितयं नराणाम् । उरो ललाटं वदनं च पुंसां विस्तीर्णमेतत् त्रितयं प्रशस्तम् ॥ ४७९ ॥

अर्थ–नाभि ( तूंदी ) स्वर और सत्व ये तीनों मनुष्योंके गंभीर होयँ तौ श्रेष्ठ होते हैं; हृदय, ललाट ( मस्तक ), और चेहरा, ये तीन अंग विस्तीर्ण होयँ तौ श्रेष्ठ होते हैं ॥ ४७९ ॥

वक्षोऽथ कुक्षी नखनासिकास्यं कृकाटिका चेति षडुन्नतानि ॥ ह्रस्वानि चत्वारि च लिङ्गपृष्ठं ग्रीवा च जंघे च हितप्रदानि ॥ ४८० ॥ नेत्रान्तपादकरताल्वधरोष्ठजिह्वारक्ता नखाश्च खलु सप्त सुखावहानि ॥ सूक्ष्माणि पंच दशनांगुलिपर्व्वकेशाः साकं त्वचा कररुहाश्च न दुःखितानाम् ॥ ४८१ ॥

अर्थ--हृदय, बगल, नख, नासिका, मुख, और घांटी, ये छः ऊँचे श्रेष्ठ होते हैं; लिंग, पीठ, गरदन, व जाँघ, ये चार छोटे होयँ तो श्रेष्ठ होते हैं. नेत्रोंके अन्त, पादतल, हस्त, तालु, अधर ओष्ठ, जीभ, व नख, ये सप्त रक्तवर्ण होयँ तो सुख होता है; दन्त, अंगुलियोंके पर्व्व, केश, चर्म व नख, ये पांच सूक्ष्म दुःखी पुरुषोंके नहीं होते अर्थात् जिनके ये पांच सूक्ष्म होयँ वे सुखको प्राप्त होते हैं ॥ ४८० ॥ ४८१ ॥

हनुलोचना बाहुनासिकाः स्तनयोरन्तरमत्र पंचमम् ॥
इति दीर्घमिदं तु पंचकं न भवत्येव नृणामभूभृताम् ४८२

अर्थ–ठोंढ़ी, नेत्र, भुजा, नासिका, दोनों स्तनोंका मध्यभाग, ये बड़े पंच अंग राजाओंके विना और किसीके नहीं होते, अर्थात् जिन पुरुषोंके ये अंग दीर्घ होंय वे राजा होते हैं. ये शरीरके शुभ और अशुभ फल कहे ॥ ४८२ ॥

## अथ मृजा ।

छाया शुभाशुभफलानि निवेदयन्ती ॥
लक्ष्म्यामनुष्यपशुपक्षिषु लक्षणज्ञैः ॥
तेजोगुणान् बहिरपि प्रविकाशयन्ती ॥
दीपप्रभा स्फटिकरत्नघटस्थितेव ॥ ४८३ ॥

अर्थ–लक्षण जाननेवाले पुरुषोंको मनुष्य पशु और पक्षियोंमें शुभ अशुभ फल सूचन करती हुई और स्फटिक रत्नके घटमें स्थित दीपप्रभाकी भांति शरीरके भीतर स्थित होकरभी तेजके गुणोंको बाहिर प्रकाश करती हुई छाया देखनी चाहिये, अर्थात् छायासे शुभ अशुभ फलका विचार करना चाहिये ॥ ४८३ ॥

स्निग्धद्विजत्वङ्नखरोमकेशच्छाया सुगन्धा-
च महीसमुत्था ॥ तुष्ट्यर्थलाभाभ्युदयान्
करोति धर्मस्य चाहन्यहनि प्रवृत्तिम् ॥ ४८४ ॥

अर्थ–जिस समय पुरुष आदिके ऊपर भूमिकी छाया होय तब उसके दन्त, चर्म, रोम, और शिरके केश, ये स्निग्ध रहते हैं; और शरीरमें सुगंध रहती है, वह भूमिकी छाया तुष्टी धनका लाभ व अभ्युदय करती है और दिन दिन धर्मकी प्रवृत्ति करती है ॥ ४८४ ॥

स्निग्धा सिताच्छहरिता नयनाभिरामा
सौभाग्यमार्दवसुखाभ्युदयान् करोति ॥
सर्वार्थसिद्धिजननी जननीव चाप्या
छायाफलं तनुभृतां शुभमादधाति ॥ ४८५ ॥

अर्थ–जलकी छाया स्निग्ध श्वेत स्वच्छ और हरी और नेत्रोंको प्रिय लगनेवाली होती है. वह छाया सौभाग्य, कोमलता, सुख और अभ्युदय करती है, सब कार्योंकी सिद्ध करनेवाली होती है; और माताकी भांति पुरुष आदि जीवोंको शुभफल देती है ॥ ४८५ ॥

चण्डाधृष्या पद्महेमाग्निवर्णा युक्ता तेजोविक्रमैः सप्र-
तापैः ॥ आग्नेयीति प्राणिनां स्याज्जयाय क्षिप्रं सिद्धिं
वाञ्छितार्थस्य धत्ते ॥ ४८६ ॥

अर्थ—अग्निकी छाया चंडा ( क्रोधशील ) अधृष्या ( जिसका कोई तिरस्कार न करसके)कमल सुवर्ण और अग्निके तुल्यवर्ण तेज पराक्रम और प्रतापकरके युक्त होती है; ऐसी आग्नेयी छाया जीवोंको जय देती है; और शीघ्रही वांछित अर्थको सिद्धि करती है ॥ ४८६ ॥

मलिनपरुषकृष्णा पापगन्धाऽनिलोत्था
जनयति वधबन्धव्याध्यनर्थार्थनाशान् ॥
स्फटिकसदृशरूपा भाग्ययुक्ताऽत्युदारा
निधिरिव गगनोत्था श्रेयसां स्वच्छवर्णा ॥ ४८७ ॥

अर्थ—वायुकी छाया मलीन रूखी काली और दुर्गंधयुक्त होती है; वह छाया मरण बंधन रोग अनर्थ और धनका नाश करती है; आकाशकी छाया स्फटिकके समान अतिनिर्मल होती है; वह छाया भाग्ययुक्त और अतिउदार होती है, और कल्याणोंकी मानों निधान होती है, और स्वच्छ वर्ण होती है ॥ ४८७ ॥

छायाः क्रमेण कुजलाग्न्यनिलाम्बरोत्थाः
केचिद्वदन्ति दश ताश्च यथाऽनुपूर्व्याः ॥
सूर्याब्जनाभपुरुहूतयमोडुपानां
तुल्यास्तु लक्षणफलैरिति तत्समासः ॥ ४८८ ॥

अर्थ—क्रमसे भूमी; जल, अग्नि, वायु, और आकाशकी यह पाँच छाया हैं. कोई मुनी दश छाया कहते हैं, उनके मतमें पाँच छाया भूमि आदिकी और पाँच छाया सूर्य, विष्णु, इन्द्र, यम, और चन्द्रमाकी हैं परन्तु इन पाँचोंका फल भूमिआदिकी छायाके तुल्यही है; इस कारण संक्षेपसे पाँच छाया कही हैं ॥ ४८८ ॥

## अथ स्वरः ।

करिवृषरथौघभेरी मृदङ्गसिंहाब्दनिःस्वना भूपाः ॥

गर्दभजर्जररूक्षस्वराश्च धनसौख्यसन्त्यक्ताः ॥ ४८९ ॥

अर्थ-हाथी वृष रथसमूह भेरी मृदंग सिंह और मेघके तुल्य जिनका शब्द होय वे राजा होते हैं; गर्दभके तुल्य जिनका शब्द होय, जर्जर ( फटाहुआ ) और रूखा जिनका स्वर होय वे धन और सुखसे हीन होते हैं. यह स्वरका लक्षण है ॥ ४८९ ॥

## अथ सारः—

सप्त भवन्ति च सारा भेदो मज्जा त्वगस्थि शुक्राणि ॥
रुधिरं मांसं चेति प्राणभृतां तत्समासफलम् ॥ ४९० ॥

अर्थ-मेद ( अस्थियोंके भीतरका स्नेह ), मज्जा ( कपालके भीतरका स्नेह ), त्वचा ( चर्म ), अस्थि, वीर्य, रुधिर और मांस ये सात प्राणियोंके शरीरमें सार होते हैं· सो संक्षेपसे इनका फल कहा ॥ ४९० ॥

ताल्वोष्ठदन्तपाली जिह्वानेत्रान्तपायुकरचरणैः ॥
रक्तैस्तु रक्तसारा बहुसुखवनितार्थपुत्रयुताः ॥ ४९१ ॥

अर्थ-जिनके तालु ओष्ठ दंत मांस जिह्वा नेत्रोंके अंत गुदा हाथ और पैर रक्तवर्ण होयँ वे रुधिरसार होते हैं, अर्थात् उनके शरीरमें रुधिर सार होता है. रुधिरसारवाले पुरुष बहुत सुख स्त्री धन और पुत्रोंकरके युक्त होते हैं ॥ ४९१ ॥

स्निग्धत्वक्का धनिनोमृदुभिःसुभगाविचक्षणास्तनुभिः ॥
मज्जा मेदः साराः सुशरीराः पुत्रवित्तयुक्ताः ॥ ४९२ ॥

अर्थ-स्निग्ध त्वचा होय तौ धनी होते हैं; मृदु त्वचा होय तौ सुभग होते हैं; और तनु त्वचा होय तौ पंडित होते हैं, मज्जा और मेद जिनके शरीरमें सार होयँ उनका देह सुन्दर होता है, और पुत्र और धन करके युक्त होते हैं ॥ ४९२ ॥

**स्थूलास्थिरस्थिसारो बलवान् विद्यान्तगः सुरूपश्च ॥**
**बहुगुरुशुक्राः सुभगा विद्वांसो रूपवन्तश्च ॥ ४९३ ॥**

अर्थ–जिसके शरीरमें अस्थिसार होय उसके हाथ मोटे होते हैं; वह पुरुष बलवान् विद्याके अन्तको पहुंचनेवाला और सुरूप होता है; जिनका वीर्य बहुत और घना होय वे वीर्यसार होते हैं; वीर्यसार पुरुष सुभग विद्वान् और रूपवान् होते हैं ॥ ४९३ ॥

## अथ संहतिः–

**उपचितदेहो विद्वान् धनी सुरूपश्च मांससारो यः ॥**
**संघात इति च सुश्लिष्टसन्धिता सुखभुजो ज्ञेयाः ॥४९४॥**

अर्थ–पुष्ट शरीरवाला प्राणी मांससार होता है; मांससार मनुष्य विद्वान् धनी और सुरूप होता है. यह सारका लक्षण कहा. अंगोंकी संधियोंकी सुश्लिष्टताको संघात ( संहति ) कहते हैं. संघातवाले पुरुष सुखभोगी होते हैं ॥ ४९४ ॥

## अथ स्नेहः–

**स्नेहः पंचसु लक्ष्यो वाग्जिह्वादन्तनेत्रनखसंस्थः ॥**
**सुतधनसौभाग्ययुताः स्निग्धैस्तैर्निर्द्धना रूक्षैः ॥४९५॥**

अर्थ–वचन, जिह्वा, दन्त, नेत्र और नख, इन पांचोंमें स्थित स्नेह देखना चाहिये. ये पांचों जिनके स्निग्ध होयँ वे पुत्र धन और सौभाग्य करके युक्त होते हैं. और ये पांचों जिनके रूक्ष होयँ वे निर्धन होते हैं ॥ ४९५ ॥

## अथ वर्णाः–

**द्युतिमान् वर्णः स्निग्धः क्षितिपानां मध्यमः सुतार्थवताम्**
**रूक्षो धनहीनानां शुद्धः शुभदो न संकीर्णः ॥ ४९६ ॥**

अर्थ-रंग स्निग्ध तथा कान्तियुक्त होय तौ वह राजा होते हैं, मध्यम श्रेणीका वर्ण होय तौ धन और पुत्रवान् होता है; निर्धनोंका रूक्षवर्ण होता है, शुद्ध वर्ण शुभ और संकीर्ण वर्ण अशुभ होता है ॥ ४९६ ॥

## अथानूकम्-

साध्यमनूकं वक्त्वाद् गोवृषशार्दूलसिंहगरुडमुखाः ॥
अप्रतिहतप्रतापा जितरिपवो मानवेन्द्राश्च ॥ ४९७ ॥

अर्थ-मुखको देखकर पूर्वजन्म जानै, गौ, बैल, सिंह, व्याघ्र, और गरुड़के तुल्य जिनके मुख होयँ उनका पूर्व जन्म शुभ होता है और वे पुरुष अप्रतिहतप्रतापी शत्रुओंको जीतनेवाले और राजा होते हैं ॥ ४९७ ॥

वानरमहिषवराहाजतुल्यवदनाः सुतार्थसुखभाजः ॥
गर्दभकरभप्रतिमैर्मुखैः शरीरैश्च निःस्वसुखाः ॥४९८॥

अर्थ-बन्दर, महिष, सूकर, और बकरेके तुल्य जिनके मुख होयँ वे शास्त्रधन और सुखकरके युक्त होते हैं; इनका पूर्वजन्म मध्यम है; गर्दभ और ऊँटके तुल्य जिनके मुख और शरीर होयँ वे पुरुष निर्धन और सुखहीन होते हैं, इनका पूर्वजन्म अशुभ है; यह अनूक (पूर्वजन्म) का लक्षण कहा है ॥ ४९८ ॥

## अथोन्मानम्-

अष्टशतं षण्णवतिः परिमाणं चतुरशीतिरिति पुंसाम् ॥
उत्तमसमहीनानामंगुलसंख्या स्वमानेन ॥ ४९९ ॥

अर्थ-अपनी अंगुलीसे एकसौ आठ अंगुल ऊंचा होय वह पुरुष उत्तम होता है; छियानबे अंगुली ऊंचा होय वह मध्यम और जो पुरुष

अपने अंगुलोंसे चौरासी अंगुल ऊंचा होय वह मध्यम होता है, यह ऊँचाईका लक्षण कहा है. पैरके अग्रसे शिरके मध्यमभागपर्यंत मापना चाहिये ॥ ४९९ ॥

## अथ मानम् ।

भारार्धतनुःसुखभाक्तुलितोऽतोदुःखभाग्भवत्यूनः ॥
भारोऽतीवाढ्यानामध्यर्द्धः सर्वधरणीशः ॥ ५०० ॥

अर्थ-दो हजारपलका एकभार होता है. तोलनेसे जिस पुरुषका बोझ आधा भार होय वह सुख भोगता है; इससे न्यून होय तो दुःखी होता है; एक भार जिनका बोझ होय वे अतिधनवान् होते हैं; डेढ़भार जिनके शरीरका बोझ होय वे चक्रवर्त्ती राजा होते हैं ॥ ५०० ॥

विंशतिवर्षा नारी पुरुषः खलु पंचविंशतिमिताब्दः ॥
अर्हति मानोन्मानं जीवति भागे चतुर्थे वा ॥ ५०१ ॥

अर्थ-बीस वर्षकी अवस्थामें स्त्री और पच्चीस वर्षकी अवस्थामें पुरुष मापने और तोलने चाहिये. अथवा गणितआदिसे जितना उनका आयुष निश्चित हुआ हो उसकी चौथाई बीतचुके उस समय मापे और तोले ॥ ५०१ ॥

## अथ प्रकृतिः ।

भूजलशिख्यनिलाम्बरसुरनररक्षःपिशाचकतिरश्चाम् ॥
सत्त्वेन भवति पुरुषो लक्षणमेतद्भवत्येषाम् ॥ ५०२ ॥

अर्थ-भूमी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, देवता, मनुष्य, राक्षस, पिशाच, और तिर्यक् ( पशुपक्षी ) इनका सत्व ( प्रकृति ) पुरुषमें होता है, उनका वह लक्षण कहते हैं ॥ ५०२ ॥

महीस्वभावःशुभपुष्पगन्धःसम्भोगवान् सुश्वसनः

।ोयपायो प्रियाभिलाषी
रसभोजनश्च ॥ ५०३ ॥

अर्थ—भूमिप्रकृतिवाले मनुष्यका सुन्दर कमलआदि पुष्पोंके समान गंध होता है· वह पुरुष भोगी सुगन्धश्वाशकरके युक्त और स्थिरस्वभाव होता है; जलप्रकृतिका मनुष्य बहुत जल पीता है, मीठा बोलनेवाला होता है; और मधुरआदि भोजन करनेमें उसकी रुचि होती है ॥ ५०३ ॥

अग्निप्रकृत्या चपलोऽतितीक्ष्णश्चण्डः क्षुधालुर्बहु-
भोजनश्च ॥ वायोः स्वभावेन चलः कृशश्च क्षिप्रं
च कोपस्य वशं प्रयाति ॥ ५०४ ॥

अर्थ—अग्निप्रकृतिका मनुष्य चपल अतितीक्ष्ण और क्रूर होता है, क्षुधाको नहीं सह सक्ता और बहुत भोजन करता है· वायुप्रकृतिका मनुष्य चंचल और दुर्बल होता है; और शीघ्रही क्रोधवश हो जाता है ॥ ५०४ ॥

खप्रकृतिर्निपुणो विवृतास्यः शब्दगतेः कुशलः सुषिराङ्गः।
त्यागयुतःपुरुषोमृदुकोपःस्नेहरतश्च भवेत् सुरसत्त्वः ५०५

अर्थ—आकाशप्रकृतिका मनुष्य सब काममें निपुण होता है; मुख खुला रहता है, शब्दगतिमें चतुर होता है, और उसके अंग छिद्रयुक्त होते हैं. देवप्रकृतिका मनुष्य त्यागी अल्पक्रोधी और प्रीतियुक्त होता है ॥ ५०५ ॥

मर्त्यसत्वसंयुतो गीतभूषणप्रियः ॥
संविभागशीलवान् नित्यमेव मानवः ॥ ५०६ ॥

अर्थ—मनुष्यप्रकृतिके मनुष्यको गीत और भूषण प्रिय होते हैं और नित्य वह मनुष्य संविभागवाला ( बांधवोंके ऊपर उपकार करनेवाला ) और शीलवान् होता है ॥ ५०६ ॥

तीक्ष्णप्रकोपः खलचेष्टितश्च पापश्च सत्त्वेन निशाचराणाम् ॥ पिशाचसत्त्वश्चपलो मलाक्तो बहुप्रलापी च समुल्वणाङ्गः ॥ ५०७ ॥

अर्थ—राक्षसप्रकृतिका मनुष्य बहुत क्रोधी दुष्टस्वभाव और पापी होता है; पिशाचप्रकृतिका मनुष्य चंचल, मलिन शरीर, बहुत बकनेवाला और स्थूल अंगोंकरके युक्त होता है ॥ ५०७ ॥

भीरुः क्षुधालुर्बहुभुक् च यः स्याज्ज्ञेयः स सत्त्वेन नरस्तिरश्चाम् ॥ एवं नराणां प्रकृतिः प्रदिष्टा यल्लक्षणज्ञाः प्रवदन्ति सत्त्वम् ॥ ५०८ ॥

अर्थ—तिर्यक्प्रकृतिका मनुष्य भीरु ( डरनेवाला ), क्षुधालु ( क्षुधा न सहनेवाला ) और बहुत भोजन करनेवाला जानना चाहिये. इस भांति मनुष्योंकी प्रकृति कही है, जिस प्रकृतिको पुरुषलक्षण जाननेवाले विद्वान् सत्व कहते हैं यह प्रकृतिका लक्षण कहा है ॥ ५०८ ॥

## अथ गतिः ।

शार्दूलहंससमदद्विपगोपतीनां
तुल्या भवन्ति गतिभिः शिखिना च भूपाः ॥
येषां च शब्दरहितं स्तिमितं च यातं
तेऽधीश्वरा द्रुतपरिप्लुतगा दरिद्राः ॥ ५०९ ॥

अर्थ—शार्दूल (बाघ), हंस, मस्त हाथी, वृष और मयूरके समान जिनकी गति होय वे राजा होते हैं; जिनकी गति शब्दरहित और मंद होय वे धनवान् होते हैं; शीघ्र और मेंडककी भांति उछलते हुए जो पुरुष गमन करैं वे दरिद्र होते हैं; यह गतिका लक्षण कहा है ॥ ५०९ ॥

श्रान्तस्य यानमशनं च बुभुक्षित

पानं तृषापरिगतस्य भयेषु रक्षा ॥
एतानि यस्य पुरुषस्य भवन्ति काले
धन्यं वदन्ति खलु तं नरलक्षणज्ञाः ॥ ५१० ॥

अर्थ–थकेहुएको यान ( सवारी ) भूखेको भोजन, प्यासेको जल आदि पान और भयके समय रक्षा ये सब बात जिस पुरुषको अवसरके ऊपर प्राप्त होजाँय मनुष्यलक्षण जाननेवाले उस पुरुषका धन्य ( शुभ लक्षण ) कहते हैं ॥ ५१० ॥

पुरुषलक्षणमुक्तमिदं मया
मुनिमतान्यवलोक्य समासतः ॥
इदमधीत्य नरो नृपसम्मतो
भवति सर्वजनस्य च वल्लभः ॥ ५११ ॥

अर्थ–अनेक मुनियोंके मत देखकर संक्षेपसे यह पुरुष लक्षण हमने कहा है. इसको पढ़कर मनुष्य राजाको मान्य और सब मनुष्योंका प्यारा होता है ॥ ५११ ॥

## अथ बृहत्संहितामतानुसारेण स्त्रीलक्षणम् ।

स्निग्धोन्नताग्रतनुताम्रनखौ कुमार्य्याः
पादौ समोपचितचारुनिगूढगुल्फौ ॥
श्लिष्टांगुली कमलकान्तितलौ च यस्या-
स्तामुद्वहेद्यदि भुवोऽधिपतित्वमिच्छेत् ॥ ५१२ ॥

अर्थ–जिस कन्याके पाद स्निग्ध ऊँचे आगेसे पतले और लाल रंगके नखोंकरके युक्त होयँ, समान पुष्ट सुन्दर और निगूढ़ गुल्फोंकरके युक्त होयँ, अंगुली उनकी परस्पर श्लिष्ट होयँ और कमलकी कान्तिके तुल्य जिनके तलोंकी कान्ति होय उस कन्यासे विवाह करै, जो भूमिपति बनना चाहै ॥ ५१२ ॥

मत्स्यांकुशाब्जयववज्रहलासिचिह्ना-
वस्वेदिनौ मृदुतलौ चरणौ प्रशस्तौ ॥
जंघे च रोमरहिते विशिरे सुवृत्ते
जानुद्वयं सममनुल्बणसन्धिदेशम् ॥ ५१३ ॥

अर्थ–जिन चरणोंमें मत्स्य, अंकुश, पद्म, यव, वज्र, हल और तलवारका चिह्न होय, पसीना आता न होय, तलुए कोमल हों, वह प्रशंसाके योग्य होते हैं. रोमरहित, नसोंरहित, और गोल जङ्घा तथा जिनके जोड़ उल्बण न हों ऐसे जानु प्रशंसाके योग्य होते हैं॥ ५१३ ॥

ऊरू घनौ करिकरप्रतिमावरोमा-
वश्वत्थपत्रसदृशं विपुलं च गुह्यम् ॥
श्रोणीललाटमुरुकूर्मसमुन्नतं च
गूढो मणिश्च विपुलां श्रियमादधाति ॥ ५१४ ॥

अर्थ–घने, रोमरहित, और हाथीकी सूंड़के समान ऊरु, और पीपलके पत्तेके आकारवाला चौड़ा गुह्यस्थान, और कमर तथा मस्तक कछुवेके समान ऊँचा, और गूढ मणि, यह अति लक्ष्मीके देनेवाले होते हैं ॥ ५१४ ॥

विस्तीर्णमांसोपचितो नितम्बो गुरुश्च धत्ते रशना-
कलापम् ॥ नाभिर्गभीरा विपुलाङ्गनानां प्रदक्षिणा-
वर्त्तगता प्रशस्ता ॥ ५१५ ॥

अर्थ–विस्तीर्ण मांसकरके पुष्ट और गुरु ( भारी ) नितंब होय जो काचीकलापको धारण करै, वह शुभ होता है. गंभीर विस्तीर्ण और दक्षिणा नाभी होय तो स्त्रियोंको शुभ होती है ॥ ५१५ ॥

मध्यं स्त्रियास्त्रिवलिनाथमरोमशं च वृत्तौ घनाव-

विषमौ कठिनावुरस्यौ ॥ रोमापवर्जितमुरो मृदु चाङ्गनानां ग्रीवा च कम्बुनिचितार्थसुखानि धत्ते ॥ ५१६ ॥

अर्थ—स्त्रीका मध्यभाग त्रिवलिकरके युक्त और रोमोंसे हीन होय, दोनों स्तन गोल पुष्ट समान और कठोर होयँ, रोमरहित और कोमल छाती होय और ग्रीवा शंखके तुल्य तीन रेखाओंकरकें युक्त होय तौ धन और सुख देती है ॥ ५१६ ॥

बन्धुजीवकुसुमोपमोऽधरो मांसलो रुचिरविम्बरूपभृत् ॥ कुन्दकुड्मलनिभाः समा द्विजा योषितां पतिसुखामितार्थदाः ॥ ५१७ ॥

अर्थ—बन्धुजीवपुष्प ( गुलदुपहरके ) तुल्य रक्तवर्ण, मासल सुन्दर बिम्बफलके रूपको धारण करनेवाला अधर ( नीचेका होंठ ) होय कुन्दपुष्पकी कलीके तुल्य और सारे समान दन्त होंय तौ स्त्रियोंको पतिसुख और बहुत धन देनेवाले होते हैं ॥ ५१७ ॥

दाक्षिण्ययुक्तमशठं परपुष्टहंसवल्गुप्रभाषितमदीनमनल्पसौख्यम् ॥ नासा समा समपुटा रुचिरा प्रशस्ता दृङ्नीलनीरजदलद्युतिहारिणी च ॥ ५१८ ॥

अर्थ—सरलतायुक्त शठतासे रहित कोकिल और हंसके शब्दके तुल्य रम्य और दीनतासे रहित जिस स्त्रीका वचन होय वह बहुत सुख देती है समान सम पुटोंकरके युक्त और सुन्दर नासिका होय तौ श्रेष्ठ होती है. नीलकमलके दलोंकी कान्तिको हरनेवाली दृष्टि शुद्ध होती है ॥५१८॥

नो सङ्गते नातिपृथू न लम्बे शस्ते भ्रुवौ बालशशांकवक्रे ॥ अर्द्धेन्दुसंस्थानमरोमशं च शस्तं ललाटं न नतं न तुङ्गम् ॥ ५१९ ॥

अर्थ—दोनों मिले होयँ, बहुत चौंड़े न हों, न लम्बी हों और बाल-

चन्द्रके आकारवाली ( टेढ़ी ) भौंह होयँ तो शुभ होती हैं; अर्धचन्द्रके आकारसे महीन, न नीचा और न ऊँचा ऐसा ललाट शुभ होता है ॥५१९॥

**कर्णयुग्ममपि युक्तमांसलं शस्यते मृदु समं समाहितम् ॥ स्निग्धनीलमृदुकुंचितैकजा मूर्द्धजाः सुखकराः समं शिरः ॥ ५२० ॥**

अर्थ–दोनों कान थोड़े मांसकरके युक्त होयँ कोमल समान और संलग्न होयँ तो शुभ होते हैं. स्निग्ध अतिकृशवर्ण कोमल कुंचित एक रोमकूपमें एक २ उत्पन्न ऐसे केश सुख करते हैं. शिरभी शुभ अर्थात् न नीचा होय, न उन्नत होय तो शुभ होता है ॥ ५२० ॥

**भृङ्गारासनवाजिकुञ्जररथश्रीवृक्षयूपेषुभिर्मालाकुण्डलचामरांकुशयवैः शैलैर्ध्वजैस्तोरणैः ॥ मत्स्यस्वस्तिकवेदिकाव्यजनकैः शंखातपत्राम्बुजैः पादे पाणितलेऽपि वै युवतयो गच्छंति राज्ञो पदम् ॥ ५२१ ॥**

अर्थ–जिन स्त्रियोंके पादतलोंमें और हस्त तलोंमें भृंगार ( झारी ), आसन, घोड़ा, हाथी, रथ, बिल्व, वृक्ष, यूप (यज्ञस्तंभ), बाण, माला, कुंडल चामर, अंकुश, यव, पर्वत, ध्वज, तोरण, मत्स्य, स्वस्तिक, यज्ञवेदी, व्यजन ( पंखा ), शंख, छत्र, और कमलके आकारकी रेखा होयँ वे स्त्रियाँ राजाकी रानी होती हैं ॥ ५२१ ॥

**निगूढमणिबन्धनौ तरुणपद्मगर्भोपमौ करौ नृपतियोषितां तनुविकृष्टपर्वांगुली ॥ न निम्नमति नोन्नतं करतलं सुरेखान्वितं करोत्यविधवां चिरं सुतसुखार्थसम्भोगिनीम् ॥ ५२२ ॥**

अर्थ–जिनके मणिबंध ऊँचे न होयँ, नवीन कमलके गर्भसमान पतले और लम्बे पर्वोंवाली अंगुलियोंकरके युक्त ऐसे हाथ रानियों-

के होते हैं. न बहुत नीचा न बहुत ऊँचा और उत्तम रेखाओंकरके युक्त करतल जिस स्त्रीका होय वह विधवा नहीं होती और बहुत काल पुत्रसुख और धनका भोग करती है ॥ ५२२ ॥

**मध्यांगुलिं या मणिबन्धनोत्था रेखा गता पाणितलेऽङ्गनायाः ॥ ऊर्ध्वस्थिता पादतलेऽथवा या पुंसोऽथवा राज्यसुखाय या स्यात् ॥ ५२३ ॥**

अर्थ—स्त्रीके अथवा पुरुषके हाथमें मणिबंधसे निकलकर मध्यमा अंगुलिपर्य्यंत जो रेखा जाय अथवा पादतलमें जो ऊर्ध्व रेखा होय वह रेखा राज्यसुख करती है ॥ ५२३ ॥

**कनिष्ठिकामूलभवा गता या प्रदेशिनी मध्यमिकान्तरालम् ॥ करोति रेखा परमायुषः सा प्रमाणन्यूना तु तदूनमायुः ॥ ५२४ ॥**

अर्थ—कनिष्ठाके मूलसे निकल कर तर्जनी और मध्यमाके मध्यभागपर्य्यंत जो रेखा जाय उससे आयुष्यका प्रणाम होता है जो वह रेखा पूरी होय तो आयुष पूरा होता है, और न्यून रेखा होय तो उसके अनुसार आयुषको न्यून जानै ॥ ५२४ ॥

**अंगुष्ठमूले प्रसवस्य रेखाः पुत्रा बृहत्यः प्रमदास्तु तन्व्यः ॥ अच्छिन्नदीर्घा बृहदायुषां ताः स्वल्पायुषां छिन्नलघुप्रमाणाः ॥ ५२५ ॥**

अर्थ—अंगुष्ठके मूलमें सन्तानकी रेखा होती हैं. उनमें बड़ी रेखा पुत्रोंकी और छोटी रेखा कन्याओंकी होती हैं. मध्यसे जो रेखा टूटी न होंय वे दीर्घ आयुषवालोंकी होती हैं; टूटी और छोटी रेखा अल्पायुष संतानोंकी होती है ॥ ५२५ ॥

**इतीदमुक्तं शुभमङ्गनानामतो विपर्यस्तमनिष्टमुक्तम् ॥**

विशेषतोऽनिष्टफलानि यानि समासतस्तान्यनुकीर्त्तयामि ॥ ५२६ ॥

अर्थ—यह स्त्रियोंके शुभ लक्षण कहे, इससे विपरीत लक्षण होंय तौ अशुभ होते हैं, विशेषकरके जो अशुभलक्षण हैं उनको हम अब संक्षेपसे कहते हैं ॥ ५२६ ॥

कनिष्ठिका वा तदनन्तरा वा महीं न यस्याः स्पृशति स्त्रियाः स्यात् ॥ गताऽथवांगुष्ठमतीत्य यस्याः प्रदेशिनी सा कुलटाऽतिपापा ॥ ५२७ ॥

अर्थ—जिस स्त्रीके पैरकी कनिष्ठिका अथवा कनिष्ठिकाके समीपकी अंगुली अनामिका भूमिको स्पर्श न करै अथवा जिसके पैरकी तर्जनी अंगूठेसे अधिक लंबी हो वह स्त्री व्यभिचारणी और पापिनी होती है ॥ ५२७ ॥

उद्बद्धाभ्यां पिण्डिकाभ्यां शिराले शुष्के जंघे रोमशे चातिमांसे ॥ वामावर्त्तं निम्नमल्पं च गुह्यं कुम्भाकारं चोदरं दुःखितानाम् ॥ ५२८ ॥

अर्थ—ऊपरको खिंचीहुई पिंडीलियोंकरके नाड़ियोंसे व्याप्त सूखी रोमोंकरके व्याप्त अथवा बहुत पुष्ट जंघा जिन स्त्रियोंकी होयँ, वामावर्त्तवाले रोमोंकरके युक्त निम्न और छोटा गुह्य ( भग ) जिनका होय और घटके आकार जिनका पेट होय वे स्त्री दुःख भोगती हैं ॥ ५२८ ॥

ह्रस्वया निःस्वता दीर्घया कुलक्षयः ॥
ग्रीवया पृथूत्थया योषितः प्रचण्डता ॥ ५२९ ॥

अर्थ—जिस स्त्रीकी ग्रीवा छोटी होय वह निर्धन होती है; बहुत लंबी ग्रीवा होय तौ कुलक्षय होता है; और जिसकी ग्रीवा मोटी होय वह स्त्री क्रूरस्वभाववाली होती है ॥ ५२९ ॥

**नेत्रे यस्याः केकरपिङ्गले वा सा दुःशीला श्यावलोलेक्षणा च ॥ कूपौ यस्या गण्डयोश्च स्मितेषु निःसन्दिग्धं बन्धकीं तां वदन्ति ॥ ५३० ॥**

अर्थ–जिस स्त्रीके नेत्र केकर ( भैंगे ) अथवा पिंगलवर्ण होयँ वह और जिसके नेत्र श्याम रंगके और चंचल होयँ वह स्त्री व्यभिचारिणी होती है, हँसनेके समय जिस स्त्रीके कपोलोंपर गढे पडैं वह स्त्री निःसन्देह व्यभिचारिणी होती है ॥ ५३० ॥

**प्रविलम्बिनि देवरं ललाटे श्वसुरं हन्त्युदरे स्फिचोः पतिं च ॥ अतिरोमचयान्वितोत्तरौष्ठौ न शुभा भर्तुरतीव या च दीर्घा ॥ ५३१ ॥**

अर्थ–जिसका ललाट लंबमान होय वह स्त्री देवरको मारती है, जिसका उदर लंबमान होय वह श्वशुरको और जिस स्त्रीके स्फिक लंबमान होयँ वह पतिको मारती है; जिस स्त्रीके ऊपरले ओष्ठपर बहुत रोम होयँ और जो स्त्री बहुत लंबी होय वह पतिके लिये शुभ नहीं होती ॥ ५३१ ॥

**स्तनौ सरोमौ मलिनोल्बणौ च क्लेशं दधाते विषमौ च कर्णौ ॥ स्थूलाः कराला विषमाश्च दन्ताः क्लेशाय चौर्याय च कृष्णमांसाः ॥ ५३२ ॥**

अर्थ–जिस स्त्रीके स्तन और कर्ण रोमयुक्त, मलिन, उत्कट और विषम होयँ वे क्लेश देते हैं; जिसके दन्त स्थूल कराल और विषम होयँ वह स्त्री क्लेश भोगती है; काले मांसकरके युक्त जिसके दन्त होयँ वह चोर होती है ॥ ५३२ ॥

**क्रव्यादरूपैर्वृककाककंकसरीसपोलूकसमानचिह्नैः ॥ शुष्कैः शिरालैर्विषमैश्च हस्तैर्भवन्ति नार्य्यः सुखवित्तहीनाः ॥ ५३३ ॥**

अर्थ-मास खानेवाले गीध आदि पक्षी, वृक ( भेड़िया ), काक, कंक, सर्प, उल्लूके आकारकी जिन स्त्रियोंके हाथमें रेखा होंय, जिनके हाथ सूखे, नाड़ियोंसे व्याप्त और विषम होयँ वे स्त्रियां सुख और धनसे हीन होती हैं ॥ ५३३ ॥

यातूत्तरोष्ठेन समुन्नतेन रूक्षाग्रकेशी कलहप्रिया सा ॥ प्रायो विरूपासु भवन्ति दोषा यत्राकृतिस्तत्र गुणा वसन्ति ॥ ५३४ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीका ऊपरला ओष्ठ ऊंचा होय और केशोंके अग्र रूखे होयँ वह स्त्री कलहप्रिया होती है; प्रायः कुरूपा स्त्रियोंमें दोष होते हैं, जिसका उत्तम रूप होय उनमें गुण होते हैं ॥ ५३४ ॥

पादौ सगुल्फौ प्रथमं प्रदिष्टौ जंघे द्वितीयं च सजानुचक्रे ॥ मेढ्रोरुमुष्कं च ततस्तृतीयं नाभिः कटिश्चेति चतुर्थमाहुः ॥ ५३५ ॥

अर्थ-दशाभागके लिये शरीरके दशभाग कहते हैं, पाद और गुल्फ ( टंकने ) पहिलाभाग. जानुचक्रों सहित जंघा दूसरा भाग. लिंग, ऊरु, वृषण, तीसरा भाग. नाभि, कटि, चौथाभाग ॥ ५३५ ॥

उदरं कथयन्ति पञ्चमं हृदयं षष्ठमतः स्तनान्वितम् ॥ अथ सप्तममङ्गजत्रुणी कथयन्त्यष्टममोष्ठकन्धरे ॥५३६॥

अर्थ-उदर पाचवां भाग, स्तनसहित हृदय छठा भाग, कंधे और जत्रु ( कंधोंकी संधि ) सातवां भाग, ओष्ठ और ग्रीवा आठवां भाग ॥५३६॥

नवमं नयने च सभ्रुवौ सललाटं दशमं शिरस्तथा ॥ अशुभेष्वशुभं दशाफलं चरणाद्येषु शुभेषु शोभनम् ५३७

अर्थ-नेत्र और भौंह नवमभाग, मस्तक और शिर दशम भाग,

यदि यह अशुभ होयँ तो दशाफल अशुभ होता है, और शुभ होयँ तो दशाफल शुभ होता है ॥ ५३७ ॥

## अथान्यानि विविधलक्षणानि ।

गर्भात् प्रभृत्यरोगो यः शनैः समुपचीयते ॥
शरीरज्ञानविज्ञानैः स दीर्घायुः समासते ॥ ५३८ ॥

अर्थ–जो गर्भसे लेकर अरोग होता है, उसका शरीर, ज्ञान और विज्ञान हौले हौले वृद्धिको प्राप्त होता है वह दीर्घायु होता है ॥ ५३८ ॥

तत्र महापाणिपदपार्श्वपृष्ठस्तनाग्रदशनवदनस्कन्धललाटं दीर्घांगुलिपर्वोच्छ्वासप्रेक्षणबाहुं विस्तीर्णभ्रूस्तनान्तरोरस्कं ह्रस्वजंघानेत्रग्रीवं गम्भीरसत्वस्वरनाभिमनूच्चैर्बद्धस्तनमुपचितमहारोमशकर्णं पश्चान्मस्तिष्कं स्नातानुलिप्तं मूर्द्धानुपूर्वविशुष्यमाणशरीरं पश्चाच्च विशुष्यमाणहृदयं पुरुषं जानीयाद्दीर्घायुः खल्वयमिति ॥ तमेकान्तेनोपक्रमेत् ॥ एभिर्लक्षणैर्विपरीतैरल्पायुर्मिश्रैर्मध्यमायुरिति ॥

अर्थ–जिसके हाथ, पैर, पसली, पीठ, स्तनोंका अग्रभाग, दन्त, कन्धे, और ललाट ये बड़े हों, और जिसके अंगुलियोंके पोरुए, बाहु और नेत्र लम्बे हों, जिसकी भौंह, दोनों स्तनोंका मध्यभाग, और वक्षःस्थल ये अवयव चौड़े हों; जिसके जंघा, लिङ्ग, ग्रीवा ये अवयव छोटे हों; और जिसके स्वर, नाभि और बुद्धि गम्भीर हों, और जिसके दोनों स्तन नीचे और दृढ़ हों, जिसके कर्ण चौड़े और बड़े २ बालोंकरके युक्त हों, जिसका मस्तिष्क पीछेकी ओरको हो, जिसके स्नान करनेके अनन्तर किसी प्रकारका शरीरमें गन्ध लेपन करनेपर मस्तकसे लेकर शरीरके नीचेका भाग सम्पूर्ण शुष्क होजाय, परन्तु

हृदय सब शरीर सूखनेके पीछे सूखै वह पुरुष दीर्घायु होता है और जो पुरुष इन कहेहुए लक्षणोंसे विपरीत लक्षणोंकरके युक्त हो उसकी अल्पायु होती है और जिस पुरुषके शरीरमें उपरोक्त लक्षणोंमेंसे कुछ थोड़े लक्षण हों वह मध्यमायु होता है, ॥

मध्यमस्यायुषो ज्ञानमतऊर्ध्वं निबोध मे ॥
अधस्तादक्षयोर्यस्य लेखाः स्युर्व्यक्तमायताः॥५३९॥
द्वे वा तिस्रोऽधिका वापि पादौ कर्णौ च मांसलौ ॥
नासाग्रमूर्ध्वं च भवेदूर्ध्वलेखाश्च पृष्ठतः ॥
यस्य स्युस्तस्य परममायुर्भवति सप्ततिः ॥ ५४० ॥

अर्थ–अब मध्यमायु पुरुषके लक्षण कहते हैं, सो सुनो ! जिसके दोनों नेत्रोंके अधोभागमें प्रकट और चौड़ी और दो तीन अथवा बहुतसी रेखा हों और जिसके दोनों चरणों और दोनों कान मांसमय हों, जिसकी पीठपर ऊर्ध्वरेखाका चिन्ह हो, और जिसकी नासिका अग्रभागमें ऊँची हो उस पुरुषकी अवस्था सत्तर ७० वर्षकी होती है ॥ ५३९ ॥ ५४० ॥

गूढसन्धिशिरास्नायुः संहताङ्गः स्थिरेन्द्रियः ॥
उत्तरोत्तरसुप्रेक्ष्यो यः स दीर्घायुरुच्यते ॥ ५४१ ॥

अर्थ–जिसके शरीरकी सन्धि, शिरा, और स्नायु छुपेहुए हों, जिसके अङ्गप्रत्यङ्ग दृढ़ हों, सम्पूर्ण इन्द्रियाँ स्थिर और शरीर उत्तरोत्तर दर्शनीय हो वह चिरकाल जीवित रहता है ॥ ५४१ ॥

जघन्यस्यायुषो ज्ञानमतऊर्ध्वं निबोध मे ॥
ह्रस्वानि यस्य पर्वाणि सुमहच्चापि मेहनम् ॥ ५४२॥
तथोरस्यवलीढानि न च स्यात् पृष्ठमायतम् ॥

ऊर्ध्वं च श्रवणौ स्थानान्नासा चोच्चा शरीरिणः ॥५४३॥
हसतो जल्पतो वापि दन्तमांसं प्रदृश्यते ॥
प्रेक्षते यश्च विभ्रान्तं स जीवेत् पंचविंशतिम् ॥५४४॥

अर्थ–जो पुरुष थोड़े काल जीवित रहता है अब उसके लक्षण कहते हैं, जिसकी अंगुलियोंके पोरुए छोटे हों, लिङ्ग बड़ा हो, वक्षःस्थल रोम हीन और मांसहीन होय, पीठ श्रेष्ठ न होय, कर्ण अपने स्थानसे कुछ ऊँचे हों, नासिका ऊंची होय, बोलते समय अथवा हँसते समय दातोंका मांस ( मसूड़े ) दीखजाते हों, और जो पुरुष उन्मत्तके तुल्य चारों ओरको देखता हो, वह पुरुष केवल पचीस २५ वर्षपर्य्यन्त जीवित रहता है ॥ ५४२ ॥ ५४३ ॥ ५४४ ॥

अथ पुनरायुषो विज्ञानार्थमङ्गप्रत्यङ्गप्रमाणसारानुपदेक्ष्यामः ॥ तत्राङ्गान्यन्तराधिसक्थिबाहुशिरांसि ॥ तदवयवाः प्रत्यङ्गानीति । तत्र स्वैरंगुलैः पादांगुष्ठप्रदेशिन्यौ ह्यंगुलायते । प्रदेशिन्यस्तु मध्यमानामिकाकनिष्ठिका यथोत्तरं पंचमभागहीना । चतुरंगुलायते पंचांगुलिविस्तृते प्रवादपादतले । पंचचतुरंगुलायतविस्तृता पार्ष्णिः । चतुर्दशांगुलायतः पादः । चतुर्दशांगुलपरिणाहानि पादगुल्फजंघाजानुमध्यानि । अष्टादशांगुला जंघा जानूपरिष्टाद्द्वात्रिंशदंगुलमेवं पंचाशत् । जंघायामसमावूरू । द्व्यंगुलानि वृषणचिबुकदर्शनासापुटभागकर्णमूलनयनान्तराणि । चतुरंगुलानि मेहनवदनान्तरनासाकर्णललाटग्रीवोच्छ्रायदृष्ट्यन्तराणि । द्वादशांगुलानि भगविस्तारमेहनाभि-

हृदयग्रीवास्तनान्तरमुखायाममणिबन्धप्रकोष्ठस्थौल्यानि । इन्द्रवस्तिपरिणाहांसपीठकूर्परान्तरायामः षोडशांगुलः। चतुस्त्रिंशत्यंगुलो द्वात्रिंशदंगुलपरिमाणौ भुजौ द्वात्रिंशत्परिणाहावूरू । मणिबन्धकूर्परान्तरं षोडशांगुलम् । तलं षट्चतुरांगुलायामविस्तारम् । अंगुष्ठमूलप्रदेशिनीश्रवणापाङ्गान्तरमध्यमांगुल्यौ पंचमांगुले । अर्द्धपंचांगुले प्रदेशिन्यनामिके । सार्द्धत्र्यंगुल्यौ कनिष्ठांगुष्ठौ । चतुर्विंशतिविस्तारपरिणाहं मुखग्रीवम् । त्रिभागांगुलीविस्तारा नासापुटमर्यादा। नयनत्रिभागपरिणाहा तारका । नवमस्तारकांशो दृष्टिः । केशान्तमस्तकान्तरमेकादशांगुलम् । मस्तकादवटुकेशान्तो दशांगुलः कर्णावटून्तरं चतुर्दशांगुलं पुरुषोरःप्रमाणविस्तीर्णास्थिश्रोणिः । अष्टादशांगुलविस्तीर्णमुरः । तत्प्रमाणा पुरुषस्य कटी। सविंशमंगुलशतं पुरुषायाम इति ॥

अर्थ-अब परमायुज्ञान होनेके लिये अङ्ग अत्यङ्गका प्रमाणरूप लक्षण कहते हैं-शरीरमें हाथ, पैर, शिर, आदिका नाम अङ्ग है. अङ्गोंके अवयवोंको प्रत्यङ्ग कहते हैं. दोनों पैरोंके अंगूठे और तर्जनी ये दोनों प्रत्येक पुरुषके अपनी अंगुलीसे दो अँगुल प्रमाण होते हैं. प्रदेशिनीसे लेकर कनिष्ठिकापर्य्यन्त क्रमसे पञ्चमभाग हीन हैं अर्थात् मध्यमाका प्रमाण तर्जनीके पाँच अंशोंमेंसे चार अंश है; अनामिकाका प्रमाण मध्यमाके पाँच अंशोंमेंसे चार अंश है; कनिष्ठिकाका प्रमाण अनामिकाके पाँच अंशोंमेंसे चार अंश है. पैरके तलवे और ऊपरके भागसे लेकर अँगुलियोंके मूलपर्य्यन्त ये दोनों स्थान चार अंगुल चौड़े और

पाँच अंगुल लम्बे होते हैं. पैरके ऊपरका भाग पाँच अंगुल चौड़ा और चार अंगुल लम्बा होता है;जङ्घाका लम्बाव अठारह अंगुल होता है,जानुका ऊर्ध्वभाग बत्तीस अंगुल लम्बा होता है, और पचाश अंगुल लम्बाभी होता है; उरूका प्रमाण जङ्घाओंके तुल्य होता है. अण्डकोश, चिबुक, दन्त, नासिका कर्णोंकी मूल और नेत्रोंका मध्यभाग दो अंगुल होता है. लिंग, मुखका मध्यभाग, नासिका, कर्ण, ललाट, ग्रीवाकी उँचाई, और नेत्रोंका चौड़ाव चार अंगुल होता है. योनिका विस्तार बारह अंगुलका होता है. लिंगसे लेकर नाभिपर्य्यन्त, नाभिसे लेकर वक्षःस्थलपर्य्यन्त, और वक्षःस्थलसे लेकर ग्रीवापर्य्यन्त बारह अंगुलका अन्तर होता है; दोनों स्तनोंका मध्यभाग और मुखकी दीर्घता बारह अंगुल होती है. पहुँचा और प्रकोष्ठकी स्थूलता बारह अंगुल होती है. बस्ति सोलह अंगुल विस्तृत और कन्धा तथा पीठ इन दोनोंका अन्तर सोलह अंगुल होता है. हाथोंकी लम्बाई चौवीस अंगुल होती है, और भुज बत्तीस अंगुल लम्बेभी होते हैं. प्रत्येक पुरुषके ऊरु बत्तीस अंगुल होते हैं. मणिबन्धसे कूर्परपर्य्यन्त सोलह अंगुल विस्तार होता है; हथेलीकी लम्बाई छः अंगुल होती है; हथेलीका विस्तार चार अंगुल होता है; अंगूठेसे लेकर तर्जनीपर्य्यन्त दो मध्यमाके तुल्य प्रमाण होता है. कर्णसे लेकर नेत्रके कोणपर्य्यन्त पाँच अंगुल प्रमाण होता है. तर्जनी और मध्यमा इन दोनों अंगुलियोंका मध्य ढाई अंगुल होता है. कनिष्ठिका और अंगूठेका अन्तर साढेतीन अंगुल होता है, मुख ओर ग्रीवा प्रत्येकके बारह अँगुल चौड़े होते हैं. नासिकाके छिद्रका प्रमाण पौने अंगुल होता है. नेत्रके तारेका प्रमाण नेत्रके चार अंशोंमेंसे तीन अंश होता है. तारेका नवमभाग प्रमाण पुतलीका होता है. शिरके जिस भागमें मस्तक है उस स्थानसे लेकर मुखके केशपर्य्यन्त स्थान ग्यारह अंगुल होता है. जिसभागमें मस्तिष्क है, उस स्थानसे लेकर पीछेके केशपर्य्यन्त स्थान बारह

अंगुल है. वक्षःस्थलका प्रमाण स्त्रीकी कमरके तुल्य होता है, और स्त्रीके वक्षःस्थलका प्रमाण अठारह अंगुल होता है. पुरुषका कण्ठभी इतनाही होता है. पुरुषके संपूर्ण देहका प्रमाण एकसौबीस अंगुल होता है ॥

पंचविंशे ततो वर्षे पुमान् नारी तु षोडशे ॥
समत्वागतवीर्यौ तौ जानीयात् कुशलो भिषक् ५४५॥
देहः स्वैरंगुलैरेष यथावदनुकीर्त्तितः ॥
युक्तप्रमाणेनानेन पुमान् वा यदि वांगना ॥ ५४६ ॥
दीर्घमायुरवाप्नोति वित्तं च महदृच्छति ॥
मध्यमं मध्यमैरायुर्वित्तहीनैस्तथा वरम् ॥ ५४७ ॥

अर्थ—पुरुषकी अवस्था पच्चीस और स्त्रीकी अवस्था सोलह वर्षकी होय तब दोनोंका वीर्य समान होता है. अपनी अपनी अंगुलीके प्रमाणानुसार जो प्रमाण वर्णन किया है. जिस पुरुष अथवा स्त्रीका प्रमाण पूर्वोक्त प्रमाणके तुल्य हो वह पुरुष और स्त्री निःसन्देह बलवान् होते हैं, और बहुत कालपर्य्यन्त जीवित रहते हैं, तथा धनी होते हैं. जिनके कोई अङ्ग पूर्वोक्त प्रमाणके अनुसार हों, और कोई अंग पूर्वोक्त प्रमाणके विपरीत हों तौ वह निःसन्देह निर्धन और अल्पायु होते हैं ॥ ५४५ ॥ ५४६ ॥ ५४७ ॥

या च कांचनवर्णाभा रक्तहस्तसरोरुहा ॥
सहस्राणांतु नारीणां भवेऽत्सापि पतिव्रता ॥ ५४८ ॥

अर्थ—जिस स्त्रीके शरीरकी कान्ति सुवर्णकी कान्तिके समान हो, हाथ लाल कमलकी तुल्य हों, वह स्त्री हजारों स्त्रियोंमें एकही पतिव्रता होती है ५४८ ॥

यस्यास्तु रोमशौ पार्श्वौ रोमशौ च पयोधरौ ॥

**उन्नतौ चाधरोष्ठौ च क्षिप्रं मारयते पतिम् ॥५४९॥**

अर्थ-जिस स्त्रीकी दोनों पसली और दोनों स्तन रोमयुक्त हों और नीचेके होंठ ऊँचे हों वह स्त्री शीघ्रही पतिको नष्ट कर देती है ॥ ५४९ ॥

**अस्वेदिनौ मृदुतलौ कमलोदरसन्निभौ ॥**
**श्लिष्टांगुलौ ताम्रनखावुष्णौ च शिरयोज्झितौ ॥५५०॥**
**कूर्मोन्नतौ च चरणौ स्यातां नृपवरस्य हि ॥**
**कूर्मोन्नतौ दृढगुल्फौ सुपार्ष्णी नृपतेः स्मृतौ ॥५५१॥**

अर्थः-जिस पुरुषके दोनों चरण कमलके मध्यभागके तुल्य मनोहर, नसोंरहित, गरम, पसीनेकरके रहित तलुओंके स्थानमें कोमल हों और जिसकी अंगुली मिली हुई हों सम्पूर्ण नख ताम्रवर्ण हों चरणोंका अग्रभाग कछुएके तुल्य ऊँचा हो, गुल्फ मांसमें छुपे हुए हों तथा सुन्दर हों वह पुरुष राज्यपदका अधिकारी होता है ॥ ५५० ॥ ५५१ ॥

**वक्रकेशा च या कन्या मण्डलाक्षी च या भवेत् ॥**
**भर्त्ता च म्रियते तस्या नियतं दुःखभागिनी ॥५५२॥**

अर्थ-जिस स्त्रीके केश कुञ्चित हों, मुख गोल हो, वह चिरकाल पर्य्यन्त दुःख भोगती है और अल्पकालमेंही विधवा हो जाती है ॥५५२॥

**यस्यास्तु कुंचिताः केशा मुखं च परिमंडलम् ॥**
**नाभिश्च दक्षिणावर्त्ता सा कन्या कुलवर्द्धिनी ॥५५३॥**

अर्थ-जिस स्त्रीके केश कुञ्चित हों, मुख गोलाकार हो, नाभिमें

दाईं ओरको आवर्त्त होय वह शुभलक्षणा, पतिपुत्रादियुक्त और कुलकी वृद्धि करनेवाली होती है ॥ ५५३ ॥

**पूर्णचन्द्रमुखी कन्या बालसूर्यसमप्रभा ॥**
**विशालनेत्रा बिम्बोष्ठी सा कन्या लभते सुखम् ॥५५४॥**

अर्थ–जिस स्त्रीका मुख पूर्णचन्द्रमाके समान हो, कान्ति प्रातःकालके सूर्यके समान हो, नेत्र विशाल हों और होंठ बिम्बाफलके समान हों, वह सुखको प्राप्त होती है ॥ ५५४ ॥

**शुभे जंघे विरोमे च ऊरू करिकरोपमौ ॥**
**अश्वत्थपत्रसदृशं विपुलं गुह्यमुत्तमम् ॥ ५५५ ॥**
**नाभिः प्रशस्ता गम्भीरा दक्षिणावर्त्तिका शुभा ॥**
**अरोमा त्रिवली नार्या हृत्स्तनौ रोमवर्जितौ ॥ ५५६ ॥**

अर्थ–जिस स्त्रीकी दोनों जङ्घा रोमहीन हों दोनों ऊरु हाथीकी शूंड़के आकारकी हों, गुह्यस्थान पीपलके पत्रके आकारका हो, नाभि सुन्दर हो, गम्भीर होयँ, और दक्षिणकी ओरको झुकेहुए आवर्त्तकरके युक्त होय, त्रिवली वक्षःस्थल और स्तन रोमहीन हों वह स्त्री सुलक्षणा होती है ॥ ५५५ ॥ ५५६ ॥

**कार्येऽपि मंत्री पत्नी स्यात्सुखा स्यात्करणेषु च ॥**
**स्नेहेषु भार्या माता स्याद्वेश्या च शयने शुभा ॥५५७॥**

अर्थ–जो स्त्री कार्य करनेके समय पतिको मन्त्रीके तुल्य सुन्दर सलाह देवे, पतिकी आज्ञाको सुखपूर्वक पालन करे, और स्नेहके समय माताके तुल्य तथा शयनके समय वेश्याके तुल्य प्रसन्नता देवे वह सुलक्षणा होती है ॥ ५५७ ॥

**विरूक्षपाण्डुरनखौ वक्रौ चैव शिरोन्नतौ ॥**

सूर्पाकारौ च चरणौ संशुष्कचरणांगुली ॥
दुःखदारिद्र्यदौ स्यातां नात्र कार्या विचारणा ५५८॥

अर्थ-जिसके नख कठोर, भद्मैले हों, चरण टेढे हों, नसोंकरके व्याप्त हों, ऊँचे हों, सूर्पके समान हों और जिसके चरणोंकी अंगुली सब सूखी हुई हों, वह दुःखी और दरिद्री होता है ॥ ५५८ ॥

त्वक् स्निग्धा विपुलाभोगा अल्पायुर्नाभिरुन्नता ॥
ऊरवो जानवस्तुल्या नृपस्योपचिताः स्मृताः ॥५५९॥
निःस्वस्य शृगालजंघा रोमैकैकश्च कूपके ॥
नृपाणां श्रोत्रियाणां च द्वे द्वे कूपे च धीमताम् ॥
त्र्याद्यैर्निःस्वा मानवाः स्युर्दुःखभाजश्च निन्दिताः ५६०

अर्थ-जिसके शरीरका चर्म चिकना हो, वह अनेक प्रकारसे भोगशाली होता है; जिसकी नाभि ऊँची हो वह अल्पायु होता है, जिसके दोनों ऊरु और जानु समान और सुन्दर रीतिसे बढे हुए हों वह राज्याधिकारी होता है. जिसकी जंघा शृगालकीसी हों, कुत्सित और रोमयुक्त हों, और उन जंघाओंके प्रत्येक रोमकूपमें एक २ रोम होय वह दरिद्री होता है. जिसके प्रत्येक रोमकूपमें दो दो रोम हों वह परमबुद्धिमान् श्रोत्रिय अथवा राजा होता है. जिसके प्रत्येक रोमकूपमें तीन २ अथवा अधिक रोम हों वह निन्दित, दुःखी, और धनहीन होता है ॥ ५५९ ॥ ५६० ॥

स्त्रीणां समं शिरः श्रेष्ठं भ्रुवौ चाथ ललाटकम् ॥
उर्ध्वं द्वाभ्यां पिण्डिकाभ्यां जंघे चातिशिरालके ५६१
रोमशे चातिमांसे च कुम्भाकारं तथोदरम् ॥
वामावर्त्तं निम्नमल्पं दुःखितानां च गुह्यकम् ॥५६२॥

अर्थ-जिन स्त्रियोंका मस्तक समान हो, और दोनों भ्रू तथा ललाट भी समान होय वे सुलक्षण होती हैं; जिन स्त्रियोंकी जङ्घा दोनों पिण्डलीयोंसे ऊपर नसोंकरके अत्यन्त व्याप्त हों, रोमयुक्त हों, और अतिस्थूल हों, पेट कूर्म्माकार हो, गुह्य वाम ओरको आवर्त्तयुक्त हो, नीचा हो और क्षीण होय, वे स्त्रियां चिरकालपर्य्यन्त दुःखोंको भोगती हैं ॥ ५६१ ॥ ५६२ ॥

अनुल्बणं सन्धिदेशं समं जानुद्वयं शुभम् ॥
मृदुग्रीवा कम्बुभा च कठिनौ वर्त्तुलौ स्तनौ ॥ ५६३॥

अर्थ-जिन स्त्रियोंके शरीरके सम्पूर्ण जोड़ ऊँचे न हों दोनों जानु समान हों, ग्रीवा कोमल और शंखके समान त्रिरेखायुक्त हो; दोनों स्तन गोल और दृढ़ हों वह स्त्री सुलक्षणा होती है ॥ ५६३ ॥

नाभिः स्वरश्च बुद्धिश्च त्रयं गम्भीरमीरितम् ॥
पुंसश्च चातिविस्तीर्णं ललाटं वदनं उरः ॥ ५६४ ॥
चक्षुःकक्षदन्तनासाः षट् स्युर्मुखकृकाटिकाः ॥
उन्नतानि च ह्रस्वानि जंघा ग्रीवा च लिङ्गकम् ५६५॥
पृष्ठं चत्वारि रक्तानि करताल्वधरा नखाः ॥
नेत्रान्तपादजिह्वोष्ठाः पंच सूक्ष्माणि सन्ति वै ॥ ५६६ ॥
दशनांगुलिपर्वाणि नखकेशत्वचं शुभाः ॥
दीर्घाः स्तनान्तरं बाहुदन्तलोचननासिकाः ॥ ५६७ ॥

अर्थ-जिसकी नाभि, स्वर, और बुद्धि गम्भीर हों उसस्त्रीको सुलक्षणा जानै; जिसका ललाट, मुख, और वक्षःस्थल चौड़ा हो वह सुलक्षणा होती है; जिसके नेत्र, हृदय, नासिका, दन्त, मुख, और घांटी ये छः अंग ऊँचे हों वह धन्यवादका पात्र होता है; जिसकी जंघा, ग्रीवा, लिंग, और पीठ ये चारों अंग ह्रस्व हों वह सन्मानका पात्र होता है;

जिसके हाथोंके तलुवे, तालु, होंठ, अधर, नख, नेत्र, नेत्रोंके कोण, पैरोंके तलुवे, और जिह्वा, ये आठों अंग रक्तवर्ण हों वह सुलक्षणा होता है; जिसके दन्त, अंगुलियोंके पोरुए, नख, केश और त्वचा यह पाँच सूक्ष्म हों वह श्रेष्ठ होता है और जिसके दोनों स्तनोंका मध्य भाग दोनों हाथ, दांतोंकी पंक्ति, दोनों नेत्र, और नासिका ये पाँच अंग दीर्घ हों वह निःसन्देह शुभलक्षणोंकरके युक्त होता है ॥ ५६४ ॥ ॥ ५६५ ॥ ५६६ ॥ ५६७ ॥

आरक्तावधरौ श्रेष्ठौ मांसलं वर्त्तुलं मुखम् ॥
कुन्दपुष्पसमा दन्ता भाषितं कोकिलासमम् ॥५६८॥

अर्थ—लालवर्णके अधर श्रेष्ठ होते हैं; गोलाकार और मांसपूर्ण मुख श्रेष्ठ होता है; कुन्दके पुष्पके तुल्य दन्त श्रेष्ठ होते हैं; कोकिलाके समान भाषण श्रेष्ठ होता है ॥ ५६८ ॥

विपुलस्त्रिषु गम्भीरो दीर्घः सूक्ष्मश्च पंचसु ॥
षडुन्नतश्चतुर्ह्रस्वो रक्तः सप्तसमो नृपः ॥ ५६९ ॥

अर्थ—जिसके शरीरमें तीन अंग गम्भीर और चौड़े हों, पाँच अंग दीर्घ और सूक्ष्म हों, छः अंग ऊँचे हों, चार अंग ह्रस्व हों, सात अंग रक्तवर्ण हों; और समयपरिमाणयुक्त हो वह राज्यपदको प्राप्त होता है ॥ ५६९ ॥

श्रोणी ललाटकं स्त्रीणां उरः कूर्म्मोन्नतं शुभम् ॥
गूढो मणिश्च शुभदो नितम्बश्च गुरुः शुभः ॥ ५७० ॥

अर्थ—जिन स्त्रियोंकी कमर, ललाट, और वक्षःस्थल कूर्म्मके समान ऊँचे हों, मणि गूढ़ होय, नितम्ब भारी होय तो वह स्त्री शुभ लक्षण होती है ॥ ५७० ॥

प्रलम्बिनी ललाटे तु देवरं हन्ति चाङ्गना ॥

उदरे श्वसुरं हन्ति पतिं हन्ति स्फिचोर्ध्वयोः ॥ ५७१ ॥

अर्थ--जिस स्त्रीका ललाट लम्बा होय वह देवरघातक होती है; जिसका पेट लम्बा होय वह श्वशुरका घात करती है; जिसके नितम्ब लम्बे हों वह पतिघातिनी होती है ॥ ५७१ ॥

स्तनौ सरोमावशुभौ कर्णौ च विषमौ तथा ॥
कराला विषमा दन्ताः क्लेशाय च भयाय च ॥५७२॥

अर्थ--स्तन रोमयुक्त हों तौ अशुभ होते हैं; जिसके कर्ण विषम ( कमती बढ़ती ) हों अथवा जिसके दन्त विकराल और छोटे बड़े नीचे ऊंचे हों वह स्त्री क्लेश और भयको प्राप्त होती है ॥ ५७२ ॥

समुन्नतोत्तरोष्ठी या कन्या च रूक्षकोपिनी ॥
स्त्रीषु दोषा विरूपासु यत्राकारा गुणास्ततः ॥ ५७३ ॥

अर्थ--जिस स्त्रीके होंठ अधिक ऊँचे हों, और केश रूखे हों वह स्त्री कलह करनेवाली होती है; उसका भाषण अतिकठोर होता है. स्त्रियोंमें जैसे आकार हों वैसेही फल कहै ॥ ५७३ ॥

पंच दीर्घं पंच ह्रस्वं पंच सूक्ष्मं षडुन्नतम् ॥
सप्तरक्तं त्रिगम्भीरं त्रिविशालं प्रशस्यते ॥ ५७४ ॥

अर्थ--जिसके पाँच अङ्ग दीर्घ हों, पांच अङ्ग ह्रस्व हों, पांच अङ्ग सूक्ष्म हों, छः अङ्ग ऊँचे हों, सात अङ्ग रक्तवर्ण हों, तीन अङ्ग गम्भीर हों, तीन अङ्ग विशाल और शुभ लक्षणयुक्त हों वह सुलक्षण होता है ॥ ५७४ ॥

बाहू नेत्रद्वयं कुक्षिः द्वे तु नासे तथैव च ॥
स्तनयोरन्तरं चैव पंच दीर्घं प्रशस्यते ॥ ५७५ ॥

अर्थ--दोनों बाहु, दोनों नेत्र, कोख, दोनों नासिकाके छिद्र, और

दोनों स्तनोंका मध्य, ये पाँच अङ्ग, दीर्घ हों तौ प्रशंसाके योग्य होते हैं ॥ ५७५ ॥

स्वरो बुद्धिश्च नाभिश्च त्रिगम्भीरमुदाहृतम् ॥
त्रयं यस्य तु विस्तीर्णं तस्य श्रीः सर्वतोमुखी ॥
उरः शिरो ललाटं च त्रिविस्तीर्णं प्रशस्यते ॥ ५७६ ॥

अर्थ–जिसके स्वर, बुद्धि, व नाभि, ये तीन गम्भीर श्रेष्ठ होते हैं, और हृदय, शिर, और ललाट, ये तीन विस्तारयुक्त हों वह सुलक्षण होता है और इनही तीन स्थानोंके विस्तीर्ण होनेसे पुरुष श्रीमान् होताहै ॥५७६॥

ग्रीवा कण्ठः कटिर्वापि पृष्ठोरु च तथैव च ॥
ग्रीवा चापि कटिश्चोरु उदरं पृष्ठमेव च ॥
ह्रस्वानि यस्य चत्वारि पूजामाप्नोति निश्चयम् ॥ ५७७ ॥

अर्थ–ग्रीवा, कण्ठ, कमर, और पीठ, अथवा ग्रीवा, कमर, ऊरु, और पीठ ये चार जिसके ह्रस्व हों वह निःसन्देह पूजनीय होता है ॥ ५७७ ॥

सूक्ष्माण्यंगुलपर्वाणि दन्तकेशनखत्वचः ॥
पंच सूक्ष्माणि येषां हि ते नरा दीर्घजीविनः ॥ ५७८ ॥

अर्थ–अंगुलियोंके पर्व, दंत, केश, नख, और त्वचा ये पाँच सूक्ष्म हों तौ श्रेष्ठ होते हैं; जिन पुरुषोंके ये पाँचों अङ्ग सूक्ष्म हों वह चिरकाल पर्य्यन्त जीवित रहते हैं ॥ ५७८ ॥

पाणिपादतलौ रक्तौ नेत्रान्तरनखानि च ॥
तालुकाधरजिह्वाश्च सप्त रक्तं प्रशस्यते ॥ ५७९ ॥

अर्थ–पाँवके तलुए, हथेली, नेत्रोंके प्रान्तभाग, नख, तालु, अधर, और जिह्वा, ये सात अङ्ग रक्तवर्णयुक्त हाँय तौ प्रशंसनीय होते हैं ॥ ५७९ ॥

ग्रीऽवाथ कर्णः पृष्ठं च ह्रस्वे जंघे सुपूजिते ॥
चत्वारि यस्य ह्रस्वानि पूजां प्राप्नोति नित्यशः॥५८०॥

अर्थ-ग्रीवा, कर्ण, पीठ, और दोनों जङ्घा ये चार ह्रस्व श्रेष्ठ होते हैं. ये चार अंग जिसके ह्रस्व हों वह सदा पूजाके योग्य होता है ॥५८०॥

नासा नेत्रं च दन्ताश्च ललाटं च शिरस्तथा ॥
हृदयं चैव विज्ञेयमुन्नतं षट् प्रशस्यते ॥ ५८१ ॥

अर्थ-नासिका, नेत्र, दन्त, ललाट, शिर, और हृदय, ये छः अंग ऊँचे हों तो शुभ होते हैं ॥ ५८१ ॥

दयालवश्च दातारो रूपवन्तो जितेन्द्रियाः ॥
परोपकारिणश्चैव तेऽपूर्वा मानवाः स्मृताः ॥ ५८२ ॥

अर्थ-जो पुरुष पूर्वोक्त शुभ लक्षणयुक्त अंगोंवाले होते हैं वे दयालु, रूपवान्, दाता, जितेन्द्रिय, परोपकारपरायण, और अपूर्व मनुष्य होते हैं ॥ ५८२ ॥

कपिला मलिनाङ्गाश्च ह्रस्वाश्चैव बृहन्नखाः ॥
कृशातिदीर्घा मनुजास्ते दरिद्रा न संशयः ॥ ५८३ ॥

अर्थ-जिनके शरीरका वर्ण कपिल हो, मलिन हो, देह छोटा हो, नख बड़े बड़े हों, शरीर दुर्बल व लम्बा हो वे पुरुष निसन्देह दरिद्री होते हैं ॥ ५८३ ॥

सूचीमुखा भग्नपृष्ठाः कृष्णदन्ताः कुचैलकाः ॥
वक्रनासा वज्रनासास्ते नरा दुष्टमानसाः ॥ ५८४ ॥

अर्थ-जिनका मुख सुईके आकारका हो, पीठ कुबड़ी हो, दाँत काले हों, वस्त्र मलिन हों, नासिका टेढ़ी हो अथवा वज्रसमान हो वे मनुष्य दुष्टचित्त होते हैं ॥ ५८४ ॥

कटिर्विशाला बहुपुत्रभोगी
विशालहस्तो नरपुंगवः स्यात् ॥
उरो विशालं धनधान्यभोगी
शिरो विशालं नरपूजितः स्यात् ॥ ५८५ ॥

अर्थ–जिसकी कमर चौंड़ी हो वह पुत्रवान् होता है; जिसके हाथ चौंड़े हों वह सब मनुष्योंमें अग्रणी होता है; जिसका हृदय चौड़ा हो वह धनधान्ययुक्त होता है; और जिसका शिर विशाल हो वह पुरुष मनुष्योंमें पूजित होता है ॥ ५८५ ॥

चिबुके श्मश्रुशून्या ये निर्लोमहृदयाश्च ये ॥
ते धूर्त्ता नैव सन्देहः सामुद्रवचनं यथा ॥ ५८६ ॥

अर्थ–जिनकी ठोढ़ीपर डाढ़ीके बाल न हों और जिन पुरुषोंके हृदय रोमरहित हों निःसन्देह वे पुरुष धूर्त्तता करनेवाले होते हैं ॥ ५८६ ॥

त्रीणि यस्याः प्रलम्बानि ललाटमुदरं भगम् ॥
त्रीणि सा भक्षयेन्नारी श्वशुरं देवरं पतिम् ॥ ५८७ ॥
ललाटे श्वशुरं हन्यात् जठरे देवरं तथा ॥
गुह्यं च हन्याद्भर्त्तारं महादोषास्त्रयः स्मृताः ॥५८८॥

अर्थ–जिस स्त्रीके ललाट, उदर, और योनि ये तीन लम्बे होते हैं वह श्वसुर, देवर और पति इन तीनोंको भक्षण करती है. यदि ललाट लम्बा होय तौ श्वसुरको, पेट लम्बा होय तौ देवरको, और योनी लम्बी होय तौ पतिको मारती है. स्त्रीके विषे ये तीन महादोष हैं ॥ ५८७ ॥ ५८८ ॥

सुलक्षणापि दुःशीला कुलक्षणाशिरोमणिः ॥

**कुलक्षणापि या साध्वी सर्वलक्षणभूस्तु सा ॥ ५८९ ॥**

अर्थ-सम्पूर्ण सुलक्षण होनेपर भी जो स्त्री दुःशीला होय, उसको कुलक्षणाओंके शिरोमणि जानै; और जो सम्पूर्ण कुलक्षणा शरीरमें होनेपरभी सुलक्षणा होय, उसको परमपतिव्रता जानै ॥ ५८९ ॥

**विरला दशना यस्याः कृष्णौष्ठी कृष्णजिह्विका ॥**
**भर्त्तारं प्रथमं हन्ति द्वितीयं चैव विन्दति ॥ ५९० ॥**

अर्थ-जिस स्त्रीके दाँत छीदे हों, होंठ काले हों, और जिह्वा भी काली होय वह स्त्री प्रथमपतिका घात करती है. और दूसरे पतिको प्राप्त होती है ॥ ५९० ॥

**यस्या अत्युत्कटं नार्या वक्षश्च विस्तृतं भवेत् ॥**
**उत्तरोष्ठे च लोमानि शीघ्रं सा भक्षयेत् पतिम् ॥ ५९१ ॥**

अर्थ-जिस स्त्रीका वक्षःस्थल अत्यन्त उत्कट और विस्तीर्ण होय, और ऊपरके होंठपर लोम होयँ वह स्त्री शीघ्रही पतिका भक्षण करती है ॥ ५९१ ॥

**कृष्णा कपिलकेशी च मिलितभ्रुकुटिस्तथा ॥**
**गमनं सत्वरं चैव त्यक्तव्या स्यात्सदा बुधैः ॥ ५९२ ॥**

अर्थ-जिस स्त्रीका वर्ण कृष्ण होय केश कपिलवर्ण होयँ, दोनों भौंह मिली हुई हों, गति शीघ्र होय, बुद्धिमान् पुरुष ऐसी स्त्रीका त्याग कर देवे ॥ ५९२ ॥

**अंगुली विरला यस्याः सलोमगात्रकर्कशा ॥**
**भेका भेकस्तनी क्षुद्रा दूरतः परिवर्जयेत् ॥ ५९३ ॥**

अर्थ-जिस स्त्रीकी अंगुली छीदी हों, शरीर कठोर और रोमयुक्त

हो, एक स्तन मेंडकके आकारका होय और आकार बौनेका होय वह स्त्री सौभाग्यवती नहीं होतीहै उसका दूरसे त्याग कर देवे ॥५९३॥

नासाग्रे दृश्यते यस्यास्तिलकं मशकोऽपि वा ॥
कृष्णदन्ता कृष्णजिह्वा दशाहेन पतिं हरेत् ॥ ५९४ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी नासिकाके अग्रभागपर तिल अथवा मस्सा होय, दाँत काले हों, और जिह्वाभी काली होय वह स्त्री दशदिनमें ही पतिका घात कर देती है ॥ ५९४ ॥

मृदुग्रीवा कम्बुसमा अरोमं हृदयं शुभम् ॥ ५९५ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी ग्रीवा कोमल और शंखके आकारकी तथा हृदय रोमरहित होय, वह स्त्री सुलक्षणा होती है ॥ ५९५ ॥

ग्रीवा ह्रस्वा च गुह्यं तु दीर्घं तत्र कुलक्षयः ॥
पृथुगलाः प्रचण्डाश्च स्त्रियः स्युर्नात्र संशयः ॥ ५९६ ॥

अर्थ-जिसकी ग्रीवा छोटी हो, और योनि लम्बी होय उस स्त्रीके कुलका नाश होता है, और जिन स्त्रियोंका गला मोटा होय वह निःसंदेह कलहकारिणी होती है ॥ ५९६ ॥

सूक्ष्मकेशा तु या कन्या गौरवर्णा च या भवेत् ॥
अष्टौ जनयते पुत्रान् प्राप्नोति विपुलं सुखम् ॥५९७॥

अर्थ-जिस स्त्रीके केश सूक्ष्म हों, और वर्ण गौर होय वह आठ पुत्रोंको उत्पन्न करती है, और परमसुखको भोगनेवाली होती है ॥५९७॥

नीलोत्पलनिभं चक्षुर्नासालग्नं सलम्बकम् ॥
पृथुले बालेन्दुनिभे भ्रुवौ शुभे ललाटके ॥ ५९८ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके नेत्र नीलकमलके समान नासिका पर्य्यन्त

और कर्णपर्य्यन्त लम्बे हों, ललाट भौंह द्वितीयाके चन्द्रमाके समान टेढ़ी और चौंड़ी हो वह स्त्री सुलक्षणा होती है ॥ ५९८ ॥

शिरालैर्विषमैर्गुल्फैर्वित्तहीना भवन्ति हि ॥
दुःखिता पापनिरताश्चोर्ध्वनाड़ी च डाकिनी ॥५९९॥

अर्थ-जिस स्त्रीके गुल्फ नसोंसे व्याप्त और असमान हों वह दरिद्रा होती है; जिसके पैरकी नाड़ी ऊपरको होय वह दुःखिता पापिनी और डाकिनीके समान होती है ॥ ५९९ ॥

मुखमूर्ध्वं शरीरं च विशालं च भवेत्सुखम् ॥
ततोऽपि नासिका श्रेष्ठा श्रेष्ठे तत्रापि चक्षुषी ॥६००॥

अर्थ-जिस पुरुषके मुखआदि देहका ऊपरका भाग विशाल होय और नासिका ऊँची और नेत्र चौंड़े होंय वह सुखी होताहै ॥ ६०० ॥

वर्णाद्बहुतरो देहो देहाद्बहुतरः स्वरः ॥
स्वराद्बहुतरं सत्वं सर्वं सत्वे प्रतिष्ठितम् ॥ ६०१ ॥

अर्थ-वर्णकी सुन्दरतासे शरीरकी सुन्दरता श्रेष्ठ है; शरीरकी सुन्दरतासे स्वरकी सुन्दरता श्रेष्ठहै; स्वरकी सुन्दरतासे बुद्धिकी सुन्दरता श्रेष्ठ है; क्योंकि बुद्धिसे सब कार्य सिद्ध होते हैं ॥ ६०१ ॥

श्लिष्टांगुलौ ताम्रनखौ पादौ तच्च शिरांचितौ ॥
कूर्मोन्नतौ गूढगुल्फौ सा च स्त्री नृपतेः स्मृता ॥६०२॥

अर्थ-जिस स्त्रीके चरणोंकी अंगुली मिली हुई हों, नख लाल लाल हों, ऊंची नसोंयुक्त हों, कछुएके समान ऊँचे हों, गुल्फें छुपी हुई हों वह स्त्री राजाकी है ॥ ६०२ ॥

स्वरं सत्वं च नाभिश्च त्रिगम्भीरं प्रशस्यते ॥
तालु वक्षो ललाटं च त्रिविस्तीर्णं सुखावहम् ॥६०३॥

अर्थ-स्वर, बुद्धि, और नाभि ये तीन गम्भीर हों तो प्रशंसनीय होते हैं; तालु हृदय, और ललाट ये तीन विशाल हों तो सुखदायक होते हैं ॥ ६०३ ॥

बाहुनेत्रान्तरं चैव जानुजंघान्तरं तथा ॥
कुचयोरन्तरं चैव पंच दीर्घं प्रशस्यते ॥ ६०४ ॥

अर्थ-भुजाओंका मध्य, नेत्रोंका मध्य, जानुओंका मध्य, जंघाओंका मध्य, और स्तनोंका मध्य, ये पाँच दीर्घ हों तो प्रंशसाके योग्य होते हैं ॥ ६०४ ॥

दन्तस्नेहेन सौभाग्यं लभते नात्र संशयः ॥
केशस्नेहेन सौभाग्यं नेत्रस्नेहेन वस्त्रता ॥ ६०५ ॥
सर्वांगेन च यः स्निग्धः प्राप्नोति विपुलं धनम् ॥६०६॥

अर्थ-जिसके दातोंमें स्निग्धता होय वह निःसन्देह सौभाग्यवान् होता है; स्निग्ध केशोंसे सौभाग्य, स्निग्ध नेत्रोंसे वस्त्र प्राप्त होते हैं और जिसका सब अंग स्निग्ध होय वह विपुल धनको प्राप्त होताहै ६०५-६०६

आदौ पाणितले रेखा जानौ पादे तथैव च ॥
जंघयोर्लक्षणं चैव ओष्ठस्य चिबुकस्य च ॥ ६०७ ॥
गण्डयोः पार्श्वयोश्चैव ललाटस्य च लक्षणम् ॥
सर्वांगाननासानां दन्तस्य लक्षणं तथा ॥ ६०८ ॥

अर्थ-पुरुष हो अथवा स्त्री हो सबकी ही प्रथम हाथकी रेखाकी परीक्षा की जाती है. तदनन्तर जानु, चरण, जङ्घा, होंठ, केश, चिबुक, गण्डस्थल, पार्श्व, ललाट, सर्वांग, मुख, नासिका और दाँतोंके लक्षणोंका विचार किया जाता है, तिससेही शुभ और अशुभ फलका विचार होता है ॥ ६०७ ॥ ६०८ ॥

भोगी धनी स्यादुदरे विशाले विशालकट्याश्च कटौ विशालौ ॥ बहुपुत्रदारोऽपि विशालपादो धनान्वितः स्यात् सविशालचक्षुः ॥ ६०९ ॥

अर्थ-जिसका पेट विशाल होय वह भोगी और धनी होता है; जिसकी कमर और गण्डस्थल विशाल हों तथा चरण विशाल हों वह बहुत स्त्री सन्तानवाला होता है; जिसके नेत्र विशाल हों वह धनवान् होता है ॥ ६०९ ॥

यस्याः पादौ मुखं नेत्रे स्निग्धे धन्या नखास्तथा ॥
अधरौष्ठानि वक्राणि तां कन्यां रमयेद्बुधः ॥६१०॥

अर्थ-जिसके चरण, मुख, नेत्र, स्निग्ध हों, वह कीर्तिमती होती है; जिसके नख और नीचेके होंठ वक्र हों उस कन्याके साथ विवाह करनेसे बुद्धिमान्को सुखकी प्राप्ति होती है ॥ ६१० ॥

गौरांगी वा तथा कृष्णा स्निग्धमंगं मुखं तथा ॥
दन्ताः स्तनं शिरो यस्याः सा कन्या सुखमेधते ॥६११॥

अर्थ-गौरवर्ण होय अथवा कृष्णवर्ण होय; परन्तु जिस स्त्रीका शरीर, मुख, दन्त, स्तन, और शिर, यह सब स्निग्ध हों वह कन्या सुख भोगती है ॥ ६११ ॥

चन्द्रमुखी च या कन्या बालसूर्यसमप्रभा ॥
विशालनेत्रा रक्ताक्षी तां कन्यां वरयेद्बुधः ॥६१२॥

अर्थ-जिसका मुख चन्द्रमण्डलके समान होय, शरीरकी कान्ति प्रातःकालके सूर्य्यके समान होय, नेत्र चौंड़े और रक्तवर्ण होयँ उस कन्याके साथ विवाह करनेसे सुखकी प्राप्ति होती है ॥ ६१२ ॥

यस्यास्त्रिरेखा ग्रीवायां कुक्षिरेखास्तथैव च ॥
सुखस्य भागिनी स्याच्च भूपतिः स्याल्ललाटके ६१३

अर्थ-जिसकी ग्रीवामें तीन रेखा हों, तथा पेटमें त्रिवली होय वह सुख भोगती है, और जिसके ललाटमें तीन रेखा हों वह पुरुष राज्यको प्राप्त होता है ॥ ६१३ ॥

**नाभिस्थूला सूक्ष्मकेशी नातिदीर्घा सुमध्यमा ॥**
**पीनस्तनी मृगनेत्रा सा नारी सुखमेधते ॥ ६१४ ॥**

अर्थ-जिस स्त्रीकी नाभि स्थूल होय, केश सूक्ष्म हों, पेट पतला और समान होय, स्तन पुष्ट हों, नेत्र मृगके समान हों, वह स्त्री सुख भोगती है ॥ ६१४ ॥

**यस्याः करतले पादे चोर्ध्वरेखा च दृश्यते ॥**
**यदि नीचकुले जाता राजपत्नी भवेद्ध्रुवम् ॥ ६१५ ॥**

अर्थ-जिसके हाथकी हथेलीमें और पैरके तलुएमें ऊर्ध्वरेखा दीखती होय वह स्त्री यदि नीच कुलमें उत्पन्न हुई होय तौभी निःसन्देह राजपत्नी होती है ॥ ६१५ ॥

**राजहंसगतिर्वापि मत्तमातंगगामिनी ॥**
**सिंहशार्दूलमध्या च सा भवेत्सुखभागिनी ॥ ६१६ ॥**

अर्थ-जिस स्त्रीका गमन राजहंसके समान अथवा मदवाले हाथीके समान होय, और पेट सिंह तथा चीतेके समान होय वह स्त्री सुख भोगती है ॥ ६१६ ॥

**मृद्वङ्गी मृगनेत्रा च मृगजानू मृगोदरी ॥**
**दासीजाता च सा कन्या राजानं पतिमाप्नुयात् ॥ ६१७ ॥**

अर्थ-जिसका शरीर कोमल होय, नेत्र मृगके समान हों, जानु मृगके समान हों, और पेटभी मृगके समान होय, वह कन्या यदि दासीसे पैदा हुई होय तौभी राजा पतिको प्राप्त होती है ॥ ६१७ ॥

आरक्तं पृष्ठतो यस्याः सर्वाङ्गं गौरमेव च ॥
आवर्त्तनी दीर्घनासा राजपत्नी भवेद् ध्रुवम् ॥ ६१८॥

अर्थ–जिस स्त्रीका सम्पूर्ण शरीर तौ गौरवर्ण होय परन्तु पीटका वर्ण कुछ लाल होय और नासिका आवर्त्तयुक्त लम्बी होय वह स्त्री निःसन्देह राजपत्नी होती है ॥ ६१८ ॥

यस्याः करतले पादे दृश्यते चिह्नमुत्तमम् ॥
रथं वज्रं ध्वजं चक्रं विभूतिवरदा भवेत् ॥ ६१९ ॥

अर्थ–जिसकी हथेलीमें अथवा पैरके तलुएमें रथ, वज्र, ध्वजा और चक्र इनमेंसे कोई उत्तम चिह्न होय तौ वह सुलक्षणा होती है ॥ ६१९ ॥

यस्या रेखान्वितौ बाहू मुखे च तिलकध्रुवम् ॥
अधरोष्ठौ च सरलौ क्षिप्रं वैधव्यलक्षणम् ॥ ६२० ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके भुज रेखायुक्त हों, और मुखपर तिलका चिन्ह होय, और नीचेके ओष्ठ सरल हों तौ वह निःसन्देह विधवा होती है ॥ ६२० ॥

यस्याः कुटिलकेशाश्च नेत्रमुत्पलसन्निभम् ॥
नाभिश्च दक्षिणावर्त्ता सा नारी सुखमेधते ॥ ६२१ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके केश कुटिल हों, नेत्र कमलके समान हों, नाभि दक्षिणकी ओरको आवर्त्तकरके युक्त होय वह स्त्री सुख भोगती है ॥ ६२१ ॥

अतिनीला स्निग्धकेशी सुमुखी च सुमध्यमा ॥
सुभ्रूजंघा सुनासा च सा कन्या सुखमेधते ॥ ६२२ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके केश अत्यन्त नीले हों, मुख और पेट रमणीय होय, भौंह, जङ्घा, और नासिका सुन्दर होय वह स्त्री सुख भोगती है ॥ ६२२ ॥

या सुवर्णा प्रसन्नाक्षी सुलोमा च मृदूदरी ॥
पद्मपत्रसमाक्षी च पुत्रैः सार्द्धं प्रवर्द्धते ॥ ६२३ ॥

अर्थ–जिसका वर्ण सुन्दर होय, नेत्र प्रसन्न हों, लोम सुन्दर हों, पेट कोमल हो, और नेत्र कमलके पत्तोंके समान हों, वह स्त्री पुत्रोंकरके सहित वृद्धिको प्राप्त होती है ॥ ६२३ ॥

स्निग्धकेशी विशालाक्षी सुस्था धीरा मृदुत्वचा ॥
सुमुखी सुभगा कन्या तां कन्यां वरयेद्बुधः ॥६२४॥

अर्थ–जिसके केश स्निग्ध हों, नेत्र विशाल हों, स्थिरतायुक्त हों, धैर्य्ययुक्त हों, जिसकी त्वचा कोमल हो, मुख सुन्दर हो, उस सौभाग्यवतीको वरै ॥ ६२४ ॥

अनिम्नाक्षाश्च ये काणा बधिराः स्थूलदेहिनः ॥
स्थूलाश्च खंजगतयो नरा दुष्टा न संशयः ॥ ६२५ ॥

अर्थ–जिनके नेत्र ऊँचे हों, और जो काणे हों, बहिरे हों, स्थूल हों, लंगड़ाकर चलते हों, निःसन्देह वे मनुष्य दुष्ट होते हैं ॥ ६२५ ॥

यस्योन्नतं ललाटं च ताम्रवर्णं च दृश्यते ॥
रेखाहीनं च कुक्षिश्च स चोन्मत्तो भ्रमेन्महीम् ॥६२६॥

अर्थ–जिसका ललाट ऊँचा होय, और लाल लाल होय, और जिसके पेटमें त्रिवली नहीं होय वह पुरुष उन्मत्त होकर पृथ्वीपर भ्रमता है ॥ ६२६ ॥

नाभिहस्ततलं चैव पृष्ठमध्यं तथैव च ॥
त्रीणि यस्य गभीराणि राज्यं तस्य विनिर्दिशेत् ॥६२७॥

अर्थ–जिसकी नाभि, हाथके तलुए, और पीठका मध्यभाग, ये तीनों गम्भीर हों वह राज्याधिकारको प्राप्त होता है ॥ ६२७ ॥

कपालं हृदयं चैव पादतलं तथैव च ॥
यस्यैतत्त्रयं विस्तीर्णं तस्य श्रीः सर्वतोमुखी॥ ६२८ ॥

अर्थ-जिसके कपाल, हृदय, और पैरका तलुआ ये तीन चौड़े हों उसको चारों ओरसे लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है ॥ ६२८ ॥

शतं काणे च खंजे च अशीतिर्भण्डचौरयोः ॥
खर्वे च षष्टिदोषाः स्युः कुब्जस्यान्तं न विद्यते ६२९॥

अर्थ-काणे और लंगडे पुरुषमें सौगुने दोष होते हैं, भाण्ड और चोरमें अस्सीगुणे दोष होते हैं. बोने पुरुषमें साठगुणे दोष होते हैं, और कुब्जेके दोषोंकी तो गिनतीही नहीं ॥ ६२९ ॥

स्थूलांगा मलिनाश्चैव रमकाः प्राणहारकाः ॥
मांसप्रिया नास्तिकाश्च ते जाता व्याधयोनयः॥६३०॥

अर्थ-जिनका शरीर स्थूल होय, केश मलिन हों, और जो स्त्रियोंके पास अधिक रमता होय वह पुरुष निःसन्देह दूसरोंका नाश कर देता है. जो मांसप्रिय और नास्तिक हो उसको पूर्वजन्मका व्याध जानै ॥ ६३० ॥

त्रासयुक्ताः कर्मरताः स्वोदरपूरणे रताः ॥
व्यवहारविहीनाश्च ते पूर्वे पशुजातयः ॥ ६३१ ॥

अर्थ-जो पुरुष डरपोंक, सदा काम करनेमें लगाहुआ, और केवल अपना पेट भरनेमात्रमें तत्पर हों और व्यवहारकी रीति न जानते हों उनको पूर्वजन्मके पशु जानै ॥ ६३१ ॥

इतस्ततो भ्रमेन्नित्यं गहनेषु पृषोदरः ॥
भीतियुक्ताः स्वल्पकायास्ते जाताः पक्षियोनयः ॥६३२॥
सर्वकार्येषु ये क्षुद्रास्ते पूर्वे क्षुद्रजातयः ॥ ६३३ ॥

अर्थ–जो बनोंमें चारोंओर भ्रमै, जिसका पेट बड़ा होय, भयभीत हों और बौना आकार हो वे पुरुष पूर्वजन्मके पक्षी हैं ऐसा जानै और जो पुरुष उच्चजाति और उच्चकुलमें उत्पन्न होकर प्रत्येक कार्य्यमें अपनी क्षुद्रता दिखाते हैं, वे पूर्वजन्मके क्षुद्रजाति हैं ऐसा जानै ॥ ६३२ ॥ ६३३ ॥

**कालस्कन्धा महाक्षाश्च भीमा भीमपराक्रमाः ॥**
**बह्वाशिनः सर्ववैरास्ते पूर्वे राक्षसाः स्मृताः ॥ ६३४ ॥**

अर्थ–जिनके कन्धे काले और अतिभयंकर हों, नेत्र बड़े बड़े हों, जिनके देखनेसे भय लगै, परम पराक्रमी हों, अधिक भोजन करनेवाले हों, और सबसे वैर करते हों वह पूर्वजन्मके राक्षस होते हैं ॥ ६३४ ॥

**निःस्वश्चिपिटकंठः स्याच्छिराशुष्कगलः सुखी ॥**
**शूरः स्यान्महिषग्रीवः शास्त्रान्तो मृगवंचकः ॥६३५॥**
**कम्बुग्रीवश्च नृपतिर्लम्बकण्ठोऽतिभिक्षुकः ॥ ६३६ ॥**

अर्थ–जिसका कण्ठ चपटा हो वह दरिद्री होता है; जिसके गलेकी नसैं सूखी हुईसी दीखैं वह सुखी होता है; जिसकी ग्रीवा दृढ हो वह बलवान् होता है; जिसकी ग्रीवा मृगके समान दुर्बल हो वह सर्वशास्त्रपारङ्गम होता है; जिसकी ग्रीवा शंखके तुल्य त्रिरेखायुक्त होय वह राजा, और जिसकी ग्रीवा लम्बी हो वह बड़ा भिक्षुक होता है ॥ ६३५ ॥ ६३६ ॥

**स्निग्धनीलाश्च मृदवो मूर्द्धजाः कुंचिताः कचाः ॥**
**स्त्रीणां समं शिरः श्रेष्ठं गमनं हंसवत्तथा ॥ ६३७ ॥**

अर्थ–जिन स्त्रियोंके केश चिकने, नीलवर्ण, कोमल, और मुड़ेहुए हों, शिर समान हो तथा गति हंसके समान हो वह स्त्री सुलक्षणा होती है ॥ ६३७ ॥

**काकवक्त्रा च निर्मांसा बहुलोमसमन्विता ॥**

एतत् सर्वं प्रयत्नेन वर्जयेत् पंडितः सदा ॥ ६३८ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीका मुख काकके समान होय, शरीर मांसहीन होय, शरीरपर बहुत रोम हों, ऐसे लक्षणोंकरके युक्त स्त्रीको बुद्धिमान् दूरसेही त्याग देय ॥ ६३८ ॥

शुचिरत्यन्तदाता च भूमिजीवी च गोहितः ॥
चातुर्वर्णाः समा जाता ज्ञातव्या क्रमशो बुधैः ॥ ६३९ ॥

अर्थ-जो निरन्तर पवित्र रहैं उसको पूर्वजन्मका ब्राह्मण, जो दाता हो उसको क्षत्रिय, और भूमिसे जीविका करे उसको वैश्य तथा जो गौओंकी सेवा करनेमें तत्पर रहैं उसको पूर्वजन्मका शूद्र जानै ॥ ६३९ ॥

अतिसितं तथा कृष्णमतिरक्तस्तथैव च ॥
एतत्सर्वत्र यत्नेन बुधेन परिहार्यते ॥ ६४० ॥

अर्थ-जिस स्त्रीका वर्ण अत्यन्त श्वेत (सपेद) होय, जिसका अत्यन्त काला वर्ण होय, और जिसका अत्यन्त लाल वर्ण होय, ऐसी स्त्रीको बुद्धिवान् त्याग देवे ॥ ६४० ॥

अतिमेधाऽतिकीर्त्तिश्च विक्रमश्च सुखानि च ॥
प्रथमे वयसि दृश्यन्ते सोऽल्पायुश्च भवेन्नरः ॥ ६४१ ॥

अर्थ-जो बाल्यावस्थामें अतिबुद्धिमान् हो, अतिकीर्तिमान् हो, अतिपराक्रमी हो, और अत्यन्त सुखी हो, वह पुरुष अल्पायु होता है ॥ ६४१ ॥

संक्षेपतस्ते कथितं मयैतत्
विलक्षणं चारुनितम्बिनीनाम् ॥
प्रायो विरूपाः प्रभवन्ति दोषा
यत्राकृतिस्तत्र गुणा वसन्ति ॥ ६४२ ॥

अर्थ–ये स्त्रियोंके लक्षण संक्षेपसे कहे 'जो स्त्री कुरूप हों उनको दोषयुक्त और जो स्त्री रूपवती हों प्रायः उनको गुणवती जाने; क्योंकि, प्रायः ऐसा नियम है कि, जहाँ सुन्दर आकृति होती है वहाँही गुण होते हैं ॥ ६४२ ॥

## अथ पंचमहापुरुषलक्षणम् ।

ताराग्रहैर्बलयुतैः स्वक्षेत्रस्वोच्चगैश्चतुष्टयगैः ॥
पंच पुरुषाः प्रशस्ता जायन्ते तानहं वक्ष्ये ॥६४३॥

अर्थ–भौम आदि पंचग्रह स्थान, दिक्, चेष्टा, और कालबलकरके युक्त होयँ अपने राशि अथवा उच्चमें स्थित होकर लग्न चतुर्थ सप्तम अथवा दशम स्थानमें बैठे हों तो इन पांच ग्रहोंसे पांच उत्तम महा पुरुष उत्पन्न होते हैं अर्थात् एक एक ग्रहकरके एक एक पुरुष होता है उनको हम कहते हैं ॥ ६४३ ॥

जीवेन भवति हंसः सौरेण शशः कुजेन रुचकश्च ॥
भद्रो बुधेन बलिना मालव्यो दैत्यपूज्येन ॥ ६४४ ॥

अर्थ–बृहस्पति बलवान् होकर स्वराशि अथवा स्वोच्चमें स्थित होकर जिसके केन्द्रमें बैठे हों वह पुरुष हंस होता है; शनैश्चरके बैठनेसे शश होता है; मंगलसे रुचक, बुध बलवान् हो तो भद्र और शुक्रके होनेसे मालव्यनाम पुरुष होता ॥ ६४४ ॥

सत्वमहीनं सूर्याच्छारीरं मानसं च चन्द्रबलात् ॥
यद्राशिभेदयुक्तावेतौ तल्लक्षणः स पुमान् ॥ ६४५ ॥
तद्धातुमहाभूतप्रकृतिद्युतिवर्णसत्वरूपाद्यैः ॥
अबलरवीन्दुयुतैस्तैः संकीर्णा लक्षणैः पुरुषाः ॥ ६४६ ॥

अर्थ–सूर्यके बलसे उस पुरुषका परिपूर्ण सत्व और चन्द्रके बलसे

शरीरके और मनके गुण होते हैं; सूर्य, चन्द्र, जिस ग्रहके राशि, द्रेष्काण, नवांस, द्वादशांश व त्रिंशांशमें बैठे होयँ उस ग्रहके धातु, महाभूत प्रकृति, कांति, वर्ण, सत्व, रूप आदि लक्षणोंकरके युक्त वह पुरुष होता है; बलयुक्त सूर्यचन्द्र जिस ग्रहके राशिभेदमें बैठे हों उस ग्रहके धातुआदि लक्षणोंकरके युक्त वह पुरुष होता है परन्तु निर्बल सूर्य चन्द्र होकर राशिभेदमें बैठे हों तो संकीर्ण लक्षणोंकरके युक्त पुरुष होते हैं ६४५॥६४६

**भौमात्सत्वं गुरुता बुधात्सुरेज्यात्स्वरः सितात्स्नेहः॥**
**वर्णः सौरादेषां गुणदोषैः साध्वसाधुत्वम् ॥ ६४७ ॥**

अर्थ-मंगलसे सत्व ( शौर्य ) बुधसे गुरुता, बृहस्पतिसे स्वर, शुक्रसे स्नेह और शनैश्चरसे कान्ति होती है; भौम आदि ग्रह बलवान् होयँ तौ सत्व आदि अच्छे होते हैं; निर्बल होयँ तो सत्व आदिका अभाव होता है ॥ ६४७ ॥

**संकीर्णाः स्युर्न नृपा दशासु तेषां भवन्ति सुखभाजः॥**
**रिपुगृहनीचोच्चच्युतसत्यापनिरीक्षणैर्भेदः ॥ ६४८ ॥**

अर्थ-संकीर्ण लक्षणवाले पुरुष राजा नहीं होते किन्तु केवल पूर्वोक्त भौम आदि ग्रहोंकी दशामें सुख भोगते हैं; शत्रुक्षेत्रमें स्थित नीचसे और उच्चसे निकलना शुभ ग्रह और पापग्रहोंकी दृष्टि इन सब करके भेद अर्थात् पुरुषोंकी संकीर्णता होती है ॥ ६४८ ॥

**षण्णवतिरंगुलानां व्यायामो दीर्घता च हंसस्य ॥**
**शशरुचकभद्रमालवसंज्ञितास्त्र्यंगुलविवृद्ध्या ॥ ६४९ ॥**

अर्थ-छियान्नबे अंगुल उंचाई और छियान्नबे अंगुल व्यायाम ( दोनों भुजा पसारकर चौड़ाई ) हंस नाम पुरुषका होता है. इनमें तीन तीन अंगुल बढ़ाते जांय तौ क्रमसे शश, रुचक, भद्र और मालवकी ऊँचाई और व्यायामका मान होता है ॥ ६४९ ॥

**यः सात्विकस्तस्य दया स्थिरत्वं सत्वार्जवं ब्राह्मण-देवभक्तिः । रजोधिकः काव्यकलाक्रतुस्त्रीसंसक्त-चित्तः पुरुषोऽतिशूरः ॥६५०॥ तमोधिको वञ्चयिता परेषां मूर्खोऽलसः क्रोधपरोऽतिनिद्रः ॥ मिश्रैर्गुणैः सत्वरजस्तमोभिर्मिश्रास्तु ते सप्त सह प्रभेदैः ॥६५१॥**

अर्थ–सात्विक पुरुषको दया स्थिरता जीवोंके साथ सरलता ब्राह्मण और देवताओंमें भक्ति होती है; रजोगुणी पुरुष काव्य नृत्य गीत आदि कला यज्ञ और स्त्रियोंमें आसक्त होता है और अत्यंत शूर बीर होता है; तमोगुणी पुरुष औरोंको ठगनेवाला मूर्ख आलसी क्रोधी और बहुत सोनेवाला होता है; सत्व रज व तम ये तीनों गुण मिलनेसे मिश्र स्वभावके पुरुष होते हैं. जैसे सत्व रज, सत्व तम, रज तम, सत्व रज तम, ये चार भेद और तीन भेद एक २ गुण करके पाहिले कहे इस प्रकार सात प्रकारके पुरुष होते हैं ॥ ६५० ॥ ६५१ ॥

**मालव्यो नागनासामसभुजयुगलो जानुसंप्राप्तहस्तो मांसैः पूर्णाङ्गसन्धिः समरुचिरतनुर्मध्यभागे कृशश्च॥पंचाऽष्टौ चोर्ध्वमास्यं श्रुतिविवरमपि त्र्यंगुलोनं च तिर्यग् दीप्ताक्षं सत्कपालं समसितदशनं नातिमांसाऽधरोष्ठम् ॥ ६५२ ॥**

अर्थ–मालव पुरुषके दोनों भुज हाथीकी सूंडके समान होते हैं; जानुपर्यन्त उसके हाथ पहुंचते हैं अर्थात् वह पुरुष आजानुबाहु होता है; अंगोंकी सब संधियां मांससे पुष्ट होती हैं;शरीर उसका समान और सुन्दर होता है; मध्यभाग कृश होता है; ऊर्ध्वमानकरके ठोढ़ीसे ललाटपर्यन्त मुखकी ऊंचाई तेरह अंगुल होती है, और ठोढ़ीसे कर्णछिद्रपर्यन्त तिरछी चौड़ाई दश अगुंल होती है; और उस पुरुषका मुख दीप्त नेत्र

सुन्दर कपोल, समान और श्वेत दन्त और पतले नीचेके ओष्ठकरके युक्त होता है ॥ ६५२ ॥

**मालवान्स मरुकच्छसुराष्ट्रान् लाटसिन्धुविषयप्रभृतींश्च ॥ विक्रमार्जितधनोऽवति राजा पारियात्रनिलयान्कृतबुद्धिः ॥ ६५३ ॥**

अर्थ—वह मालव्य पुरुष मालव मरु कच्छ सौराष्ट्र लाट सिन्धु आदि देशोंका पालन करता है; पराक्रमसे धन संपादन करता है राजा होता है; परियात्र पर्वतमें निवास करनेवालोंकाभी रक्षण करता है और स्थिर बुद्धि होता है ॥ ६५३ ॥

**सप्ततिवर्षो मालव्योऽयं त्यक्ष्यति सम्यक्प्राणांस्तीर्थे ॥ लक्षणमेतत्सम्यक् प्रोक्तं शेषनराणां चातो वक्ष्ये ॥६५४॥**

अर्थ—सत्तर वर्ष आयुष्य भोगकर यह मालव्य पुरुष भलीभाँति तीर्थपर प्राण त्यागता है. यह मालव्यका लक्षण अच्छे प्रकारसे कहा अब भद्र आदि शेष पुरुषोंका लक्षण कहते हैं ॥ ६५४ ॥

**उपचितसमवृत्तलम्बबाहुर्भुजयुगलप्रमितः समुच्छ्रयोऽस्य ॥ मृदुतनुघनरोमनद्धगण्डो भवति नरः खलु लक्षणेन भद्रः ॥ ६५५ ॥**

अर्थ—भद्रपुरुषके पुष्ट सम वर्तुल और लंबे बाहु होते हैं; भुजा पसारनेसे जितनी चौड़ाई होय उतनीही उसकी ऊँचाई होती है: कोमल सूक्ष्म और घने रोमोंकरके युक्त उसके कपोल होते हैं; इन लक्षणोंकरके बुधके योगसे भद्रसंज्ञक पुरुष होता है ॥ ६५५ ॥

**त्वक्शुक्रसारः पृथुपीनवक्षाः सत्वाधिको व्याघ्रमुखः स्थिरश्च ।क्षमान्वितो धर्मपरः कृतज्ञो गजेन्द्रगामी**

बहुशास्त्रवेत्ता ॥ ६५६ ॥ प्राज्ञो वपुष्मान्सुललाटशंखः कलास्वभिज्ञो धृतिमान्सुकुक्षिः ॥ सरोजगर्भद्युतिपाणिपादो योगी सुनासः समसंहतभ्रूः ॥ ६५७ ॥

अर्थ—भद्रपुरुष त्वक्सार और वीर्यसार होता है; विस्तीर्ण और पुष्ट उसका वक्षःस्थल होता है; सत्व अधिक होता है; व्याघ्रके समान उसका मुख होता है. वह पुरुष स्थिरस्वभाव, क्षमायुक्त, धर्मात्मा, कृतघ्न, गजेन्द्रके समान गतिवाला, बहुत शास्त्र जाननेवाला, बुद्धिमान्, सुन्दर शरीरवाला, सुन्दर ललाट और शंखों ( कनपटी )-वाला, नृत्यगीत आदि कलाओंमें अभिज्ञ, धर्मयुक्त, सुकुक्षि कमलके गर्भके समान और मिलेहुए भ्रुओं करके युक्त होता है ॥ ६५६ ॥६५७॥

नवाम्बुसिक्तावनिपत्रकुंकुम-
द्विपेन्द्रदानागुरुतुल्यगान्धिता ॥
शिरोरुहाश्चैकजकृष्णकुंचिता-
स्तुरङ्गनागोपमगूढगुह्यता ॥ ६५८ ॥

अर्थ—नए जलकरके सींची हुई भूमिके गंधके समान पत्र ( तजपत्र ) केसर हाथीका मद अथवा इनके गंधके तुल्य गंध उसके शरीरमें होय, शिरके केश एक एक रोमकूपमें एक एक उत्पन्न होय, वे काले और कुंचित होयँ, घोड़े अथवा हाथीके तुल्य उसका गुह्य ( लिंग ) गुप्त रहे ॥ ६५८ ॥

हलमुसलगदासिशंखचक्रद्विपमकराब्जरथांकिताऽङ्घ्रिहस्तः । विभवमपि जनोऽस्य बोभुजीति क्षमति हि न स्वजनं स्वतंत्रबुद्धिः ॥ ६५९ ॥

अर्थ—हल, मूसल, गदा, खड्ग, शंख, चक्र, हाथी, मकर, कमल, और रथके तुल्य रेखा उसके हाथ व पैरोंमें होती हैं; इसके ऐश्वर्यको

औरभी मनुष्य भोगनेवाले हैं, अपने बंधुजनोंको नहीं सहता और स्वच्छन्दचारी होता है ॥ ६५९ ॥

अंगुलानि नवतिश्च षडूनान्युच्छ्रयेण तुलयापि हि भारः ॥ मध्यदेशनृपतिर्यदि पुष्टास्यादयोऽस्य सकलावनिनाथः ॥ ६६० ॥

अर्थ—चौरासी अंगुल ऊँचा होता है; उसके शरीरका बोझा एक तुला ( दो हजार पल ) होता है. मध्यदेशका राजा होता है, पहिले कही हुई एकसौ आठ अंगुल ऊँचाई इस भद्र पुरुषकी होय तो चक्रवर्त्ती राजा होता है ॥ ६६० ॥

भुक्त्वा सम्यग्वसुधां शौर्येणोपार्जितामशीत्यब्दः ॥ तीर्थे प्राणांस्त्यक्त्वा भद्रो देवालयं याति ॥ ६६१ ॥

अर्थ—शौर्यसे संपादन करी हुई भूमंडलको भलिभांति भोग कर अस्सी वर्षकी अवस्थामें तीर्थपर प्राण त्याग कर यह भद्र पुरुष स्वर्गको जाता है ॥ ६६१ ॥

ईषद्दन्तुरकस्तनुद्विजनखः कोशेक्षणः शीघ्रगो विद्याधातुवणिक्क्रियासु निरतः सम्पूर्णगंडः शठः ॥ सेनानीः प्रियमैथुनः परजनस्त्रीसक्तचित्तश्चलः शूरो मातृहितो वनाचलनदीदुर्गेषु सक्तः शशः ॥ ६६२ ॥

अर्थ—शनैश्चरके योगसे उत्पन्न हुए शशनामक पुरुषके दन्त कुछ ऊँचे होते हैं; नख और दाँत छोटे होते हैं; केशेक्षण होता है अर्थात् उसके नेत्रकोश पुष्ट होते हैं; शीघ्रगामी होता है; विद्या धातु और वणिक्क्रिया ( व्यापार आदि ) में आसक्त होता है; कपोल पुष्ट होते हैं; वह पुरुष शठ ( स्वकार्यसाधक ) होता है; सेनाका अधिपति, प्रियमैथुन, परस्त्रीसक्त, चंचल, शूर, माताका भक्त, वन, पर्वत नदी और

दुर्ग ( किला ) में आसक्त होता है अर्थात् इन स्थानोंमें पुरुषको रहनेकी रुचि होती हैं ॥ ६६२ ॥

दीर्घोऽङ्गुलानां शतमष्टहीनं साशंकचेष्टः पररन्ध्रवित्त्व ॥
सारोऽस्य मज्जानिभृतप्रचारः शशो ह्ययं नातिगुरुः प्रदिष्टः ॥ ६६३ ॥

अर्थ—शश पुरुष बानवे अंगुल ऊंचा होता है; सब कार्योंमें शंकित रहता है; औरोंके छिद्र जानता है; मज्जासार होता है; स्थिरगति होता है; और बहुत स्थूल नहीं होता ॥ ६६३ ॥

मध्ये कृशः खेटकखड्गवीणापर्यङ्कमालामुरजाऽनुरूपाः
शूलोपमाश्चोर्ध्वगताश्चरेखाःशशस्यपादोपगताकरेवा६४

अर्थ—शश पुरुषका मध्यभाग कृश होता है और उसके पैरोंमें अथवा हाथोंमें ढाल, तरवार, वीणा, पर्यंक ( पलंग ), भाला, मृदंग और त्रिशूलके आकार रेखा और उर्ध्वरेखा होती हैं ॥ ६६४ ॥

प्रात्यन्तिको मांडलिकोऽथवाऽयं
स्फिक्स्रावशूलाऽभिभवार्तमूर्त्तिः ॥
एवं शशः सप्ततिहायनोऽयं
वैवस्वतस्यालयमभ्युपैति ॥ ६६५ ॥

अर्थ—शश पुरुष म्लेच्छ देशका राजा होता अथवा और कहीं मांडलीक राजा होता है; स्फिक्स्रावरोगकी पीड़ाकरके शरीरमें पीड़ित रहता है; इस प्रकार यह शश पुरुष सत्तरवर्षकी अवस्थामें मृत्यु वश होता है ॥ ६६५ ॥

रक्तं पीनकपोलमुन्नतनसं वक्त्रं सुवर्णोपमं
वृत्तं चाऽस्य शिरोऽक्षिणी मधुनिभे सर्वे च रक्ता नखाः ॥

स्रग्दामांऽकुशशंखमत्स्ययुगलक्रत्वंगकुम्भाम्बुजै-
श्चिह्नैर्हंसकलस्वनः सुचरणो हंसः प्रसन्नेंद्रियः ॥ ६६६ ॥

अर्थ-बृहस्पतिके योगसे उत्पन्न हुए शश पुरुषका मुख रक्तवर्ण पुष्ट कपोलोंकरके युक्त ऊंची नासिकावाला और सुवर्णके समान कान्तियुक्त होता है; शिर उसका गोल होता है; शहतके रंगकेसे नेत्र होते हैं; सब नख रक्तवर्ण होते हैं; माला, रस्सी, अंकुश, शंख, दो मत्स्य, यज्ञके अंग स्रुकआदि कलश, और कमलके तुल्य रेखा उसके हाथ वा पैरोंमें होती हैं. हंसके समान मधुर स्वर होता है. सुन्दर चरण होते हैं और हंस पुरुषके सब इन्द्रिय निर्मल होते हैं ॥ ६६६ ॥

रतिरम्भसि शुक्रसारता द्विगुणाश्चाष्टशतैः पलैर्मितिः ॥
परिमाणमथाऽस्य षड्युता नवतिः संपरिकीर्तिता बुधैः ॥

अर्थ-इसकी जलमें प्रीति होती है; शुक्रसार होता है; सोलहसौ पल इस हंसपुरुषके शरीरका भार होता है, और छियानबे अंगुल इसकी उंचाई पंडितोंने कही है ॥ ६६७ ॥

भुनक्ति हंसः खशशूरसेनान् गान्धारगंगायमुनान्तरालम् ॥ शतं दशोनं शरदां नृपत्वं कृत्वा वनान्ते समुपैति मृत्युम् ॥ ६६८ ॥

अर्थ-हंसपुरुष खश शूरसेन गांधार और अन्तर्वेद देशको भोगताहै; और नब्बे वर्ष राज्य भोग कर बनमें मृत्युवश होता है ॥ ६६८ ॥

सुभ्रूकेशो रक्तश्यामः कम्बुग्रीवो व्यादीर्घास्यः ॥
शूरः क्रूरः श्रेष्ठो मंत्री चौरस्वामी व्यायामी च ६६९

अर्थ-भौमके योगसे उत्पन्न हुआ रुचक नाम पुरुष सुन्दर भ्रू और केशोंकरके युक्त व श्यामवर्ण होता है; शंखके तुल्य ग्रीवावाला और लंबे

मुखकरके युक्त होता है; शूर, क्रूर, श्रेष्ठ, मंत्री, चोरोंका स्वामी और परिश्रमी होता है ॥ ६६९ ॥

**यन्मात्रमास्यं रुचकस्य दीर्घं मध्यप्रदेशे चतुरस्रता सा ॥**
**तनुच्छविः शोणितमांससारो हंता द्विषां साहससिद्ध-**
**कार्यः ॥ ६७० ॥**

अर्थ—रुचकके मुखकी जितनी लंबाई होय उतनीही मध्यभागकी चतुरस्रताका प्रमाण होता है, अर्थात् मुखकी उंचाईको चौगुणा करनेसे मध्यभागकी मोटाई होती है. उसकी थोड़ी कान्ति होती है. रुधिर मांस सार होता है; शत्रुओंको मारनेवाला होता है और उसके कार्य साहससे सिद्ध होते हैं; विना विचारे करना साहस कहाता है ॥ ६७० ॥

**खट्वाङ्गवीणावृषचापवज्रशक्तीन्दुशूलांकितपाणिपादः ॥**
**भक्तो गुरुब्राह्मणदेवतानां शतांगुलः स्यात्तु सहस्रमानः ॥**

अर्थ—खट्वाङ्ग, वीणा, वृष, धनुष, वज्र, बर्छी, चन्द्रमा और त्रिशूलके आकारकी रेखाओंकरके रुचक पुरुषके हाथ पैर विहत होते हैं; गुरु ब्राह्मण और देवताओंका वह भक्त होता है; सौ अंगुल ऊंचा होता है और हजारपल उसके शरीरका भार होता है ॥ ६७१ ॥

**मंत्राभिचारकुशलः कृशजानुजंघो**
**विन्ध्यं स सह्यगिरिमुज्जयनीं च भुक्त्वा ॥**
**सम्प्राप्य सप्ततिसमा रुचको नरेन्द्रः**
**शस्त्रेण मृत्युमुपयात्यथवाऽनलेन ॥ ६७२ ॥**

अर्थ—वह रुचक पुरुष मंत्र और मारण उच्चाटन आदि अभिचारकर्ममें कुशल होता है; उसके जानु और जंघा कृश होते हैं; विंध्याचल सह्यादि और उज्जयिनीके देशोंमें राज भोगकर सत्तरवर्षकी

अवस्थामें रुचक राजा शस्त्र करके अथवा अग्निकरके मृत्युको प्राप्त होता है ॥ ६७२ ॥

पंचापरे वामनको जघन्यः कुब्जोऽपरामण्डलको-ऽथसामी ॥ पूर्वोक्तभूपाऽनुचरा भवन्ति संकीर्णसंज्ञाः शृणु लक्षणैस्तान् ॥ ६७३ ॥

अर्थ—इन पांच महापुरुषोंको छोंड़ और पंच पुरुष सकीर्णसंज्ञक होते हैं. वामनक, जघन्यकुब्ज, मंडलक और सामी, ये पूर्वोक्त पंच राजाओंके सेवक होते हैं. अब इन पांचोंके लक्षण सुनो ॥ ६७३ ॥

सम्पूर्णाङ्गो वामनो भग्नपृष्ठः
किंचिच्चोरूमध्यकक्षान्तरेषु ॥
ख्यातो राज्ञां ह्येष भद्रानुजीवी
स्फीतो दाता वासुदेवस्य भक्तः ॥ ६७४ ॥

अर्थ—वामनके सम्पूर्ण अंग सम्पूर्ण होते हैं; पीठ टूटी हुई होती है; ऊरु, मध्यभाग, और कक्षान्तरमें किंचित् भग्न होता है अथात् ये अंग उसके कृश होते हैं. वह वामन नामक पुरुष प्रसिद्ध होता है. पंच राजाओंके बीच भद्रनामक राजाका अनुजीवी होता है. स्फीतदाता और नारायणका भक्त होता है ॥ ६७४ ॥

मालव्यसेवी तु जघन्यनामा खण्डेन्दुतुल्यश्रवणा सुग-न्धिः ॥ शुक्रेण सारः पिशुनः कविश्च रूक्षच्छविः स्थू-लकरांगुलीकः ॥ ६७५ ॥ क्रूरो धनी स्थूलमतिः प्रती-तस्ताम्रच्छविः स्यात्परिहासशीलः ॥ उरोंघ्रिहस्तेध्व-सिशक्तिपाशपरश्वधांकश्च जघन्यनामा ॥ ६७६ ॥

अर्थ—जघन्यनामक पुरुष मालव्यराजाका सेवक होता है; उसके कर्ण अर्धचन्द्रके तुल्य होते हैं; सुन्दर गन्धकरके युक्त होता है;

शुक्रसार होता है; पिशुन (सूचक) और पंडित होता है, शरीरकान्ति सूखी होती है; उसके हाथोंकी अंगुली मोटी होती हैं. वह पुरुष क्रूर, धनवान्, स्थूलबुद्धि और प्रसिद्ध होता है; तांबेके सरीखा रंग उसका रंग होता है; हँसनेमें उसकी रुचि रहती है, और उस जघन्यनाम पुरुषके छाती, पैर, और हाथोंमें तरवार, बर्छी, पाश, और परशुके आकारकी रेखा होती है ॥ ६७५ ॥ ६७६ ॥

कुब्जो नाम्ना यः स शुद्धो ह्यधस्तात्क्षीणाः किंचित्पूर्वकाये नतश्च ॥ हंसासेवी नास्तिकोऽर्थैरुपतो विद्वान् शूरः सूचकः स्यात्कृतज्ञः ॥ ६७७ ॥

अर्थ–कुब्जनामक पुरुष नाभिसे नीचे परिपूर्णाङ्ग और नाभिसे ऊपर कुछ क्षीण और नत होता है; हंसनामक राजाका सेवन करता है; वह नास्तिक धनवान् विद्वान् शूर सूचक और कृतज्ञ होता है ॥६७७॥

कलास्वभिज्ञः कलहप्रियश्च प्रभूतभृत्यः प्रमदाजितश्च ॥ संपूज्य लोकं प्रजहात्यकस्मात्कुब्जोऽयमुक्तः सततोद्यतश्च ॥ ६७८ ॥

अर्थ–वह कुब्जपुरुष कलाओंमें अभिज्ञ, कलहप्रिय, बहुत सेवकोंकरके युक्त और स्त्रीजित होता है. लोकका सत्कार करके अकस्मात् छोड़ देता है. यह कहाहुआ कुब्ज पुरुष सबकालमें उत्साहयुक्त रहता है ॥ ६७८ ॥

मण्डलकनामधेयो रुचकोनुचरोऽभिचारवित्कुशलः ॥
कृत्यावेतालादिषु कर्मसु विद्यासु चानुरतः ॥ ६७९ ॥
वृद्धाकारः खररूक्षमूर्धजः शत्रुनाशने कुशलः ॥
द्विजदेवयज्ञयोगप्रसक्तधीः स्त्रीजितो मतिमान् ॥ ६८० ॥

अर्थ–मण्डलक नाम पुरुष रुचक नाम राजाका सेवक होता है; वह

अभिचारकर्म जाननेवाला, कुशल, कृत्या वेतालोत्थापन आदि कर्मोंमें और विद्याओंमें अनुरक्त होता है; वृद्धके तुल्य उसका आकार होता है; कठोर और सूखे उसके केश होते हैं; शत्रुनाश करनेमें कुशल होता है; ब्राह्मण देवता यज्ञ और योगमें उसकी बुद्धि लगी रहती है; स्त्रीजित और बुद्धिमान् होता है ॥ ६७९ ॥ ६८० ॥

सामीति यःसोऽतिविरूपदेहः शशानुगामी खलु दुर्भगश्च ॥ दाता महारम्भसमाप्तकार्यो गुणैः शशस्यैव भवेत्समानः ॥ ६८१ ॥

अर्थ—सामीनामक पुरुष अतिकुरूप देहवाला होता है; वह शशनामक राजाका सेवक होता है; दानी होता है; बड़े २ कार्योंका आरंभ करके उन कार्योंको समाप्त करता है; गुणोंकरके शशकेही समान वह सामी पुरुष होता है ॥ ६८१ ॥

## अथ ललाटचिह्नकथनम् ।

ललाटे लिखितं धात्रा रेखाचिह्नं शुभाशुभम् ॥
यज्ज्ञात्वा पुरुषो लोके सुविज्ञो सुदर्शी भवेत् ॥ ६८२ ॥

अर्थ—ब्रह्माने ललाटमें शुभ और अशुभ फलका सूचक रेखाओंका चिन्ह बनाया है; जिसको जानकर पुरुष संसारमें परमप्रवीण और दूरदर्शी कहाता है ॥ ६८२ ॥

ललाटे दृश्यते रेखा दुःखदौर्भाग्यसूचिका ॥
दुःसहक्षतचिह्नानि शरीरे प्रभवन्ति हि ॥ ६८३ ॥
दृश्यते यादृशी रेखा ललाटे तु शरीरिणः ॥
स्वाधिकारेण तस्य हि महद्धानिः प्रजायते ॥ ६८४ ॥

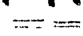
अर्थ—जिसके ललाटमें स्वयं सिद्ध दुःसह घावकीसी रेखा होय वह

पुरुष दुःखित होता है और उसका भाग्य नष्ट होताहै; परन्तु वह रेखा वास्तवमें घाव आदिसे न हुई होय तौ और जिसके मस्तकमें नीचे लिखेहुए लक्षणोंसे अन्य निन्दित रेखा होय उस पुरुषकी अपने अधिकारसेही अपनी हानि होती है ॥ ६८३ ॥ ६८४ ॥

दृश्यते यादृशी रेखा धनधान्यविनाशिनी ॥
कार्मूकाकृतिरेखा तु दृश्यते यस्य देहिनः ॥ ६८५ ॥
दुश्चरित्रश्च दुःशीलः स लोके चाधमः स्मृतः ॥

अर्थ–जिसके ललाटमें कच्छपके आकारकी रेखा दीखे, उसके धनधान्यका नाश होता है, और वह मनुष्य दुष्टचरित्र, दुष्टस्वभाव, और लोकमें अधम होता है ॥ ६८५ ॥

ईदृशीष्ट त्रिरेखा तु दृश्यते यस्य जन्तुनः ॥
निपत्य उपरिष्टाच्च म्रियते नात्र संशयः ॥ ६८६ ॥
विद्यते यादृशी रेखा यस्य भाले च तादृशी ॥
हन्तारं तं विजानीयात् सत्यं सत्यं न संशयः ६८७॥

अर्थ–≡ऐसी त्रिरेखा जिसके मस्तकमें दीखे वह पुरुष निःसन्देह ऊपरके स्थानसे गिरकर मरता है, और जिसके ललाटमें  ऐसी दीखैं वह पुरुष निःसन्देह हत्यारा होता है ॥ ६८६ ॥ ६८७ ॥

भालेऽस्य यादृशी रेखा यदि भवति तादृशी ॥
हन्तारं तं विजानीयत् खलं क्रूरं च वंचकम् ॥
चिह्नेषु विद्यमानेषु म्रियते स उद्बन्धनाम् ॥६८८॥

अर्थ–जिसके मस्तकमें  ऐसी रेखा होय वह पुरुष नरहत्याकारी क्रूर, खल, और बञ्चक होता है; जिसके मस्तकमें  ऐसी रेखा होय वह फाँसीके द्वारा प्राणोंको त्यागता है ॥ ६८८ ॥

चिह्नेषु विद्यमानेषु पूर्वोक्तफलमाप्नुयात् ॥
चिह्नं च विद्यते यस्य मूर्त्तौ हि दृश्यते यथा ॥
निपत्य जलगर्भे तु महद्दुःखमवाप्नुयात् ॥ ६८९ ॥

अर्थ–जिसके ललाटमें += ऐसा चिह्न होय वहभी फाँसीके द्वारा प्राणत्याग करता है, और जिसके मस्तकपर ।।।।।।।। ऐसा चिन्ह होय वह पुरुष जलमें डूबकर अत्यन्त क्लेशको प्राप्त होता है ॥ ६८९ ॥

दृश्यते यादृशी रेखा यदि भवति तादृशी ॥
हन्तारं तं विजानीयान्नात्र कार्या विचारणा ॥६९०॥
शान्तस्य च दरिद्रस्य सुशीलस्य महामतेः ॥
रुष्टस्य ऋजुशीलस्य व्युत्पन्नबुद्धेरेव च ॥ ६९१ ॥
शास्त्रार्थे चानुरक्तस्य चतुरस्य मेधाविनः ॥
विद्यते यादृशं चिन्हं ज्ञायतां तन्मनीषिभिः ॥६९२॥

अर्थ–जिसके मस्तकपर ऐसी रेखा होय वह पुरुष नरहत्याकारी होता है; इसमें कुछ सन्देह नहीं. जिसके मस्तकपर ≡ ऐसी रेखा होय वह पुरुष शान्तस्वभाव, दरिद्री, सुन्दरचरित्रवाला, बुद्धिमान्, क्रोधी, सरलस्वभाव, व्युत्पन्नबुद्धि, शास्त्रार्थमें प्रेम करनेवाला, चतुर, और प्रत्युत्पन्नमति होता है ॥ ६९० ॥ ६९१ ॥ ६९२ ॥

दृश्यते यदि चिह्नं च वामभागेऽर्द्धचन्द्रवत् ॥
वक्तारं तं विजानीयान्निर्दिष्टं च मनीषिभिः ॥६९३॥
अधस्तात् क्षुद्ररेखा च ऊर्ध्वे मध्यमिका तथा ॥
मध्ये च आयता रेखा धनधान्यप्रवर्द्धिनी ॥ ६९४ ॥

अर्थ–जिस पुरुषके मस्तकके वामभागमें अर्द्धचन्द्रका चिह्न होय वह पुरुष वाचाल होता है. ऐसा प्रवीण पुरुषोंका मत है, जिसके मस्त-

कमें ══ नीचेको छोटी रेखा होय, ऊपर मध्यरेखा होय बीचमें लम्बी रेखा होय वह पुरुष धनधान्यकी वृद्धिको प्राप्त होता है ॥६९३॥६९४॥

यावन्ति सन्ति चिह्नानि यदि भवन्ति तानि तु ॥
सरलः स च विज्ञेयः सुशीलो धनवान् स्मृतः ॥ ६९५॥
रेखाद्वयं यथा दृष्टं यस्य भाले प्रदृश्यते ॥
दरिद्रः स च विज्ञेयश्चिररोगी धनोज्झितः ॥ ६९६ ॥

अर्थ–जिसके ललाटपर══ऐसी रेखा हों वह सरलस्वभाव, सुशील और धनवान् होता है,और जिस पुरुषके ललाटपर═ऐसी दो रेखाओंका चिह्न होय वह दरिद्री,चिरकालरोगी और निर्धन होता है ॥६९५॥६९६॥

धनिनो भाग्यशीलस्य प्रत्युत्पन्नमतेस्तथा ॥
भवन्ति यानि चिह्नानि तावन्ति लिखितानिवै ६९७
दृश्यते यस्य भाले तु रेखात्रयं समायतम् ॥
वाग्मी चैव सुशीलश्च नीतिमान् भाग्यवांस्तथा६९८
धन्यश्च प्रियभाषी च सर्वजनप्रियंकरः ॥
अभिरामश्च सर्वेषां तथा चानन्दवर्द्धनः ॥ ६९९ ॥

अर्थ–जिसके ललाटपर ⌒⌒ ऐसा चिन्ह होय वह भाग्यशाली धनवान् और प्रत्युत्पन्नमतिहोता है; जिसके ललाटपर═इसप्रकार लम्बी तीन रेखा हों, वह पुरुष वाचाल, सुन्दरस्वभाववाला, नीतिमान्, भाग्यशाली धन्यवादके योग्य, प्रियभाषण करनेवाला, उपकार करनेवाला और सबका प्रिय कार्य्य करनेवाला सुन्दर और सबका आनन्द बढानेवाला होता है ॥ ६९७ ॥ ६९८ ॥ ६९९ ॥

ईदृशं दृश्यते चिह्नं ललाटे यस्य जन्तुनः ॥
शाठ्येनैव बलेनैव लभते विपुलं धनम् ॥ ७०० ॥

ललाटे दृश्यते रेखा यदि भवति तादृशी ॥
सुखदुःखेन जीवेत स नरो नात्र संशयः ॥ ७०१ ॥

अर्थ–जिसके ललाटपर ══ ऐसी दो रेखा हों वह बलसे अथवा दुष्टता-करके बहुतसा धन इकट्ठाकरताहै, और जिसके ललाटपर  ऐसा चिन्ह होय वह पुरुष कभी दुःखी और कभी सुखी रहता है ७००–७०१

## अथ मशकादिचिह्नफलम् ।

भ्रुवोरन्ते ललाटे वा मशको राज्यसूचकः ॥७०२॥

अर्थ–जिसके भौंहके अन्तपर या ललाटपर मस्सा होय वह राजा होता है ॥ ७०२ ॥

नखेषु बिन्दवः श्वेता प्रायः स्युः स्वैरिणीस्त्रियाः ॥
पुरुषा अपि जायन्ते दुःखिनः पुष्पितैर्नखैः ॥७०३॥

अर्थ–नखोंपर श्वेतबिन्दु प्रायः व्यभिचारिणी स्त्रीके होते हैं. जिन पुरुषोंके नखोंपर पुष्पके चिन्ह हों, वे पुरुष प्रायः दुखी होते हैं ॥ ७०३ ॥

विषमैर्जत्रुभिर्निःस्वा अस्थिनद्धैश्च मानवाः ॥
उन्नतैर्भोगिनो निम्नैर्निस्वाः पीनैर्धनान्विताः ॥७०४॥

अर्थ–जिनकी जत्रु असमान हों वे निर्धन होते हैं, और अस्थि-नद्ध तथा निम्न हों तोभी निर्धन होते हैं; उन्नत हों तो भोगवान् होते हैं; पुष्ट हों तो धनी होते हैं ॥ ७०४ ॥

वामे कपोले मशकः शोणो मिष्टान्नदः शुभः ॥
तिलकं लालांच्छनं वापि हृदि सौभाग्यकारणम् ॥७०५॥

अर्थ–वाम कपोलपर लालवर्णका मस्सा होय तो मिष्टान्नका देनेवाला होता है; हृदयमें तिल होय अथवा कोई दूसरे चिन्ह हांय तो वह सौ-भाग्यका कारण होता है ॥ ७०५ ॥

यस्या दक्षिणवक्षोजे भवेत्तिलककांचनम् ॥
कन्याचतुष्टयं सूते सूते सा च सुतद्वयम् ॥ ७०६ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके दाहिने स्तनपर लालवर्णका तिल होय वह स्त्री चार कन्या और दो पुत्रोंको उत्पन्न करती है ॥ ७०६ ॥

तिलकं लांछनं शोणं यस्या वामकुचे भवेत् ॥
एकं पुत्रं प्रसूयादौ अन्ते च विधवा भवेत् ॥ ७०७ ॥

अर्थ-जिसके वामओरके स्तनपर लालवर्णका तिल होय या कोई चिन्ह होय तौ वह स्त्री प्रथम एकपुत्रको उत्पन्न करके फिर विधवा होजाती है ॥ ७०७ ॥

गुह्यस्य दक्षिणे भागे तिलकं यदि शोभते ॥
तदा क्षितिपतेः पत्नी सूते च क्षितिपं सुतम् ॥ ७०८ ॥

अर्थः-जिस स्त्रीकी योनिके दहिनी ओर तिल होय वह स्त्री राजाकी रानी होती है, और उसके गर्भसे जो पुत्र उत्पन्न होय वहभी राजाही होता है ॥ ७०८ ॥

नासाग्रे मशकः शोणो महिष्या एव जायते ॥
कृष्णः स एव भर्तृघ्न्याः पुंश्चल्या वा प्रकीर्त्तितः ॥ ७०९ ॥

अर्थ-नासिकाके अग्रभागमें लालरंगका मस्सा रानीकेही होता है और जिस स्त्रीकी नासिकाके अग्रभागपर काला मस्सा होय वह पतिघातिनी वा व्यभिचारिणी होती है ॥ ७०९ ॥

नाभेरधस्तात्तिलकं मशको लांछनं शुभम् ॥
मशकस्तिलकं चिह्नं गुल्फदेशे दरिद्रकम् ॥ ७१० ॥

अर्थ-नाभिके नीचे तिल हो, मस्सा हो, अथवा और कोई चिह्न होय तौ वह शुभ होता है, और गुल्फस्थानपर मस्सा, तिल, वा चिह्न होय तौ दरिद्र देता है ॥ ७१० ॥

नासाग्रे दृश्यते यस्यास्तिलकं मशकोऽपि च ॥
कृष्णदन्ता कृष्णजिह्वा दशाहेन पतिं हरेत् ॥ ७११ ॥

अर्थ-जिसकी नासिकाके अग्रभागपर तिल अथवा मस्सा होय और जीभ तथा दन्त कृष्णवर्ण हों तो वह दशदिनमें पतिका घात करती है ॥ ७११ ॥

तिलकं वामतो यस्याः कुक्षिदेशे च जायते ॥
मशकसन्निभं वापि राजपत्नी भवेद्ध्रुवम् ॥ ७१२ ॥

अर्थ-जिसकी पेटके वामभागमें तिलका चिन्ह होय अथवा मस्सा होय तो वह स्त्री निःसन्देह राजपत्नी होती है ॥ ७१२ ॥

पार्श्वे स्याद्दीर्घतिलकं यस्याः स्निग्धं च दृश्यते ॥
वामहस्तं पतिं प्राप्य पुत्रः पौत्रश्च वर्द्धते ॥ ७१३ ॥

अर्थ-जिसके पार्श्वभागमें बड़ा और चिकना तिलका चिह्न होय वह पतिको प्राप्त होकर पुत्र पौत्रादिको प्राप्त होती है ॥ ७१३ ॥

यस्या गण्डेऽधरे वामे हस्ते कर्णे गले तथा ॥
माषकं तिलकं विद्यात् सा कन्या सुखमेधते ॥ ७१४ ॥

अर्थ-जिस कन्याके वामकपोलपर, अधरपरके वामभागपर, वामहाथपर, वामकर्णपर, और गलेके वामभागपर उड़दकी दालके समान वा तिलका चिन्ह होय वह सुख भोगती है ॥ ७१४ ॥

आरक्तं वामके यस्याः कुक्षिदेशे च दृश्यते ॥
माषकं तिलकं वामे सा कन्या सुखभागिनी ॥ ७१५ ॥

अर्थ-जिसकी बाईं कोखमें लालवर्णका उड़दकी दालकी बराबर वा तिल चिह्न होय वह कन्या सुख भोगती है ॥ ७१५ ॥

पाणौ प्रदक्षिणावर्त्तौ धर्म्यौ वामो न शोभनः ।

दक्षिणावर्त्त ईरितः ॥ ७१६ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके हाथमें दहिनी ओरको आवर्त्त होय वह श्रेष्ठ होती है. बाईं ओरको होय तौ शुभ नहीं. नाभिमें, कर्णपर, और हृदयपर दक्षिणकी ओरको आवर्त्त होय तौ शुभ है ॥ ७१६ ॥

सुखाय दक्षिणावर्त्तः पृष्ठवंशस्य दक्षिणे ॥
अन्तःपृष्ठं नाभिसमो बह्वायुः पुत्रवर्द्धनः ॥ ७१७ ॥

अर्थ–पीठकी हड्डीके दाहिनी और दक्षिणकी ओरको झुँका हुआ आवर्त्त होय, और पीठपर वा नाभिके मध्यमें आवर्त्त होय तौ अधिक आयुवाले अधिक पुत्रोंको देता है ॥ ७१७ ॥

राजपत्न्याः प्रदृश्येत भगमूले प्रदक्षिणः ॥
स चेच्छकटभंगः स्याद्बहुपत्यः सुखप्रदः ॥ ७१८ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीकी योनिके ऊपरके भागमें दक्षिणावर्त्त चिह्न होय वह राजरानी होती है, और शकटभङ्गका चिह्न होय तौ बहु पुत्रवती और सुखी होती है ॥ ७१८ ॥

कटिगोगुह्यवेधेन पत्यपत्यानिपातनः ॥
स्यातामुदरभेदेन पृष्ठावर्त्तौ न शोभनः ॥
एकेन हन्ति भर्त्तारं भवेदन्येन पुंश्चली ॥ ७१९ ॥

अर्थ–योनिसे लेकर कमरतक आवर्त्त होय तौ पति और सन्तानको नष्ट करती है; पेटसे लेकर पीटपर्य्यन्त दक्षिणावर्त्त चिह्न होयँ तौ अशुभ होती है. इन दोनों चिह्नोंमेंसे यदि पहिला होय तौ स्त्री पतिघातिनी होती है, और द्वितीय होय तौ व्यभिचारिणी होती है ॥ ७१९ ॥

कण्ठगो दक्षिणावर्त्तो दुःखवैधव्यहेतुकः ॥ ७२० ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके कण्ठमें दक्षिणावर्त्त चिन्ह होय वह विधवा होती है, और अनेक प्रकारके दुःखोंको भोगती है ॥ ७२० ॥

सीमन्तेऽथ ललाटे वा त्याज्या दूरात् प्रयत्नतः ॥
सा पतिं हन्ति वर्षेण यस्या मध्यकृकाटिके ॥७२१॥

अर्थ-जिसकी बीच घांटीपर दक्षिणावर्त्तका चिन्ह हो वह विवाहके अनन्तर एकवर्षके भीतर विधवा हो जाती है और जिसके सीमन्त-स्थान अथवा ललाटपर दक्षिणावर्त्त होय वह पुरुष उस स्त्रीसे विवाह न करै ॥ ७२१ ॥

प्रदक्षिणो वा वामो वा रोम्णामावर्त्तकः स्त्रियाः ॥
एको वा मूर्द्धनि द्वौ वा वामे वामगतौ यदि ॥
आदशाहं पतिघ्नौ तौ त्याज्यौ दूरात् सुबुद्धिना ॥७२२॥

अर्थ-जिस स्त्रीके ललाटपर एक अथवा दो दक्षिणावर्त्त अथवा वामावर्त्तके चिन्ह हों अथवा मस्तकके वामभागमें दो वामावर्त्त हों, तौ निःसन्देह वह स्त्री कुलक्षणा होती है. इसके अनन्तर दशदिनके भीतरही विधवा होजाती है. बुद्धिमानोंको उचित है कि, ऐसी कन्याका परित्याग करैं उसके साथ विवाह न करैं ॥ ७२२ ॥

कट्यावर्त्ता च कुलटा नाभ्यावर्ता पतिव्रता ॥
पृष्ठावर्त्ता च भर्तृघ्नी कुलटा वाथ जायते ॥ ७२३ ॥

अर्थ-जिसकी कमरपर आवर्त्त हो वह पतिव्रता होती है; और जिसकी पीठपर आवर्त्त होय वह विधवा अथवा व्यभिचारिणी होती है ॥ ७२३ ॥

एकमुद्रो भवेद्राजा दशमुद्रो महाधनी ॥
मुद्राहीनस्तु दुःखी स्याद्द्वित्रिकाभ्यांतथैव च ॥७२४॥

अर्थ-जिसकी हथेलीमें एक मुद्रा हो वह राजा, जिसके दशमुद्रा हों वह महाधनी, जिसके तीन मुद्रा हों वह महादुःखी, और जिसके दो अथवा तीन मुद्रा हों वह दुःखी होता है ॥ ७२४ ॥

एकमुद्रो भवेद्राजा द्विमुद्रो धनवान्नरः ॥
त्रिमुद्रो रोगसम्पन्नो बहुमुद्रो बहुप्रजः ॥ ७२५ ॥

अर्थ-जिसकी हथेलीमें एक मुद्रा हो वह राजा, जिसके दो मुद्रा हों वह धनवान्, जिसके तीन मुद्रा हों वह रोगी, और जिसके बहुत मुद्रा हों वह बहुत पुत्रवाला होता है ॥ ७२५ ॥ ऐसा किसीका मत है ॥

संक्षेपात्कथितं सर्वं लक्षणं च शुभाशुभम् ॥
एतत्सर्वं परिज्ञाय विचार्यं विबुधैः सदा ॥ ७२६ ॥

अर्थ-यह सामुद्रिकका शुभाशुभलक्षण संक्षेपसे कहा· प्रवीण पुरुष भलीप्रकार इसका विचारकरके कार्य्य करैं ॥ ७२६ ॥

अज्ञात्वा लक्षणं ह्येतन्नरो वै कार्यमाचरेत् ॥
तस्माद्दुःखमवाप्नोति सत्यंसत्यं न संशयः ॥ ७२७ ॥

अर्थ-इन लक्षणोंको न जानकर जो पुरुष कार्य्य करता है वह दुःखित होता है. यह निःसन्देह सत्यसत्यही वार्त्ता है ॥ ७२७ ॥

## अथ छिक्काप्रकरणम् ।

अथ क्षुताख्यं वचनं क्रमेण महाप्रभावं प्रतिपादयामः॥
त्रस्यन्ति यस्माच्छकुनाः समस्ता मृगाधिनाथादिव वन्यसत्वाः ॥ ७२८ ॥

अर्थ-अब क्रमसे बड़ाभारी है प्रभाव जिसका ऐसे छिक्का प्रकरणका वर्णन करते हैं· जिस छिक्काके शकुनसे अन्य सम्पूर्ण शकुन इसप्रकार डरते हैं जैसे सिंहसे वनके सब जीव डरकर भागते है ॥ ७२८ ॥

सर्वस्य सर्वत्र च सर्वकालं क्षुतं न कार्ये क्वचिदेव शस्तम्॥
जाते क्षुते तेन न किंचिदेव कुर्यात् क्षुतं प्राणहरं गवांतु ॥

अर्थ-सब जगतमें सब समय सबकी छींक किसी कार्य्यमें भी शुभ

नहीं होती है. इसकारण छींक होनेपर कोईभी कार्य्य न करै, और गौ-ओंकी छींक तौ प्राणोंकोही हरनेवाली है ॥ ७२९ ॥

**निषिद्धमग्रेऽक्षिणि दक्षिणे च धनक्षयं दक्षिणकर्णदेशे ॥**
**तत्पृष्ठभागे कुरुतेऽरिवृद्धिं क्षुतं कृकाटयां शुभमादधाति॥**

अर्थ–आगे छींक होय तौ कार्य्यका निषेध करती है, और दाहिने नेत्रपर छींक होय तौभी कार्य्यका निषेध करती है; दाहिने कानपरकी छींक धननाश करती है; दाहिने कानके पीछे छींक होय तौ शत्रुओं-की वृद्धि करती है; कण्ठके पीछे छींक होय तौ शुभ करती है॥ ७३० ॥

**भोगाय वामश्रवणस्य पृष्ठे कर्णे च वामे कथितं जयाय॥**
**सर्वार्थलाभाय च वामनेत्रे जातं क्षुतं स्यात्क्रमतोऽष्टधैवम्**

अर्थ–वामकर्णपै छींक होय तौ जय होती है; वामकर्णके पृष्ठभा-गपर होय तौ भोग देती है; वाम नेत्रके आगे होय तौ सब पदार्थोंका लाभ होय. इस प्रकार छींक आठप्रकारकी होती है ॥ ७३१ ॥

**क्रमान्निषेधं गमनस्य विघ्नं कलिं समृद्धिं क्षुधमुग्ररोगम् ॥**
**करोति रोगक्षयमर्थलाभं दीप्तादिदि क्षुतमुद्गतं सत् ७३२**

अर्थ–दग्धा, प्रदीप्ता, धूमिता, इन दिशाओंमें छिका होय तौ गम-नका निषेध करती है; विघ्नकारक, कलहकारक, उग्ररोगकारक, अला-रोगकारक, दोषकारक होती है, और शान्ता दिशाओंमें छिका होय तौ समृद्धि, क्षुधा, और अर्थलाभ करती है ॥ ७३२ ॥

**प्रागन्यपुंसः परतो परस्मात् पुनः पुनर्वा तत एव जातम् ॥**
**वृद्धाच्छिशोर्वा कफतो हठाद्वा जातं क्षुतं कोपि वदन्त्य-सत्त्वम् ॥ ७३३ ॥**

अर्थ–पहिले किसी पुरुषकी छींक होय उसके अनन्तर औरकी

होय उसके अनन्तर औरकी होय, अथवा एक पुरुषकोही बारम्बार छींक आवै, वृद्धकी होय, बालककी होय, कफके कारण होय, अथवा कोई हठसे छींके, तौ वह सब छींका निष्फल होती हैं ॥ ७३३ ॥

**आद्यं तयोर्न स्वपने प्रशस्तं क्षुतं प्रशंसंति न भोजनादौ ॥ भवेत्कथंचिद्यदि भोजनान्ते भवेत्तदाऽन्याहनि भोज्यलाभः ॥ ७३४ ॥**

अर्थ—सोनेके आदि और अन्तमें छिका शुभ नहीं होती है; भोजनकी आदिमेंभी छींक शुभ नहीं है, यदि कदाचित् भोजनके अन्तमें छींक होय तौ दूसरे दिन सुन्दर २ पदार्थ मिलते हैं ॥ ७३४ ॥

**आदौ क्षुतं चेच्छकुनैस्ततः किं पश्चात् क्षुतं चेच्छकुनैस्ततः किम् ॥ जातानजातान् शकुनान्निहन्ति क्षुतं क्षणेनात्र न संशयोऽस्ति ॥ ७३५ ॥**

अर्थ—यदि शकुनकी आदिमें छींक होय तौ फिर शकुनसे कुछ नहीं होता, और शकुनके अन्तमें छींक होय तौ भी शकुनसे कुछ नहीं होता क्योंकि छिका निःसन्देह सम्पूर्ण शकुनोंको नष्ट करदेती है ॥ ७३५ ॥

**प्रयोजने यत्र कृतेऽपिजातं क्षुतं क्षणान्तद्विनिहंत्यवश्यम्॥ कार्योत्सुकेनापि मनागपीदं तस्मादपेक्ष्यं न विचक्षणेन ॥**

अर्थ— किसी कार्य्यका उद्देश करतेही यदि छींक होय तौ वह कार्य्य अवश्य नष्ट हो जाता है, और यदि कार्य्य करनेकी उत्कण्ठा करनेवाला स्वयं छींकै तौ कार्य्य नष्ट हो जाता है. इस कारण छींक हो तौ, कार्य्य करनेकी जल्दी न करै कुछकाल ठहर जाय ॥ ७३६ ॥

## अथाङ्गस्फुरणम्—

**अमोघनांगस्फुरणस्य सम्यक् प्रत्येकमध्यक्षफलप्रभावम्**

सर्वस्य यत्रावगतेस्स्वदेहादुत्पद्यते कर्मविपाकसंवित् ७३७॥

अर्थ—अब प्रत्येक अंगके फड़कनेका प्रत्यक्ष प्रभाव दिखानेवाला फल कहते हैं. जिस अंगस्फुरणके होनेसे प्रत्येक पुरुषोंको अपने शरीरसेही कार्य्यके परिपाक अर्थात् कार्य्यसिद्धिका ज्ञान होता है ॥ ७३७॥

मूर्ध्नि स्फुरत्याशु पृथिव्यवाप्तिः स्थानप्रवृद्धिश्च ललाटदेशे ॥ भ्रूघ्राणमध्ये प्रियसंगमः स्यान्नासाक्षिमध्ये च सहायलाभः ॥ ७३८ ॥

अर्थ—मस्तक फड़के तौ शीघ्र पृथिवीकी प्राप्ति होती है; ललाट फड़के तौ स्थानकी वृद्धि होय; भ्रुकुटी और नासिकाका मध्यभाग फड़के तो प्रियसंगम होय; नेत्र और नासिकाका मध्य फड़के तौ सहायककी प्राप्ति होती है ॥ ७३८ ॥

दृगन्तमध्ये स्फुरणेऽर्थसम्पत् सोत्कण्ठितः स्यात् स्फुरणे दृगादौ ॥ जयो दृशोधःस्फुरणे रणे स्यात् प्रियश्रुतिः प्रस्फुरिते च कर्णे ॥ ७३९ ॥

अर्थ—नेत्रोंके अन्त और मध्यम फड़कै तौ धनसम्पत्ति मिले; नेत्रोंकी आदि फड़के तौ उत्कण्ठा होय; नेत्रोंके नीचेके भागमें स्फुरण होय तौ संग्राममें जय होय; कर्ण फड़कैं तौ प्रियवार्त्ताका श्रवण होय ॥ ७३९ ॥

योषित्समृद्धिः स्फुरिते च गण्डे घ्राणे च सौरभ्यमुदौ भवेताम् ॥ भोज्येष्टसद्भावधरोष्ठयोश्च स्कन्धे गले भोगविवृद्धिलाभौ ॥ ७४० ॥

अर्थ—कपोल फड़कैं तौ स्त्रीका लाभ होय; नासिका फड़कैं तौ सुगन्धियुक्त पदार्थ और आनन्दकी प्राप्ति होय; अधर होंठ फड़के तौ भो-

ज्यपदार्थ और इष्ट जनकी प्राप्ति होय; कन्धा फड़कै तौ वृद्धि होय, गला फड़कै तौ लाभ होय ॥ ७४० ॥

**स्पंदो भुजस्येष्टसमागमाय स्पन्दः करस्य द्रविणाप्तिहेतुः ॥ स्पन्दश्च पृष्ठस्य पराजयाय स्पन्दो जयायोरसि मानवानाम् ॥ ७४१ ॥**

अर्थ—भुजा फड़कै तौ मित्र संगम होय; हाथ फड़कैं तौ धनकी प्राप्ति होय; पीठ फड़कै तौ पराजय होय, और हृदय फड़कै तौ मनुष्योंको जयकारक होता है ॥ ७४१ ॥

**पार्श्वप्रकम्पे भवति प्रमोदः स्तनप्रकम्पे विषयस्य लाभः कटिप्रकम्पे तु बलिप्रमोदौ नाभिप्रकम्पे निजदेशनाशः ॥**

अर्थ—पार्श्वभाग फड़कै तौ खुशी होय; स्तन फड़कै तौ विषयसुखकी प्राप्ति होय; कमर फड़कै तौ बल और खुशीकी प्राप्ति होय; नाभि फड़कै तौ निजदेशका नाश होय ॥ ७४२ ॥

**धनर्द्धिरन्त्रप्रभवे प्रकम्पे दुःखं धनांतं हृदयस्य चान्तः ॥ स्फिक्पायुकम्पेऽपि च वाहनाप्तिर्वराङ्गकम्पे वरयोषिदाप्तिः ॥ ७४३ ॥**

अर्थ—आँतैं फड़कैं तौ धनकी समृद्धि होय; हृदयके भीतर स्फुरण होय तौ दुःख और धननाश होय; कोख और गुदा फड़कै तौ सवारी मिलै; वराङ्ग ( लिङ्ग ) फड़कै तौ सुन्दर स्त्रीकी प्राप्ति होय ॥ ७४३ ॥

**मुष्के सकम्पे तनयस्य जन्म बस्तौ सकम्पे युवतिप्रवृद्धिः॥ दोषः प्रकम्पे पुनरूरुपृष्ठेउरोःपुरःस्यात्सुसहायलाभः७४४**

अर्थ—अण्डकोश फड़कै तौ पुत्रजन्म होय; नाभिका अधोभाग फड़कै तौ स्त्रियोंकी वृद्धि होय; भुजा—ऊरुका पृष्ठभाग और ऊरूका अग्रभाग फड़कै तौ सुन्दर सहायकका लाभ होय ॥ ७४४ ॥

स्याज्जानुकम्पे त्वचिरेण सन्धिर्जंघाप्रकम्पेपि च लाभनाशः ॥ स्थानाप्तिरूर्ध्वं चरणस्य कम्पे यात्रा सलाभांघ्रितलप्रकम्पे ॥ ७४५ ॥

अर्थ–जानु फड़कैं तौ शत्रुके साथ शीघ्रही सन्धि होय; जंघा फड़कैं तौभी लाभका नाश होय, पैरका तलुवा फड़कै तो जाने कि यात्रा होगी और लाभभी होगा ॥ ७४५ ॥

## अथ गोलक्षणम् ।

पराशरः प्राह बृहद्रथाय गोलक्षणं यत् क्रियते ततोऽयम् ॥ मया समासः शुभलक्षणास्ताः सर्वास्तथाप्यागमतोऽभिधास्ये ॥ ७४६ ॥

अर्थ–पराशर मुनिने शिष्य बृहद्रथको जो गोलक्षण कहा है उस ग्रन्थपरसे हम संक्षेप करके कहते हैं. सबही गौ शुभलक्षण होतीं हैं तौभी शास्त्रसे उनके शुभ अशुभ लक्षण कहते हैं ॥ ७४६ ॥

साम्रा विलरूक्षाक्ष्यो मूषकनयनाश्च न शुभदा गावः ॥
प्रचलच्चिपिटविषाणाः करटाः खरसदृशवर्णाश्च ॥ ७४७ ॥
दशसप्तचतुर्दन्त्यः प्रलम्बमुण्डानना विनतपृष्ठाः ॥
ह्रस्वस्थूलग्रीवा यवमध्यादारितखुराश्च ॥ ७४८ ॥
श्यावातिदीर्घजिह्वा गुल्फैरतितनुभिरतिबृहद्भिर्वा ॥
अतिककुदाः कृशदेहा नेष्टा हीनाधिकांग्यश्च ॥ ७४९ ॥

अर्थ–जिन गौओंके नेत्र अश्रुओंसे भरे रहें, गधले होयँ और रूखे होयँ वे गौ शुभ नहीं होतीं, और मूषकके समान जिनके नेत्र होयँ वेभी शुभ नहीं; जिनके सींग हिलते होयँ और चपटे होयँ वे गौ शुभ नहीं; करट अर्थात् लाल मिला हुआ जिनका रंग होय, और गर्दभके

तुल्य जिनका रंग हो वे गौभी शुभ नहीं होतीं है; जिनके मुखमें दश सात अथवा चार दन्त हों, जिनका मुख लम्बा और मुंड अर्थात् शृङ्गोसे रहित हों, जिनकी पीठ झुँकी हुई हो, जिनकी ग्रीवा छोटी और मोटी होय जिनका मध्यभाग यवके तुल्य हो, अर्थात् बीचसे बहुत थोड़ा होय खुर बहुत कटरहे होयँ, जिनकी जिव्हा श्यामरंगकी और बहुत लम्बी हो, जिनके गुल्फ ( टकने ) बहुत बड़े होयँ, जिनका ककुद् बहुत ऊंचा हो, जिनका देह सदा कृश रहै और जिनका कोई अंग हीन अथवा अधिक हो ऐसी गौ शुभ नहीं होती हैं ॥ ७४७ ॥ ७४८ ॥ ७४९ ॥

वृषभोऽप्येवं स्थूलातिलम्बवृषणः शिराततक्रोडः ॥
स्थूलशिराचितगण्डस्त्रिस्थानं मेहते यश्च ॥ ७५० ॥
मार्जाराक्षः कपिलः करटो वा न शुभदा द्विजस्यैव ॥
कृष्णोष्ठतालुजिह्वास्त्रसनो यूथस्य नाशकरः ॥ ७५१ ॥

अर्थ–पहिले कहेहुए गौवोंके लक्षणों करके युक्त वृष होय तौ शुभ नहीं होताहै; स्थूल और लंबे हैं वृषण ( अंडकोश ) जिसके, नाड़ियों करके व्याप्त है क्रोड़ ( अगले दोनों पैरोंका भाग ) जिसका, स्थूल शिराओं करके व्याप्त हैं कपोल जिसके, तीन स्थानोंसे जो मेहन करै अर्थात् जिसके दोनों नेत्रोंसे आँसू टपकें और शिश्नसे मूत्र गिरै, बिड़ालकेसे जिसके नेत्र हों, जिसका कपिल अथवा करट ( नीलरक्त ) रंग हो ऐसा वृष ब्राह्मणकोभी शुभ नहीं होता और वर्णोंकी तौ क्या कथा ? जिसके ओष्ठ, तालु और जिव्हा काले रंगके होंय और जो वृष त्रसन अर्थात् डरानेवाला हो वह जिस यूथमें रहै उस यूथका नाश करता है ॥ ७५० ॥ ७५१ ॥

स्थूलशकृन्मणिशृङ्गः सितोदरः कृष्णसारवर्णश्च ॥
गृहजातोऽपि त्याज्यो यूथविनाशावहो वृषभः७५२॥

अर्थ–जिसका गोबर मणि ( लिंगका अग्रभाग ) और शृंग स्थूल

होय, श्वेतवर्णका पेट होय और शरीरका रंग कृष्ण और श्वेत मिलाकर हो ऐसा वृष घरमें उत्पन्न हुआ होय तौभी उसका त्याग करना चाहिये, वह यूथका नाश करनेवाला होता है ॥ ७५२ ॥

श्यामकपुष्पचिताङ्गो भस्मारुणसन्निभो बिडालाक्षः ॥
विप्राणामपि न शुभं करवेति वृषभः परिगृहितः॥७५३॥

अर्थ-जिसके शरीरमें काले फूल पड़ रहे हों, भस्मकासा रंग और लाल रंग मिला रंग हुआ जिसका रंग हो और बिल्लीके समान जिसके नेत्र हों ऐसा वृष ग्रहण किया हुआ ब्राह्मणोंकोभी शुभ नहीं होता है ॥ ७५३ ॥

यो चोद्धरन्ति पादान् पङ्कादिव योजिताः कृशग्रीवाः ॥
काचरनयना हीनाश्च पृष्ठतस्तेन भारसहाः ॥ ७५४ ॥

अर्थ-जो बैल भारके नीचे जोड़े हुए ऐसे पैर उठावें, जैसे कर्दममें गढे हुए पैरोंको बड़े यत्नसे उखाड़ते हैं, जिनकी ग्रीवा दुर्बल होय और नेत्र काचरे होयँ और पीठ छोटी अथवा दबी हुई होवे वे बैल भार उठानेमें समर्थ होते हैं ॥ ७५४ ॥

मृदुसंहतताम्रौष्ठास्तनुस्फिजस्ताम्रतालुजिह्वाश्च ॥
ह्रस्वतनूच्चश्रवणा सुकुक्षयः स्पष्टजंघाश्च ॥ ७५५ ॥
आताम्रसंहतखुरा व्यूढोरस्का बृहत्ककुदयुक्ताः ॥
स्निग्धश्लक्ष्णतनुत्वग्रोमाणस्ताम्रतनुशृङ्गाः ॥ ७५६ ॥
तनुभूस्पृग्वालधयो रक्तान्तविलोचना महीच्छासाः ॥
सिंहस्कन्धास्तन्वल्पकम्बलाः पूजिताः सुगताः॥७५७ ॥

अर्थ-कोमल मिलेहुए और तांबेके रंगके जिनके ओष्ठ हों, छोटी स्फिक् ( कटिस्थ मांस पिंड ) हों, तांबेके रंगके तालु और जीभ हों, छोटे पतले और ऊंचे जिनके कान हों, सुन्दर पेट हो, सीधी जंघा होयँ

तांबेके वर्ण और मिलेहुए खुर होयँ छाती दृढ़ होयँ बड़ा ककुद होय स्निग्ध ( चिकने ) श्लक्ष्ण ( कोमल ) और तनु ( पतले ) जिनकी त्वचा और रोम हों, तांबेके रंगके शरीर और सींग हों, पतली और भूमिको स्पर्श करनेवाली जिनकी पूँछ हो, जिनके नेत्रोंके अन्त लाल हों, बड़े श्वास लेनेवाले हों, सिंहकेसे जिनके कंधे हों पतला और छोटा जिनका गलकंबल हो और सुन्दर जिनकी गति हो ऐसे वृषभ अच्छे होते हैं ॥ ७५५ ॥ ७५६ ॥ ७५७ ॥

**वामावर्त्तैर्वामे दक्षिणपार्श्वे च दक्षिणावर्त्तैः ॥**
**शुभदा भवन्त्यनडुहो जंघाभिश्चैकनिभाभिः ॥ ७५८ ॥**

अर्थ-जिनके वामभागमें बाईं ओर घूमे हुए आवर्त्त ( भौंरी ) और दक्षिण भागमें दहिनी ओर घूमे हुए आवर्त्त हों और जिनकी जंघा मेढ़ेकी जंघाओंके तुल्य हों अर्थात् मांससे पूर्ण हों ऐसे बैल शुभ होते हैं ॥ ७५८ ॥

**वैदूर्यमल्लिकाबुद्बुदेक्षणाः स्थूलनेत्रवर्ष्माणः ॥ पार्ष्णि-भिरस्फुटिताभिः शस्ताः सर्वेपि भारसहाः ॥ ७५९ ॥**

अर्थ-वैदूर्यमणिके तुल्य जिनके नेत्र होयँ मल्लिकाके पुष्पके समान जिनके नेत्र हों अर्थात नेत्रोंके बाहिर चारों ओर शुक्लरेखा हों, जलबु-द्बुदके समान जिनके नेत्र हों, जिनके नेत्र और शरीर स्थूल हों खुरके पिछले भाग जिनके फूटेहुए न हों, ये सब बैल शुभ होते हैं, और भार उठा सक्ते हैं ॥ ७५९ ॥

**घ्राणोद्देशेसवलिर्मार्जारमुखः सितश्च दक्षिणतः ॥**
**कमलोत्पललाक्षाभः सुवालधिर्वाजितुल्यजवः ॥७६०॥**
**लम्बैर्वृषणैर्मेषो दरश्च संक्षिप्तवंक्षणक्रोडः ॥ ज्ञेयो-भाराध्वसहो जवेऽश्वतुल्यश्च शस्तफलः ॥ ७६१ ॥**

अर्थ–जिस बैलकी नासिकामें बलि पड़े मार्जारके तुल्य जिसका मुख हो, दहिना भाग जिसका श्वेत हो, कमल, नीलकमल अथवा लाक्षाके समान जिसकी कान्ति हो, अच्छी पूंछ हो, गमनमें घोड़ेकासा बल हो, लंबे वृषण होंय मेढ़ेकासा पेट हो वंक्षण ( पिछली जंघा और वृषणोंका मध्यभाग ) और क्रोड़ ( अगली जंघाओंका मध्यभाग ) जिसके संकुचित होय ऐसा बैल भार उठानेमें और मार्ग चलनेमें समर्थ होता है, अश्वके तुल्य जिसका वेग होय वह बैल शुभही होता है ॥ ७६० ॥ ७६१ ॥

सितवर्णः पिङ्गाक्षस्ताम्रविषाणोक्षणा महावक्त्रः ॥
हंसो नाम शुभफलो यूथस्य विवर्धनः प्रोक्तः ॥७६२॥

अर्थ–जिस बैलका श्वेतवर्ण होय, पिंगल नेत्र हों, तांबेके रंगके शृंग और नेत्र होंय, बड़ा मुख होय, उसको हंस कहते हैं वह शुभ होता है और जिस यूथमें रहै उसकी वृद्धि करता है ॥ ७६२ ॥

भूस्पृग्वालधिरा ताम्रविषाणो रक्तदृक् ककुद्मी च ॥
कल्माषश्च स्वामिनमचिरात्कुरुते पतिं लक्ष्म्याः ७६३

अर्थ–जिस बैलकी पूंछ भूमिको स्पर्श करती होय तांबेके रंगके जिसके सींग होयँ लाल नेत्र होयँ, कुकुद ( थूही ) करके युक्त हो और जिसका रंग कल्माष हो अर्थात् श्वेत, रक्त, पीत, कृष्ण, मिला होंय ऐसा बैल अपने स्वामीको शीघ्रही लक्ष्मीका पति करलेता है ॥७६३॥

यो वा सितैश्च चरणैर्यथेष्टवर्णश्च सोऽपि शस्तफलः ॥
मिश्रफलोपि ग्राह्यो यदि नैकान्तप्रशस्तोऽस्ति ॥७६४॥

अर्थ–चाहे जिस रंगके बैल होयँ परन्तु जिसके चारों पैर श्वेत होंय वह शुभही होता है; जो केवल शुभलक्षणोंवाला बैल न मिलै तौ मिश्रफल अर्थात् जिसमें कोई लक्षणशुभ और कोई अशुभ हों ऐसाही बैल लेवें, परन्तु शुभलक्षण अधिक होने चाहिये ॥ ७६४ ॥

## अथ श्वानलक्षणम् ।

पादाः पञ्च नखास्त्रयोऽग्रचरणः षड्भिर्नखैर्दक्षिण-
स्ताम्रोष्ठाग्रनसो मृगेश्वरगतिर्जिघ्रन् भुवं याति यः ॥
लांगूलं ससटं दृगृक्षसदृशी कर्णौ च लम्बौ मृदू यस्य
स्यात्स करोति पोष्टुरचिरात् पुष्टां श्रियं स्वागृहे ॥७६५॥

अर्थ–जिस कुत्तेके तीन पैर पांच २ नखों करके युक्त होंय और आगेका दहिना पैर छः नखों करके युक्त हों ओष्ठ और नासिकाके अग्र तांबेके तुल्य लाल रंगके होयँ सिंहके तुल्य जिसकी गति होय और भूमिको सूंघता हुआ चलै, जिसकी पूँछ सटा करके युक्त अर्थात् बहुत बालोंसे गभरी होय रीछकेसे नेत्र होंय दोनों कान लंबे और कोमल होयँ ऐसा कुत्ता अपने पोषण करनेवाले स्वामीके घरमें शीघ्रही लक्ष्मीको बढ़ाता है ॥ ७६५ ॥

पादे पादे पञ्च पञ्चाग्रपादे वामे यस्याः षण्नखा-
मल्लिकाक्ष्याः ॥ वक्रं पुच्छं पिंगला लम्बकर्णा या
सा राष्ट्रं कुक्कुरी पाति पोष्टुः ॥ ७६६ ॥

अर्थ–जिस कुत्तीके तीन पैरोंमें पांच २ नख होयँ और अगले बाँये पैरमें छः नख होयँ और मल्लिकाक्षी होय अर्थात् जिसके नेत्रोंके बाहिर मल्लिकापुष्पकीसी स्वेत रेखा होयँ पूंछ टेढ़ी होय पिंगल वर्ण होय और लंबे कान होंय ऐसी कुत्ती अपना पोषण करनेवाले राजाके राज्यकी रक्षा करती हैं ॥ ७६६ ॥

## अथ कुक्कुटलक्षणम्—

कुक्कुटस्त्वृजुतनूरुहांगुलिस्ताम्रवक्रनखचूलिकः
सितः ॥ रौति सुस्वरमुषात्यये च यो वृद्धिदः
स नृपराष्ट्रवाजिनाम् ॥ ७६७ ॥

अर्थ-जिस कुक्कुट ( मुर्गा ) के पक्ष और अंगुली सीधी होयँ, मुख नख और चोटी जिसके तांबेके समान लाल रंग होयँ, श्वेतवर्ण होयँ, रात्रिकी समाप्तिमें अच्छे स्वरसे बोले ऐसा कुक्कुट राजाके राज्य और घोड़ोंको वृद्धि करता है ॥ ७६७ ॥

**यवग्रीवो यो वा बदरसदृशो वापि विहगो बृहन्मूर्धा वर्णैर्भवति बहुभिर्यश्च रुचिरः ॥ स शस्तः संग्रामे मधुमधुपवर्णश्च जयकृत् न शस्तोऽतो योऽन्यः कृशतनुरवः खंजचरणः ॥ ७६८ ॥**

अर्थ-जिस कुक्कुटकी ग्रीवा जौके आकार होय, बदरीफल ( बेर ) के तुल्य जिसका लाल रंग होय, बड़ा मस्तक होय, बहुतसे श्वेत, पीत, रक्त, कृष्ण आदि वर्णों करके युक्त होय, और सुन्दर होय ऐसा कुक्कुट युद्धमें शुभ होता है, शहतके तुल्य जिसका रंग हो अथवा भ्रमरके तुल्य जिसका रंग होय वह कुक्कुटभी युद्धमें जय करता है· इससे भिन्न जो और भांतिका कुक्कुट होय वह शुभ नहीं होताहै और जिसका शरीर कृश होय, शब्द मंद होय और पैरसे लंगड़ा होय वह कुक्कुटभी शुभ नहीं होता है ॥ ७६८ ॥

**कुक्कुटी च मृदुचारुभाषिणी स्निग्धमूर्त्तिरुचिराननेक्षणा सा ददातिसुचिरं महीक्षितां श्रीयशोविजयवीर्यसम्पदः ॥**

अर्थ-जो कुक्कुटी (मुर्गी) मृदु और सुन्दर शब्द करे, शरीर जिसका स्निग्ध होय, मुख और नेत्र सुन्दर होंय ऐसी कुक्कुटी राजाओंको चिरकालपर्यन्त लक्ष्मी, यश, विजय, बल, और संपत्ति देती है ॥ ७६९ ॥

## अथ कच्छपलक्षणम् ।

**स्फटिकरजतवर्णो नीलराजीविचित्रः कलशसदृशमूर्त्तिश्चारुवंशश्च कूर्मः ॥ अरुणसमवपुर्वा सर्षपाकार-**

**चित्रः सकलनृपमहत्वं मन्दिरस्थः करोति ॥ ७७० ॥**

अर्थ–जो कूर्म ( कछुआ ) स्फटिक अथवा चाँदीके तुल्य शुक्लवर्ण हो और नीली रेखाओंकरके चित्रित होय, कलशके समान जिसका आकार होय, सुन्दर जिसका वंश हो, अथवा लाल रंगका कूर्म होय और सर्षपसे बिन्दुओं करके विचित्रित होय तो ऐसा कूर्म घरमें स्थित होय तौ सब राजाओंमें बड़ाई करता है ॥ ७७० ॥

**अंजनभृङ्गश्यामतनुर्वा बिन्दुविचित्रोऽव्यङ्गशरीरः ॥ सर्पशिरावा स्थूलगलोयःसोऽपिनृपाणां राष्ट्रविवृद्ध्यै७७१**

अर्थ–अंजन अथवा भ्रमरके तुल्य जिस कूर्मका श्याम शरीर होय और बिन्दुओंकरके विचित्रित हो, सब अंग पूर्ण होय, सर्पके समान जिसका शिर होय और गला स्थूल होय, ऐसा कूर्म राजाओंका राज्य बढ़ानेके लिये होता है ॥ ७७१ ॥

**वैदूर्यत्विट् स्थूलकण्ठस्त्रिकोणो गूढच्छिद्रश्चारुवंशश्च शस्तः ॥ क्रीडावाप्यां तोयपूर्णे मणौ वा कूर्मः कार्यो मङ्गलार्थं नरेन्द्रैः ॥ ७७२ ॥**

अर्थ–जिस कूर्मकी वैदूर्यमणिके समान कान्ति होय, कंठ स्थूल होय, त्रिकोण आकार होय, सब छिद्र उसके गुप्त होयँ और पृष्ठवंश सुन्दर होय, ऐसे कूर्मको मंगलके लिये राजा अपनी क्रीड़ावापीमें अथवा जलसे भरे बड़े मटकेमें रक्खै ॥ ७७२ ॥

## अथ छागलक्षणम्—

**छागशुभाशुभलक्षणमभिधास्ये नवदशाष्टदन्तास्ते ॥ धन्याः स्थाप्या वेश्मनि संत्याज्याः सप्तदन्ता ये ॥७७३॥**

अर्थ–अब बकरेका शुभ अशुभ लक्षण कहते हैं–जिसके नव दश

अथवा आठ दन्त होयँ वे छाग शुभ होते हैं और घरमें रखने चाहिये जिनके सप्त दन्त होयँ वे अशुभ होते हैं, उनको न रक्खै ॥ ७७३ ॥

**दक्षिणपार्श्वे मण्डलमसितं शुक्लस्य शुभफलं भवति ॥**
**ऋष्यनिभकृष्णलोहितवर्णानां श्वेतमपि शुभदम् ७७४॥**

अर्थ-श्वेत रंगका छाग होय और उसके दहिने पार्श्वमें काले रंगका मंडल होय तो शुभ है; जिस छागका रंग ऋष्यमृगके तुल्य नीला होय, काला होय, अथवा लाल होय या श्वेत होय तौ शुभ होताहै ७७४

**स्तनवदवलम्बते यः कण्ठेऽजातां मणिः स विज्ञेयः ॥**
**एकमणिशुभफलकृद्धन्यतमा द्वित्रिमणयो ये ॥ ७७५ ॥**

अर्थ-छागोंके गलेमें जो स्तनकी भाँति लटकता है उसको मणि कहते हैं, जिस छागके एक मणि हो वह शुभ फल करता है और जिनके दो अथवा तीन मणि होयँ वे छाग बहुतही शुभ होते हैं ॥७७५॥

**मुण्डाः सर्वे शुभदाः सर्वसिताः सर्वकृष्णदेहाश्च ॥**
**अर्धाऽसिताः सितार्धा धन्याः कपिलार्धकृष्णाश्च ७७६**

अर्थ-मुंड अर्थात् जिनके सींग न होयँ ऐसे सब छाग शुभ होते हैं; जिनका सब शरीर श्वेत हो अथवा सब शरीर कृष्ण हो वे छाग शुभ होतेहैं, जो छाग आधे काले और आधे श्वेत होयँ वे शुभ होते हैं; जो छाग आधे कपिल और आधे कृष्ण होयँ वेभी शुभ होते हैं ॥ ७७६ ॥

**विचरति यूथस्याग्रे प्रथममम्भोऽवगाहते योऽजः ॥**
**स शुभः सितमूर्धा वा मूर्धनि वा कृत्तिका यस्य ॥७७७॥**

अर्थ-जो छाग अपने यूथके आगे चलै और सबसे पहले जलमें घुसै वह शुभ होता है; अथवा जिसका शिर श्वेत होय अथवा जिसके शिरमें कृत्तिका नक्षत्रकी भांति टीका होय अर्थात् छः बिन्दु होयँ वह शुभ होता है. ऐसे छागको कुट्टक कहते हैं ॥ ७७७ ॥

सपृषतकण्ठशिरा वातिलपिष्टनिभश्च ताम्रदृक्शस्तः॥
कृष्णचरणः सितो वा कृष्णो वा श्वेतचरणो यः ॥७७८॥

अर्थ-जिसके कंठ और शिरमें दूसरे रंगके बिन्दु होयँ, तिलपिष्टके समान अर्थात् श्वेत पीत मिला हुआ जिसका रंग हो और तांबेके रंगके तुल्य जिसके लाल नेत्र होयँ वह शुभ होता है. जिसके शरीरका रंग श्वेत हो और चारों पैर काले होयँ अथवा शरीर काला होय और चारों पैर श्वेत होयँ वह छाग भी शुभ होता है. ऐसे छागको कुटिल कहते हैं ॥ ७७८ ॥

यः कृष्णाण्डः श्वेतो मध्ये कृष्णेन भवति पट्टेन ॥
यो वा चरति सशब्दं मन्दं च स शोभनश्छागः ॥ ७७९ ॥

अर्थ-जिस छागके शरीरका रंग श्वेत होय, और अंड उसके काले होयँ और मध्यभागमें काला पट्टा होय वह शुभ होता है. जो छाग धीरे धीरे चरै और उसके चरनेके समय शब्द होय वह शुभ होता है; ऐसे छागको जटिल कहते हैं ॥ ७७९ ॥

ऋष्यशिरोरुहपादो यो वा प्राक् पाण्डुरो परे नीलः ॥
स भवति शुभकृच्छागः श्लोकश्चाप्यत्र गर्गोक्तः ॥७८०॥

अर्थ-ऋष्यमृगके रंगके समान नीले जिस छागके शिरके बाल और पैर होयँ, और जो छाग अगले भागमें पाँडुवर्ण और पिछले भागमें नीलवर्ण होय वह छाग शुभ होता है. ऐसे छागको वामन कहते हैं. इस अर्थमें गर्गमुनिका श्लोक लिखते हैं ॥ ७८० ॥

कुट्टकः कुटिलश्चैव जटिलो वामनस्तथा ॥
ते चत्वारः श्रियः पुत्रा नालक्ष्मीके वसन्ति वै ॥ ७८१॥

अर्थ-कुट्टक, कुटिल, जटिल और वामन अर्थात जिनके पहिले लक्षण कहे हैं ये चारों छाग लक्ष्मीके पुत्र होनेसे लक्ष्मीहीन स्थानमें नहीं

रहते अर्थात् जहाँ ऐसे छाग होयँ वहाँ लक्ष्मीका निवास होताहै ॥७८१॥

**अथाप्रशस्ता खरतुल्यनादाः प्रदीप्तपुच्छाः कुनखा विवर्णाः ॥ निकृत्तकर्णा द्विपमस्तकाश्च भवन्ति ये चामिततालुजिह्वाः ॥ ७८२ ॥**

अर्थ–अब अशुभ छाग कहते हैं.जिनका शब्द गर्दभके शब्दके तुल्य होय, जिनकी पूँछ प्रदीप्त अर्थात् टेढ़ी अथवा बहुत उष्ण होय, बुरे चरण होंय, शरीरका रंग बुरा होय कान कटे होयँ और हाथीकेसा मस्तक होय, जिनके तालु और जिह्वा काले होयँ, ऐसे छाग अशुभ होते हैं७८२

**वर्णैः प्रशस्तैर्मणिभिश्च युक्ता मुण्डाश्च ये ताम्रविलोचनाश्च ॥ ते पूजिता वेश्मसु मानवानां सौख्यानि कुर्वन्ति यशः श्रियं च ॥ ७८३ ॥**

अर्थ–जो छाग उत्तम रंग कंठ मणियों करकेयुक्त होयँ, मुंड अर्थात् विना सींगोंके होयँ और जिनके लाल नेत्र होयँ वे छाग मनुष्योंके घरमें शुभ होते हैं और सुख यश और लक्ष्मीको करते हैं ॥ ७८३ ॥

## अथाश्वलक्षणम्–

**दीर्घग्रीवाक्षिकूटस्त्रिकहृदयपृथुस्ताम्रताल्वोष्ठजिह्वः सूक्ष्मत्वक् केशवालः सुशफगतिमुखो ह्रस्वकर्णोष्ठपुच्छः ॥ जंघाजानूरुवृत्तः समसितदशनश्चारुसंस्थानरूपो वाजी सर्वाङ्गशुद्धो भवति नरपतेः शत्रुनाशाय नित्यम् ॥ ७८४ ॥**

अर्थ–जिस घोड़ेकी ग्रीवाँ और अक्षिकूट अर्थात् नेत्रोंका कोश दीर्घ होय त्रिक(कटिभाग) और हृदय विस्तीर्ण होय, तालु ओंठ और जिह्वा तांबेके तुल्य लालरंगके होंय, शरीरकी त्वचा, मस्तकके केश और पूंछके

बाल सूक्ष्म हों, शफ गति और मुख सुन्दर होय, कान और पूंछ ह्रस्व अर्थात् छोटे होय यहां पुच्छशब्द करके पूंछके नीचेकी हड्डीका ग्रहण होता है. जंघा, जानु और ऊरु जिसके गोल हों, सम ( बराबर ) और श्वेत दन्त हों, जिसका आकार और रूप सुन्दर होय, सर्वांग शुद्ध होय अर्थात् किसी अंगमें कोई अशुभ आवर्त न होय वह घोड़ा जिस राजाके पास होय उसके नित्य शत्रुओंका नाश होता है ॥ ७८४ ॥

अश्रुपातहनुगण्डहृद्गलप्रोथशंखकटिबस्तिजानुनि ॥ मुष्कनाभिककुदे तथा गुदे सव्यकुक्षिचरणेषु चाशुभाः ॥ ७८५ ॥

अर्थः-अश्रुपात यानी आंसू गिरनेके स्थान जो नेत्रोंका अधोभाग हनु मुख गंड (कपाल) हृदय, गलप्रोथ (नासिकाका अधोभाग), शंख ( कनपटी ) कर्णके समीप, कटि, बस्ति ( नाभि लिंगका मध्यभाग ) जानु, अण्डकोश, नाभि, ककुद ( बाहुके पृष्ठभागमें कृकाटिकाके समीप) गुदा, दक्षिणकुक्षि और पैर इनमें जो आवर्त्त यानी भौंरी होय वे अशुभ होते हैं ॥ ७८५ ॥

ये प्रपानगलकर्णसंस्थिताः पृष्ठमध्यनयनोपरि स्थिताः ॥ ओष्ठसक्थिभुजकुक्षिपार्श्वगास्ते ललाटसहिताः सुशोभनाः ॥ ७८६ ॥

अर्थ-जो आवर्त्त ( भौंरी ) प्रपान (ऊपरके ओंठका तल ),कंठ, कर्ण, पीठिका मध्यम, नेत्रोंके ऊपर भ्रुवोंके समीप, ओंठ, सक्थि ( पिछला भाग ), भुज ( अगले पैर ), वामकुक्षि, पार्श्व और ललाट इन स्थानोंमें होय वे शुभ होते हैं ॥ ७८६ ॥

तेषां प्रपान एको ललाटकेशेषु च ध्रुवावर्त्तः ॥

**रन्ध्रापरंध्रमूर्धनि वक्षसि चेति स्मृतौ द्वौ द्वौ ॥७८७॥**

अर्थ–दश आवर्त घोड़ोंके शरीरमें ध्रुव अर्थात अवश्य होते हैं उनको ध्रुवावर्त्त कहते हैं. उनमें एक आवर्त्त प्रपान ( ऊपरके ओंठके अधोभागमें ) और केशोंके नीचे, ललाटमें एक आवर्त्त होता है, रन्ध कुक्षि और नाभिका ( मध्यभाग उपरंध्र रंध्रसे ऊपर ) मस्तक और छाती इन बारहस्थानोंमें दो दो आवर्त होते हैं. इस भांति ये दश ध्रुवावर्त हैं ॥ ७८७ ॥

**षड्भिर्दन्तैः सिताभैर्भवति हयशिशुस्तैः कषायैर्द्विवर्षः संदेशैर्मध्यमान्त्यैः पतितसमुदितैस्त्र्यब्धिपंचाद्विको स्वः ॥ संदेशानुक्रमेण त्रिकपरिगणिताः कालिकापीतशुक्लाः काचामाक्षीकशंखावटचलनमतो दन्तपातं च विद्धि ॥ ७८८ ॥**

अर्थ–घोड़ेके मुखमें दो दाढ़ोंके बीचमें छः दांत होते हैं, उनसे अवस्था जाननेकी रीति लिखते हैं. यदि वे छः दन्त श्वेत हों तौ एक वर्षकी अवस्था होती है; कसैले रंगके हों तौ दो वर्षकी अवस्था होती है; दोनों दांतोंकी पंक्तियोंमें बीचके बराबर दो दो दांत संदंश कहाते हैं. संदंशोंके दोनों ओरका एक एक दांत अन्त्य कहाता है, संदंश गिरकर फिर जमे हों तो चार वर्षका और अंत्य गिर कर फिर जमे हों तौ पांच वर्षका घोड़ा होता है. संदंशोंके क्रमसे कालिका आदि रंगोंसे तीन तीन वर्ष बढ़ते हैं. अभिप्राय यह है कि, संदंशोंके ऊपर कालिका ( काली बिंदु ) हों तौ छः वर्षका मध्यमोंके ऊपर कालिका होंय तौ सात वर्षका और अन्त्योंके ऊपर कालिका होंय तौ आठ वर्षका घोड़ा होता है. इसी प्रकार संदंशोंपर पीले बिंदु हों तौ नौ वर्षका, मध्योंपर पीले बिंदु हों तौ दश वर्षका, अन्त्योंपर पीले बिन्दु हों तौ ग्यारह वर्षका होता है. संदंश आदिके

ऊपर श्वेत बिन्दु होनेसे क्रमसे बारह, तेरह, या चौदह वर्षका होता है· संदंश आदिके ऊपर काँचके समान बिन्दु होनेसे क्रमसे पन्द्रह, सोलह, या सत्रह वर्षका होता है· संदंश आदिके ऊपर शहदके रंगकेसे बिन्दु हों तो क्रमसे अठारह, उन्नीस, या बीस वर्षका होता है· संदंश आदिके ऊपर शंखके रंगके समान बिन्दु हों तो क्रमसे इकीस, बाईस, वा तेईस, वर्षका होता है· संदंश आदिमें, छिद्र हों तो क्रमसे चौवीस, पच्चीस वा छब्वीस, वर्षका होताहै· संदंश आदि हिलते हों तो क्रमसे सत्ताईस, अठाईस, उन्नीस, वा वर्षका जानो और संदंश आदि पाँतोंके गिरनेपर क्रमसे तीस, इकतीस, बत्तीस वर्षका घोड़ा जानो. घोड़ेका परमायु बत्तीस वर्षकाही है ॥ ७८८ ॥

## अथ हस्तिलक्षणम्-

मध्वामदन्ताः सुविभक्तदेहा न चोपदिग्धाश्च कृ-
शाः क्षमाश्च ॥ गात्रैः समैश्चापसमानवंशा वरा-
हतुल्यैर्जघनैश्च भद्राः ॥ ७८९ ॥

अर्थ–चार जातके हाथी होते हैं भद्र, मंद, मृग और संकीर्ण. अब इनके लक्षण क्रमसे कहते हैं जिन हाथियोंके दांत शहतके रंगके होंय शरीरके सब अंग भलीभांति विभक्त होय, न बहुत स्थूल और दुर्बल जिनका देह होय, क्षम अर्थात् कार्यके योग्य होयं, तुल्य अंगों करके युक्त होयँ, धनुषके आकार जिनका पृष्ठवंश ( पीठकी हड्डी)होय, और सूकरके तुल्य जिनके जघन ( कटिभाग ) होयँ अर्थात् वर्तुल होयँ वे हस्ति भद्रजातिके होते हैं ॥ ७८९ ॥

वक्षोऽथ कक्षावलयः श्लथाश्च लम्बोदरस्त्वग्बृह-
ती गलश्च ॥ स्थूला च कुक्षिः सह पेचकेन सैंही
च दृङ्मन्दतंगजस्य ॥ ७९० ॥

अर्थ-मंद जातिके हाथीकी छाती और मध्यभागकी बलि ढीली होती है; पेट लम्बा होता है; चर्म और कंठ स्थूल होते हैं; कुक्षि और पेंचक ( पुच्छ मूल ) भी स्थूल होता है, और सिंहके समान दृष्टि होती है. यह मंदका लक्षण है ॥ ७९० ॥

ह्रस्वाधरवालमेढ्रास्तन्वंघ्रिकण्ठद्विजह-
स्तकर्णाः ॥ स्थूलेक्षणाश्चेति यथोक्तचिह्नैः संकी-
र्णनागा व्यतिमिश्रचिह्नाः ॥ ७९१ ॥

अर्थ-मृगजातिके हाथियोंके नीचेका ओष्ठ, पुच्छके बाल और मेढ्र ( लिंग ) ये छोटे होते हैं; पेर, कंठ, दांत, शुंड और कर्णभी छोटे होते है; नेत्र बड़े होते हैं. ये मृगके लक्षण हैं, इन तीन जातीके हाथियोंके जो चिन्ह कहे वे सब चिन्ह जिन हाथियोंमें मिलते होयं वे संकीर्णजातिके हाथी होते हैं ॥ ७९१ ॥

पंचोन्नतिः सप्तमृगस्य दैर्घ्यमष्टौ च हस्ताः परि-
णाहमानम् ॥ एकद्विवृद्धावथ मन्दभद्रौ संकीर्ण-
नागोऽनियतप्रमाणः ॥ ७९२ ॥

अर्थ-मृग जातिके हाथीकी उंचाई पांच हाथ, पुच्छमूलसे लेकर मस्तकके कुंभतक लंबाई सात हाथ और परिणाह अर्थात् मध्यभागकी मोटाई आठ हाथ होती है. एक हाथ बढ़ानेसे मंदका और दो हाथ बढ़ानेसे भद्रका प्रमाण होताहै अर्थात् छः हाथ उंचाई, आठ हाथ लंबाई और नौ हाथ परिणाह मन्दजातिके हाथीका होता है, और सात हाथ उंचाई नौ हाथ लंबाई और दश हाथ परिणाह भद्रजातिके हाथीका होता है. संकीर्णजातिके हाथियोंकी उंचाई आदिका कुछ नियम नहीं है, वे अनियत प्रमाण होते हैं ॥ ७९२ ॥

भद्रस्य वर्णो हरितो मदस्य मन्दस्य हारिद्रकस-

न्निकाशः ॥ कृष्णो मदश्चाभिहितो मृगस्य संकीर्णनागस्य मदो विमिश्रः ॥ ७९३ ॥

अर्थ—भद्रजातिके हाथीका मद हरे रंगका होता है, मंदजातिके हाथीका मद हलदीके समान पीले रंगका और मृगजातिके हाथीका मद काले रंगका होता है; संकीर्णजातिके हाथीका मद मिश्रवर्ण होता है अर्थात् कई रंग उसमें होते हैं ॥ ७९३ ॥

ताम्रो ष्ठतालुवदनाः कलविङ्कनेत्राः स्निग्धोन्नताग्रदशनाः पृथुलायतास्याः ॥ चापोन्नतायतनिगूढनिमग्नवर्णास्तन्वेकरोमचितकूर्मसमानकुम्भाः ७९४॥ विस्तीर्णकर्णहनुनाभिललाटगुह्याः कूर्मोन्नतद्विनवविंशतिभिर्नखैश्च ॥ रेखात्रयोपचितवृत्तकराः सुवाला धन्या सुगन्धिमदपुष्करमारुताश्च ॥ ७९५ ॥

अर्थ—जिन हाथियोंके होंठ, तालु और मुख तांबेके समान लाल रंगके होयँ, नेत्र कलविंकपक्षी ( घरोंमें रहनेवाली चिड़िया ) के समान होयँ, स्निग्ध और ऊंचे अग्रभाग करके युक्त दन्त होयँ, विस्तीर्ण और लंबा मुख होय, धनुषके समान ऊंचा दीर्घ निगूढ़ और निमग्न पृष्ठवंश होय, कूर्मके समान कुंभ होय, जिन कुंभोंके रोमकूपोंमें एक २ सूक्ष्म रोम होयँ कर्ण, हनु, नाभि, ललाट, गुह्य, व लिंग विस्तीर्ण होयँ, कूर्मके समान मध्यसे ऊंचे अठारह अथवा बीस नख होयँ, खड़ी तीन रेखाओं करके युक्त और गोल सूँड़ होय, जिनकी मद और पुष्करका पवन अर्थात् शुंडसे जो पवन निकलै वह सुगंधयुक्त होय ऐसे हाथी उत्तम होते हैं ॥ ७९४ ॥ ७९५ ॥

दीर्घांगुलिरक्तपुष्कराः सजलाम्भोदनिनादबृंहिणः ॥ बृहदायतवृत्तकन्धरा धन्या भूमिपतेर्मतङ्गजाः ॥ ७९६ ॥

अर्थ–शुंडके अग्रको पुष्कर कहते हैं और पुष्करके आगे अंगुली होती है. जिन हाथियोंकी अंगुली दीर्घ होयँ, पुष्कर लालरंगका होय, जलसे भरे मेघके गर्जनेकी भांति जिनका बृंहित ( हाथीके गलका शब्द ) होय, बड़ी दीर्घ और गोल जिनकी ग्रीवा होय, ऐसे हाथी राजाके वास्ते शुभ होते हैं ॥ ७९६ ॥

निर्मदाभ्यधिकहीननखाङ्गान् कुब्जवामनकमेषविषाणान् ॥ दृश्यकोशफलपुष्करहीनान् श्यामनीलशबलाऽसिततालून् ॥ ७९७ ॥ स्वल्पवक्त्ररुहमत्कुणषण्ढान् हस्तिनी च गजलक्षणयुक्ताम् ॥ गर्भिणीं च नृपतिः परदेशं प्रापयेदतविरूपफलास्ते ॥ ७९८ ॥

अर्थ–जो हाथी कभी मस्त न होय, जिसके नख और अंग हीन अधिक हों, जो कुबड़ा हो, बौना हो, जिसके मेंढेके सींगके समान दांत हों, जिनके अंडकोश दीखते हों, और गोलीरहित हों, जिनके तालु श्यामरंगके नीलरंगके और चित्रविचित्र रंगके हों, जिनके दाँत छोटे हों, जो मत्कुण[1] हों, षण्ढ[2] हों इन सबको और जो हथनी हाथीके लक्षण करके युक्त हों और जो हथनी गर्भिणी होंय, इन सबको राजा अपने राज्यसे बाहर भेज देय ॥ ७९७ ॥ ७९८ ॥

## अथ काकशकुनम्–

प्राच्यानां दक्षिणतः शुभदः काकः करायिका वामा ॥ विपरीतमन्यदेशेष्ववधिर्लोकप्रसिद्ध्यैव ॥ ७९९ ॥

अर्थ–पूर्वदेशके निवासी मनुष्योंको काक दहिने और करायिका बायें होय तो शुभ होते हैं और दिशाके देशोंमें काक बायें और करायिका दहिने होय तो शुभ होते हैं ॥ ७९९ ॥

---

१ जिस हाथीकी लम्बाई चौड़ाई ठीक हो, ऊँचाई भी ठीक हो, परन्तु दांत न हों उस हाथीको मत्कुण कहते हैं । २ जिस हाथीके चलते समय पैर मिलते हों उसको षण्ढ कहते हैं ।

वैशाखे निरुपहते वृक्षे नीडः सुभिक्षशिवदाता ॥
निन्दितकण्टकिशुष्केष्वसुभिक्षभयानि तद्देशे ॥ ८०० ॥

अर्थ—वैशाख महीनेमें निरुपद्रव वृक्षके ऊपर काकका घोंसला होय तौ सुभिक्ष और कल्याण होताहै. निन्दित काठों करके युक्त और सूखे वृक्षपर काकका घोंसला होय उस देशमें दुर्भिक्ष और भय होते हैं ८००॥

नीडे प्राक्छाखायां शरदि भवेत्प्रथमवृष्टिरपरस्याम् ॥
याम्योत्तरयोर्मध्या प्रधानवृष्टिस्तरोरुपरि ॥ ८०१ ॥
शिखि दिशि मण्डलवृष्टिर्नैर्ऋत्यां शारदस्य निष्पत्तिः ॥
परिशेषयोः सुभिक्षं मूषकसम्पत्तु वायव्ये ॥ ८०२ ॥

अर्थ—वृक्षमें पूर्व दिशाकी शाखापर काकका घोंसला होय तौ आश्विन कार्त्तिकमें बर्षा होती है. पश्चिम शाखापर होय तौ श्रावण भाद्रपदमें वर्षा होती है. दक्षिण अथवा उत्तरकी शाखापर होय तौ भाद्रपद आश्विनमें वर्षा होती है. वृक्षके ऊपर मुख्य शाखामें काकका घोंसला होय तौ चारों महीने वर्षा होती है. अग्नि कोणकी शाखाके ऊपर होय तौ खंडवृष्टि होती है, नैर्ऋत्य कोणकी शाखापर होय तौ शरदृतुकी खेती अच्छी होती है. वायव्य और ईशान कोणकी शाखापर काकका घोंसला होय तौ सुभिक्ष होता है. और वायव्य कोणमें घोंसला होय तौ मूषकभी बहुत होते हैं ॥ ८०१ ॥ ८०२ ॥

शरदर्भगुल्मवल्लीधान्यप्रासादगेहनिम्नेषु ॥
शून्यो भवति स देशश्चौरानावृष्टिरोगार्त्तः ॥ ८०३ ॥

अर्थ—शर, कुश, गुल्म, बेल, धान्य, देवप्रासाद ( मंदीर ) घर और गढ़ेमें जहाँ काकका घोंसला होय, वह देश चोर अवृष्टि और रोगोंकरके पीडित हुआ शून्य हो जाता है ॥ ८०३ ॥

द्वित्रिचतुःशावत्वं सुभिक्षदं पञ्चभिर्नृपान्यत्वम् ॥

अण्डावकिरणमेकाण्डताऽप्रसूतिश्च न शिवाय ॥ ८०४ ॥

अर्थ—काकके दो अथवा तीन बच्चे होंय; तौ सुभिक्ष होय पांच बच्चे होंय तौ दूसरा राजा होय. काक अपने अंडोंको फेंक देवै या एकही अंडा देवै अथवा प्रसवहीन होय तौ शुभ नहीं होता है ॥ ८०४ ॥

चोरकवर्णैश्चौराश्चित्रैर्मृत्युः सितैश्च वह्निभयम् ॥
विकलैर्दुर्भिक्षभयं काकानां निर्दिशेच्छिशुभिः ॥ ८०५ ॥

अर्थ—काकके बच्चे चोरनामक गंधद्रव्यके समान रंगवाले होंय तौ चोर-भय होता है; चित्रवर्ण होयँ तौ मृत्यु होता है; श्वेत रंग होयँ तौ अग्नि भय होता है; और काकोंके बच्चे किसी एक अंगसे हीन होयँ तौ दुर्भिक्षका भय कहना चाहिये ॥ ८०५ ॥

अनिमित्तसंहतैर्ग्राममध्यगैः क्षुद्भयं च वै शब्दवद्भिः ॥
रोधश्चक्राकारैरभिघातो वर्गवर्गस्थैः ॥ ८०६ ॥

अर्थ—बिना कारण ग्रामके मध्यमें इकट्ठे होकर काक शब्द करैं तौ दुर्भिक्षभय होता है. चक्रके आकार काक स्थित होंय तौ घेरा जाता है, और कई स्थानोंमें समूह समूह होकर काक बैठें तौ उपद्रव होताहै ॥ ८०६ ॥

अभयाश्च तुण्डपक्षैश्चरणविघातैर्जनानभिभवन्तः ॥
कुर्वन्ति शत्रुवृद्धिं निशि विचरन्तो जनविनाशम् ८०७

अर्थ—काक निर्भय होकर अपने चोंचसे, परोंसे और पंजोंके मारनेसे मनुष्योंका पराभव करैं तो शत्रुओंकी वृद्धि होती है, रात्रिके समय काक विचरैं तो मनुष्योंका नाश करते हैं ॥ ८०७ ॥

सव्येन खे भ्रमद्भिः स्वभयं विपरीतमण्डलैश्च परात् ॥
अत्याकुलं भ्रमद्भिर्वातोद्भ्रामो भवति काकैः ॥ ८०८ ॥

अर्थ—आकाशमें दक्षिण क्रमसे अर्थात् पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर,

इस क्रमसे काक भ्रमण करैं तो अपनेहीसे भय होता है; वाम क्रमसे भ्रमण करैं तो शत्रुसे भय होता है; और बहुत व्याकुल होकर काक आकाशमें भ्रमण करैं तो अनवस्थिति होती है ॥ ८०८ ॥

ऊर्ध्वमुखाश्चलपक्षाः पथि भयदाः क्षुद्भयाय धान्यमुषः ॥
सेनाङ्गस्था युद्धं परिमोपञ्चान्यभृतपक्षाः ॥ ८०९ ॥

अर्थ-काक ऊपरको मुख किये, पक्षोंको हिलाते होयँ तौ मार्गमें भय होता है; अन्नको काक चोरकर लेजावैं तौ दुर्भिक्ष होता है; सेनाके अंगोंपर काक बैठे तौ युद्ध होता है; कोकिलाके तुल्य अतिकृष्ण काकोंके पक्ष होयं तौ चोरी होती है ॥ ८०९ ॥

भस्मास्थिकेशपत्राणि विन्यसन् पतिवधाय शय्यायाम् ॥
मणिकुसुमाद्यवहनने सुतस्य जन्मान्यथाङ्गनायाश्च ८१०

अर्थ-शय्याके ऊपर भस्म, हड्डी, केश, अथवा पत्ते लाकर काक रक्खैं तौ शय्याके स्वामीको मृत्यु होती है; मणि, पुष्प, फल, आदि करके शय्याको काक ताड़न करैं तौ पुत्रजन्म होय और किसी वस्तुसे ताड़न करै तौ कन्याका जन्म होता है ॥ ८१० ॥

पूर्णाननेऽर्थलाभः सिकताधान्यार्द्रमृत्कुसुमपूर्वैः ॥
भयदो जनसंवासाद्यदि भाण्डान्यपनयेत्काकः ॥ ८११ ॥

अर्थ-रेत, धान, गीलीमृत्तिका, पुष्प, फल, आदिसे मुख भर कर काक आवैं तौ धनका लाभ होता है; मनुष्योंके समीपसे काक कुछ भांड ( वस्तु ) उठा ले जावैं तौ भय होता है ॥ ८११ ॥

वाहनशस्त्रोपानच्छत्रच्छायाङ्गकुट्टेन मरणम् ॥
तत्पूजायां पूजा विष्ठाकरणेऽन्नसम्प्राप्तिः ॥ ८१२ ॥

अर्थ-वाहन, शस्त्र, जूता, छत्र, शरीरकी छाया, और अंग इनको काक कूटैं तौ मृत्यु होता है. इनकी पूजा करै अर्थात् इनके ऊपर पुष्प

आदि डालैं तो पूजा होती है; और इनके ऊपर बीट करैं तौ अन्नका लाभ होता है॥ ८१२॥

**यद्द्रव्यमुपनयेत्तस्य लब्धिरपहरति चेत्प्रणाशः स्यात्॥**
**पीतद्रव्ये कनकं वस्त्रं कार्पासिके सिते रूप्यम्॥ ८१३॥**

अर्थ-जो द्रव्य काक ले आवैं उसका लाभ होता है; और जो द्रव्य उठा ले जावै उसका नाश होता है. पीत वस्तुसे सुवर्ण, कपाससे वस्त्र और श्वेत वस्तुसे चाँदीका लाभ और हानि जानै॥ ८१३॥

**सक्षीरार्जुनवंजुलकूलद्वयपुलिनगा रुवन्तश्च॥**
**प्रावृषि वृष्टिं दुर्दिनमन्तौ स्नाताश्च पांशुजलैः॥८१४॥**

अर्थ-जो काक क्षीरवृक्षपर, अर्जुनवृक्षपर, अशोकवृक्षपर, अथवा नदीके दोनों ओरके तटोंपर बैठकर शब्द करैं तो वर्षाऋतुमें वर्षा होती है, और ऋतुमें शब्द करैं तौ बादल होते हैं. इसी प्रकार धूलिसे अथवा जलसे काक स्नान करैं तौ वर्षाऋतुमें वर्षा और अन्य ऋतुमें दुर्दिन होता है॥ ८१४॥

**दारुणनादस्तरुकोटरोपगो वायसो महाभयदः॥**
**सलिलमवलोक्य विरुवन् वृष्टिकरोऽब्दानुरावी वा॥८१५॥**

अर्थ-जो काक वृक्षके कोटरमें बैठ क्रूर शब्द बोलैं तौ महाभय होता है. जलको देख कर काक बोलैं तो अथवा बादल गर्जनेके पीछे काक बोलैं तौ वर्षा होती है॥ ८१५॥

**दीप्तो द्विगुणे विटपे विकुट्टयन् वह्निकृद्विधुतपक्षः॥**
**रक्तद्रव्यं दग्धं तृणकाष्ठं वा गृहे विदधत्॥ ८१६॥**

अर्थ-जो काक लता वितानके ऊपर बैठ सूर्यकी ओर मुखकर दुःखित हो चोंचसे कूटता हुआ पंख हिलावै तौ अग्निका भय होता है,

लाल रंगकी वस्तु, जली वस्तु, तृण, अथवा काष्ठको लाकर काक घरमें रक्खै तौभी अग्निका भय होता है ॥ ८१६ ॥

ऐन्द्रादिदिगवलोकी सूर्याभिमुखो रुवन् गृहे गृहिणः ॥
राजभयचोरबन्धनकलहाः स्युः पशुभयं चेति ॥८१७॥

अर्थ-जो काक घरमें सूर्यकी ओर मुख कर पूर्व आदि चार दिशाओंको देखता हुआ बोले तौ घरके स्वामीको क्रमसे राजभय, चोरभय, बंधन और कलह होते हैं, और चारों विदिशाओंकी ओर देखकर बोले तौ पशुओंको भय होता है ॥ ८१७ ॥

शान्तामैन्द्रीमवलोकयन् रुयाद्राजपुरुषमित्राप्तिः ॥
भवति च सुवर्णलब्धिः शाल्यन्नगुडाशनाप्तिश्च ॥८१८॥

अर्थ-शान्ति पूर्वदिशाको देखता हुआ काक बोलै तौ राजपुरुष और मित्रका आगमन होता है; सुवर्णका लाभ होता है; शालिका भात और गुड़युक्त भोजनभी मिलता है ॥ ८१८ ॥

आग्नेय्यामनली जीविकयुवतिप्रवरधातुलाभश्च ॥
याम्ये माषकुलत्था भोज्यं गान्धर्विकैर्योगः ॥८१९॥
नैर्ऋत्यां दूताश्वोपकरणदधितैलपललभोज्याप्तिः ॥
वारुण्यां मांससुरासवधान्यसमुद्ररत्नाप्तिः ॥ ८२० ॥
मारुत्यां शस्त्रायुधसरोजवल्लीफलाशनाप्तिश्च ॥
सौम्यायां परमान्नाशनं तुरङ्गाम्बरप्राप्तिः ॥ ८२१ ॥
ऐशान्यां संप्राप्तिर्घृतपूर्णानां भवेदनडुहश्च ॥
एवं फलं गृहपतेर्गृहपृष्ठसमाश्रिते भवति ॥ ८२२ ॥

अर्थ-शान्ति अग्निकोणको देखता हुआ काक बोलै तौ अग्निसे जीविका करनेवाले सुनार आदि और तरुणस्त्रीसे समागम और उत्तम धातुका लाभ होता है; शांत दक्षिणदिशाको देखता हुआ काक बोले

तौ उड़द् और कुलत्थ भोजनको मिलते हैं, और गानेवालोंसे समागम होता है ॥ ८१९ ॥ शान्त नैर्ऋत्यकोणको देखता हुआ काक बोलै तौ दूत, घोड़ेके उपकरण, दही, तेल, मांस, और भोजन करनेके पदार्थोंका लाभ होता है; शान्त पश्चिमदिशाको देखता हुआ काक बोलै तौ मांस, मद्य, आसव, धान्य और समुद्रमें उत्पन्न हुए रत्नोंकी प्राप्ति होती है ॥ ८२० ॥ शान्त वायव्यकोणको देखता हुआ काक बोलै तौ लोह, आयुध, सरोवरमें उत्पन्न हुए द्रव्य बेल, फल, और भोजनकी प्राप्ति होती है; शान्त उत्तर दिशाको देखता हुआ काक बोले तौ खीर भोजन मिले, घोड़े और वस्त्रकी प्राप्ति होय ॥ ८२१ ॥ शान्त ईशानकोणको देखता हुआ काक बोलै तौ घृतप्लुत भोजन मिलें और एक बैलका लाभभी होय, ये सब फल घरके ऊपर बैठकर कउआ बोलै तब उस घरके स्वामीको होते हैं ॥ ८२२ ॥

**गमने कर्णसमश्चेत् क्षेमाय न कार्यसिद्धये भवति ॥**
**अभिमुखमुपैति यातुर्विरुवन् विनिवर्त्तयेद्यात्राम् ॥८२३॥**

अर्थ–यात्राके समय यात्रा करनेवाले पुरुषके कानके बराबर होकर काक उड़जाय न तौ कल्याण करता है और न कार्यसिद्धि होती है; और शब्द करताहुआ काक यात्रा करनेवालेके सन्मुख आवै तौ यात्रासे लौटाता है ॥ ८२३ ॥

**वामे वा शित्वादौ दक्षिणपार्श्वेऽनुवाशते पातुः ॥**
**अर्थापहारकारी तद्विपरितोऽर्थसिद्धिकरः ॥ ८२४ ॥**

अर्थ–यात्रा करनेवालेके वामभागमें पहिले शब्द करके पीछे काक दक्षिण भागमें शब्द करै तौ धनको हरता है और पहिले दहिने बोल कर पीछे बायें बोलै तौ धनलाभ होता है ॥ ८२४ ॥

**यदि वाम एव विरुयान्मुहुर्मुहुर्यायिनोऽनुलोमगतिः ॥**
**अर्थस्य भवति सिद्धयै प्राच्यानां दक्षिणश्चैवम् ॥८२५॥**

करनेवालेके वामभागमेंही काक बोलै और अनुलोमगति होय अर्थात् यात्रा करनेवालेके साथ साथ चलै तौ धनका लाभ करता है; पूर्वदिशाके निवासी मनुष्योंको दहिने काक बोलै और अनुलोमगति होय तौ धनलाभ करता है ॥ ८२५ ॥

वामः प्रतिलोमगतिर्वाशन् गमनस्य विघ्नकृद्भवति ॥
तत्रस्थस्यैव फलं कथयति यद्वांछितं गमने ॥ ८२६ ॥

अर्थ—यात्रा करनेवालेके बामभागमें शब्द करताहुआ काक प्रतिलोमगति होय अर्थात् यात्रा करनेवालेके सन्मुख आवै तौ यात्रामें विघ्न करताहै; वह काक यह सूचना करताहै कि, यात्रा करके जो फल चाहताहै वह घर बैठेही होजायगा ॥ ८२६ ॥

दक्षिणविरुतं कृत्वा वामे विरुयाद्यथेप्सितावाप्तिः ॥
प्रतिवाश्य पुरोयायाद्द्रुतमग्रेऽर्थागमोऽतिमहान् ८२७॥

अर्थ—यात्रा करनेवालेके दक्षिणभागमें शब्द करके जो काक वामभागमें शब्द करै तौ मनमाना कार्य सिद्ध होय. यात्रा करनेवालेके पीछे शब्द करके जो काक शीघ्र आगे चलाजावे तो यात्रा करनेवालेको आगे बहुत धन मिलताहै ॥ ८२७ ॥

प्रतिवाश्य पृष्ठतो दक्षिणेन यायाद्द्रुतं क्षतजकर्त्ता ॥
एकचरणोऽर्कमीक्षन् विरुवंश्च पुरो रुधिरहेतुः ॥८२८॥

अर्थ—यात्रा करनेवालेके पीछे काक शब्द करके दहिनी ओर होकर शीघ्र चलाजाय तौ यात्रा करनेवालेके शरीरसे रुधिर निकलै. जो काक एक पैरसे स्थित हो, सूर्यको देखता हुआ शब्द करै तौभी यात्रा करनेवालेके शरीरसे आगे रुधिर निकलताहै ॥ ८२८ ॥

दृष्ट्वाऽर्कमेकपादस्तुण्डेन लिखेद्यदा स्वपिच्छानि ॥
परतो जनस्य महता वधमभिधत्ते तदाबलिभुक् ॥८२९॥

अर्थ—जो काक सूर्यकी ओर देख एक पैरके ऊपर स्थित होकर चोंचसे अपने पंखोंको लिखै तौ आगे किसी प्रधान मनुष्यके बधकी सूचना करताहै ॥ ८२९ ॥

सस्योपेते क्षेत्रे विरुवति शान्ते स सस्यभूलब्धिः ॥
आकुलचेष्टो विरुवन् सीमान्ते क्लेशकृद्यातुः ॥ ८३० ॥

अर्थ—खेतीयुक्त खेतमें काक शांत होकर बोलै तौ खेतीसहित भूमिका लाभ होताहै. ग्रामकी सीमाके अन्तमें स्थित होकर जो काक व्याकुल होकर शब्द करैं तौ यात्रा करनेवालेके होता है ॥ ८३० ॥

सुस्निग्धपत्रपल्लवसुकुमफलानम्रसुरभिमधुरेषु ॥
सक्षीराऽव्रणसुस्थितमनोज्ञवृक्षेषु चार्थकरः ॥ ८३१ ॥

अर्थ—जो काक सुन्दर स्निग्ध वृक्षोंके ऊपर और पत्र, पल्लव, पुष्प और फलोंसे झुँके हुए वृक्षोंके ऊपर सुगन्धयुक्त मधुर फलोंवाले क्षीरयुक्त व्रणरहित भलीभांति स्थित और मनोहर वृक्षोंके ऊपर बैठा होय तौ अर्थसिद्धि करता है ॥ ८३१ ॥

निष्पन्नसस्यशाद्वलभुवनप्रासादहर्म्यहरितेषु ॥
धन्योच्छ्रयमङ्गल्येषु चैव विरुवन् धनागमदः ॥८३२॥

अर्थ—पकी हुई खेती हरी दूर्बाकरकेयुक्त स्थल,घर, देवप्रासाद,(मन्दिर), हर्म्य(महल),हरे वर्णके स्थान, धन्य (शुभस्थान),ऊंचास्थान और मंगल स्थान इनमेंसे किसी एक स्थानपर बैठकर काक बोलैं तौ धनकी प्राप्ति करता है ॥ ८३२ ॥

गोपुच्छस्थे वल्मीकगेऽथवा दर्शनं भुजङ्गस्य ॥
सद्यो ज्वरो महिषगे विरुवति गुल्मं फलं स्वल्पम् ८३३॥

अर्थ—गौकी पूंछपर अथवा वल्मीकपर बैठकर काक बोलै तौ सर्प-

का दर्शन होताहै. महिषके ऊपर बैठकर काक बोले तो उपर चढ़ता है; गुल्म ( एक मूलके साखा समूह ) पर बैठकर काक बोलै तो शुभ और अशुभ फल थोड़ा होता है ॥ ८३३ ॥

कार्यस्य व्याघातस्तृणकूटे वागमेऽम्बुसंस्थे वा ॥
उध्र्वाग्निप्लुष्टेऽशनिहते च काके वधो भवति ॥८३४॥

अर्थ-यात्रा करनेवालेके वामभागमें तृणोंके ढेरपर अथवा जलपर बैठकर काक बोले तो कार्यका नाश होताहै. ऊपरसे अग्नि करके जले हुए अथवा बिजलीसे मारेहुए वृक्षपर काक बैठकर बोले तो मृत्यु होती है ॥ ८३४ ॥

कण्टकिमिश्रे सौम्ये सिद्धिः कार्यस्य भवति कलहश्च ॥
कण्टकिनि भवति कलहो वल्लीपरिवेष्टिते बन्धः ॥८३५॥

अर्थ-कांटेवाले वृक्षोंकरके युक्त उत्तम वृक्षपर काक बैठा होय तो कार्यसिद्धि होती है, और कलहभी होताहै; कांटोंकरके युक्त वृक्षपर काक बैठा होय तो कलह होताहै; जिस वृक्षमें बेल लिपट रही होय उसपर बैठकर काक बोलै तो बंधन होताहै ॥ ८३५ ॥

छिन्नाग्रेऽगच्छेदः कलहः शुष्कद्रुमस्थिते ध्वांक्षे ॥
पुरतश्च पृष्ठतो वा गोमयसंस्थे धनप्राप्तिः ॥ ८३६ ॥

अर्थ-ऊपरसे कटेहुए वृक्षपर काक होय तो यात्रा करनेवालेको अंग कटजाय. सूखे वृक्षपर काक बैठा होय तो कलह होताहै. यात्रा करनेवालेके आगे अथवा पीछे गोदपर काक बैठा होय तो धनकी प्राप्ति होती है ॥ ८३६ ॥

मृतपुरुषांऽगावयवास्थितोऽभिवाशन् करोतिमृत्युभयम् ॥
भंजन्नस्थि च चंच्वा यदि वा शत्यस्थिभङ्गाय ॥८३७॥

अर्थ–मरेहुए पुरुषके शरीरपर अथवा हाथ पैर आदि किसी अवयवपर बैठकर काक यात्रा करनेवालेके सन्मुख शब्द करै तौ मृत्युका भय होता है; चोचसे हड्डीको फोड़ता हुआ काक शब्द करै तौ यात्रा करनेवालेकी हड्डी टूटती हैं ॥ ८३७ ॥

रज्ज्वस्थिकाष्ठकण्टकिनिःसारशिरोरुहानने रुवति ॥
भुजगगददंष्ट्रितस्करशस्त्राऽग्निभयान्यनुक्रमशः ॥८३८॥

अर्थ–जो काक रस्सी, हड्डी, काष्ठ, काँटोवाली वस्तु, निःसारवस्तु, केश, और मुख, इनपर बैठकर शब्द करै तौ क्रमसे सर्पका, रोगका, दाढ़वाले जीव सूकर आदिका, चोरका, शस्त्रका, और अग्निका भय यात्रा करनेवालेको होता है ॥ ८३८ ॥

सितकुसुमाऽशुचिमांसाननेऽर्थसिद्धिर्यथेप्सिता यातुः॥
पक्षौ धुन्वत्यूर्ध्वानने च विघ्नं मुहुः क्वणति ॥ ८३९ ॥

अर्थ–श्वेतपुष्प विष्ठा आदि अमेध्य वस्तु अथवा मांस मुखमें लेकर काक बोलै तौ यात्रा करनेवालेका मनमाना कार्य सिद्ध होता है. पंखोंको हिलाता और ऊपरको मुख किये बारबार काक बोले तौ यात्रामें विघ्न करता है ॥ ८३९ ॥

यदि शृंखलां वरत्रां वल्लीं वादाय वाऽऽशते बन्धः ॥
पाषाणस्थे च भयं क्लिष्टापूर्वाऽध्विकयुतिश्च ॥८४०॥

अर्थ–सांकल, व चमड़ेकी बद्धी अथवा बेलको ग्रहण करके काक बोलै तौ यात्रा करनेवालेको बंधन होता है. पाषाणके ऊपर स्थित होकर काक बोलै तौ भय और क्लेशयुक्त औ अपूर्व पांथ ( मुसाफिर ) से समागम होय ॥ ८४० ॥

अन्योन्यभक्ष्यसंक्रामितानने तुष्टिरुत्तमा भवति ॥
विज्ञेयः स्त्रीलाभो दम्पत्योर्वाशतोर्युगपत ॥ ८४१ ॥

अर्थ—दो काक परस्पर भोजन मुखमें देवें तो यात्रा करनेवालेके उत्तम संतोष होताहै; स्त्री और पुरुष दोनों काक इकट्ठेही बोलै तो यात्रा करनेवालेको स्त्रीका लाभ होगा ॥ ८४१ ॥

**प्रमदाशिर उपगतपूर्णकुम्भसंस्थेऽङ्गनार्थसंप्राप्तिः ॥**
**घटकुट्टने सुतविपद् घटोपदहनेऽन्नसंप्राप्तिः ॥ ८४२ ॥**

अर्थ—स्त्रीके शिरके ऊपर जलसे भरा घट होय उसपर बैठकर काक शब्द करै तो स्त्रीका और धनका लाभ होताहै. घड़को चोंचसे कूटै तो पुत्रमरण होय, और घटके ऊपर काक विष्ठा करै तो अन्नका लाभ होय ॥ ८४२ ॥

**स्कन्धावारादीनां निवेशसमये रुवंश्चलत्पक्षः ॥**
**सूचयतेऽन्यस्थानं निश्चलपक्षस्तु भयमात्रम् ॥ ८४३ ॥**

अर्थ—लशकर आदिके प्रवेशके समय पंख हिलाताहुआ काक शब्द करै तौ यह सूचना करताहै कि, और स्थानपर जाकर रहना होगा, और पंख बिना हिलाये शब्द करै तो केवल भयको सूचना करताहै ॥ ८४३ ॥

**प्रविशद्भिः सैन्यादीन् सगृध्रकङ्कैर्विनामिषं ध्वांक्षैः ॥**
**अविरुद्धैस्तैः प्रीतिर्द्विषता युद्धं विरुद्धैश्च ॥ ८४४ ॥**

अर्थ—सेना नगर ग्राम आदिमें गीध और कंकपक्षियोंकरके सहित काक मांस विना लिये प्रवेश करैं और आपसमें विरोध न करैं तौ शत्रुके साथ प्रीति होजाय और ये काक आदि पक्षी परस्पर विरोध करैं तौ शत्रुसे युद्ध होय ॥ ८४४ ॥

**बन्धः सूकरसंस्थे पङ्काक्ते सूकरे द्विकेऽर्थाप्तिः ॥**
**क्षेमं खरोष्ट्रसंस्थे केचित् प्राहुर्वधं तु खरे ॥ ८४५ ॥**

अर्थ—सूकरके ऊपर काक बैठा होय तौ यात्रा करनेवालेका बंधन होय; कर्दमसे लिपेहुए सूकरपर काक बैठा होय तौ धनका लाभ होय; गर्दभ अथवा ऊंटपर काक बैठा होय तौ कल्याण होय; कोई आचार्य कहते हैं कि—गर्दभपर काक बैठा होय तौ यात्रा करनेवालेका मृत्यु होताहै ॥ ८४५ ॥

**वाहनलाभोऽश्वगते विरुवत्यनुयायिनि क्षतजपातः ॥**
**अन्येऽप्यनुव्रजन्तो यातारं काकवद्विहगाः ॥ ८४६ ॥**

अर्थ—घोड़ेपर बैठकर काक शब्द करै तौ घोड़ेआदि वाहनका लाभ होताहै; यात्रा करनेवालेके पीछे चलताहुआ काक बोलै तौ रुधिरका पात होय; यात्रा करनेवालेके पीछे औरभी कोई पक्षी गमन करैं तौ उनका फल काकके तुल्य जानना चाहिये ॥ ८४६ ॥

**द्वात्रिंशत्प्रविभक्ते दिक्चक्रे यद्यथा समुद्दिष्टम् ॥**
**तत्तत्तथा विधेयं गुणदोषफलं यियासूनाम् ॥ ८४७**

अर्थ—दिशाओंके बत्तीस भाग कर जो फल जैसे पहिले कहे वे शुभ अशुभ फल वैसेही यात्रा करनेवालेंको कहने चाहिये ॥८४७ ॥

**का इति काकस्य रुतं स्वनिलयसंस्थस्य निष्फलं प्रोक्तम् ॥ कव इति चात्मप्रीत्यै क इति रुते स्निग्धमित्राप्तिः ॥ ८४८ ॥ कर इति कलहं कुरु कुरु च हर्षमथ कटकवेति दधिभक्तम् ॥ केकविरुतं कुकु वा धनलाभं यायिनः प्राह ॥ ८४९ ॥**

अर्थ—अपने घोंसलेमें बैठा काक का ऐसा शब्द बोलै वह शब्द निष्फल होताहै. कव ऐसा शब्द अपनी प्रीतिके लिये होताहै. क ऐसा शब्द बोलै तौ प्यारे मित्रकी प्राप्ति होती है. कर ऐसा शब्द बोलै तौ कलह होताहै, कुरु कुरु ऐसा शब्द बोलै तौ हर्ष होताहै. कट कट ऐसा शब्द बोलै तौ द[illegible]भात भोजन मिलाताहै. केकव ऐसा शब्द अथवा

कु ऐसा शब्द बोले तो यात्रा करनेवालेको धनका लाभ सूचना
है ॥ ८४८ ॥ ८४९ ॥

**खरे खरे पथिकागममाह कखाखेतियायिनो मृत्युम् ॥**
**गमनप्रतिषेधकमा खलखलसद्योऽभिवर्षाय ॥ ८५०**

अर्थ—खरे खरे ऐसा शब्द काक बोले तो विदेशमें गयाहुआ पथि
आवे; कखाख ऐसा शब्द बोले तो यात्रा करनेवालेकी मृत्यु होय. अ
ऐसा शब्द काक बोले तो यात्रामें विघ्न करताहै, खल खल ऐसा श
करे तो उसी दिन वर्षा होय ॥ ८५० ॥

**काकेति विघातं काकटीति चाहारदूषणं प्राह ॥**
**प्रीत्यास्पदं कवकवेतिबन्धमेवकगाकुरिति ॥ ८५१ ॥**

अर्थ—का का ऐसा शब्द काक बोले तो यात्रा करनेवालेका विघा
श ) होय. काकटी ऐसा शब्द काक बोले तो यह सूचना करता
भोजनमें विषआदि मिलाहै; कव कव ऐसा शब्द बोले तो किसीके
साथ प्रीति होती है, और कगाकु ऐसा शब्द काक बोले तो यात्रा कर
नेवालेका बंधन होय ॥ ८५१ ॥

**करको विरुते वर्षं गुडनत्रासाय वडिति वस्त्राप्तिः ॥**
**कलयेति च संयोगः शूद्रस्य ब्राह्मणैः साकम् ॥ ८५२ ॥**

अर्थ—करको ऐसा शब्द काक बोले तो वर्षा होय. गुड़न ऐसा शब्द
काक बोले तो भय होय. वड़ ऐसा शब्द काक बोले तो वस्त्रका लाभ
होय; कालय ऐसा शब्द काक बोले तो शूद्रका ब्राह्मणोंके साथ समा-
गम होय ॥ ८५२ ॥

**फडिति फलाप्तिः कडवाहिदर्शनं टडिति प्रहाराः स्युः ॥**
**स्त्रीलाभः स्त्रीतिरुते गडिति गवां पुडितिपुष्पाणाम् ॥ ८५३ ॥**

अर्थ—फड़ ऐसा शब्द काक बोले तो फलोंकी प्राप्ति होय और फ-